ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ७ अंक १० जून **2014**

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*

चंदा	
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**

फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥
सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥
कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥
मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥ जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥
जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥
कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥
नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥ *(पन्ना ४३)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी सिरीराग में उच्चारण किए गए इस शब्द में मानव शरीर की नाशमानता एवं प्रभु-नाम की महिमा का गायन करते हुए फरमान कर रहे हैं कि मनुष्य हर रोज़ इस शरीर का पालन-पोषण करता है, जबकि ज़िंदगी के वास्तविक उद्देश्य को समझे बिना यह नासमझ एवं मूर्ख ही रहता है। इसे उस परमात्मा की कभी याद नहीं आती जिसने इसे इस धरा पर भेजा है और अंत में इस शरीर को बेबाण (बीयाबान, शमशान) में फेंक दिया जाता है। हे मनुष्य ! तू सतिगुरु के साथ चित्त को जोड़ और प्रभु-नाम का सिमरन करता हुआ सदा के लिए आत्मिक आनंद की प्राप्ति करता रह। हे मनुष्य ! तू इस संसार में प्रभु-नाम-सिमरन की कमाई करने आया है। तू कौन-से ख्वारी (ज़िल्लत) वाले काम में व्यस्त है ? तेरी रात्रि रूपी ज़िंदगी खत्म होती जा रही है।

गुरु जी का 'रहाउ' के बाद वाली पंक्तियों में फरमान है कि पशु कलोल करते हैं, पक्षी कलोल करते हैं, उनको काल नज़र नहीं आता। मनुष्य पशु-पक्षियों के साथ में शामिल हो गया है क्योंकि इसे भी काल याद नहीं आता, माया के जाल में ही फंसा हुआ है। जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम की संभाल कर रखी है अर्थात् सदा सिमरन करता है वो ही माया से मुक्त नज़र आता है। हे मनुष्य ! जिस घर (लोक) को छोड़कर चले जाना है वो तुझे प्यारा लग रहा है और जहां (परलोक) जाकर तुझे सदा के लिए निवास (मुक्ति) मिल सकता है उसे पाने की तेरे मन में ज़रा भी चिंता नहीं है। इस सांसारिक माया में वही जन मुक्त होकर निकल पाते हैं जो सच्चे गुरु की शरण में आ जाते हैं। यह माया का मोह इतना प्रबल है कि इसमें से सच्चे गुरु के बिना कोई अन्य बचाने वाला दिखाई नहीं देता। पंचम पातशाह अंतिम पंक्तियों में कह रहे हैं कि मैं तो सारी सृष्टि में ढूंढकर सच्चे गुरु की शरण में आ गया हूं। ऐसे सच्चे गुरु ने मुझे संसार की माया के मोह रूपी समुद्र में डूबते हुए को बाहर निकाल लिया है अर्थात् मुझे मुक्तावस्था का मार्ग दिखा दिया है।

सच का दीपक

भारत को कई सदियों तक हमलावरों ने लूट का केंद्र बनाए रखा। इन विदेशी हमलावरों ने लंबा समय भारत पर राज्य कर यहां के असल वाशिंदों को गुलामी की ज़िल्लत भरी ज़िंदगी जीने का आदी बना दिया। हाकिमों के जुल्म को चुपचाप सहन कर जाना भारतीयों का स्वभाव ही बन गया था। सदियों के बाद इस जुल्म के विरुद्ध एक ज़ोरदार आवाज़ बुलंद हुई जिसने ज़ालिम हाकिमों की जड़ें हिलाने से लेकर जुल्म का नाश करने तक की भूमिका अदा की। इस बुलंद आवाज़ के मालिक थे धन्य श्री गुरु नानक देव जी। गुरु जी ने लोधी व मुगल शासकों को सच की तेग की चमक से घेरा जिससे उनका गरूर तार-तार हो गया। गुरु जी ने ज़ालिमों की लोटू व मारू भूमिका को शरेआम ललकारा। मुगल राज्य के संस्थापक ज़हीर-उ-दीन बाबर ने सच की आवाज़ को दबाने के लिए श्री गुरु नानक देव जी को कैद कर लिया। अंधेरे ने रौशनी को कब तक छुपाए रखना था? आखिर उसे गुरु जी की अज़मत के समक्ष सर झुकाना पड़ा। सच की विरासत के अगले पैरोकार श्री गुरु अंगद देव जी की हजूरी में हुमायूं सिजदा करने के लिए उस समय आया जब वह राज्य-सत्ता से महरूम हो गया था। उसके मन की कालिमा अभी मिटी न थी। हउमै-अहंकार अभी भी उसके मन के सिंहासन पर राज्य कर रहा था। उसने रौशनी को चीरने के लिए तलवार के मुट्ठे को हाथ डाल लिया था, किंतु सच की बेखौफ आवाज़ सुनकर वो गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। झूठ को सच का प्रताप झेलना कठिन हो गया।

हमायूं का पुत्र तथा वारिस अकबर अपने पूर्वजों के मुकाबले कुछ सूझवान निकला। इसके राज्य-काल के समय बाबे (श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी) के तथा बाबर (बाबर के उत्तराधिकारी) के संबंध कुछ सुखपूर्वक रहे, जिस कारण सच को फलने-फूलने का मौका मिला। इस समय के दौरान भी राज्य-शक्ति के कुछ मालिक काज़ी, मुल्लां-मौलाणे तथा अहिलकारों ने सच को दबाने की नीच हरकतें जारी रखीं परंतु उनकी एक न चली। इसी समय के दौरान श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर का निर्माण करवाकर उसके अंदर सच के सूर्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश कर दिया ताकि रहती दुनिया तक जनता गुरबाणी से अगुआई प्राप्त करती रहे। मुगल बादशाह जहांगीर के गद्दी पर बैठते ही शैतान की आत्मा फिर जाग उठी। श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठाकर अत्यंत यातनायें देकर शहीद कर दिया गया। गुरु जी की शहीदी सच के दीपक को सदैव जलता रखने के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गई। नवम पातशाह की शहीदी ने मानवीय अधिकारों के प्रति सिक्खों को जागृत किया। इसके बाद तो सिक्ख इतिहास में जुल्म का मुकाबला करते हुए शहादतों की झड़ी लग गई।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा सुशोभित श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में गुरबाणी का

प्रकाश सच को जुल्म के विरुद्ध जूझने की प्रेरणा देता रहा। विरोधियों द्वारा इस सच के केंद्र को तहस-नहस करने की योजनाएं भी तैयार होती रहीं। सन् १७४० ई में मस्से रंघड़ ने सच के दीपक को बुझाने की कोशिश हेतु यहां कब्ज़ा कर लिया। उसने इस पवित्र स्थान को अपवित्र करने की कोई कोर-कसर न छोड़ी। सच के पहरेदार भाई सुक्खा सिंघ व भाई महिताब सिंघ ने ज़ालिम मस्से रंघड़ का सफाया कर दिया।

सच का दीपक फिर से जल उठा। १७४६ ई में दीवान लखपत राय ने अपनी नीच हरकतों से इस पवित्र स्थान का अपमान करने की कोशिश की। फिर सलामत ख़ान ने इस सच के दीपक को बुझाने की कोशिश की तो मार्च, १७४६ ई में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया की अगुआई तले उसको किए की सज़ा दी। सिक्खों की दिलेरी के पीछे श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी की प्रेरणा बाखूबी काम कर रही थी। सन् १७५७ ई में अहमद शाह अब्दाली ने जब सच की आवाज़ को मिटाने हेतु श्री हरिमंदर साहिब का अपमान किया तो गुरु के सिक्ख बाबा दीप सिंघ जी की जत्थेदारी तले सर हथेली पर धरकर अफगान फौजों पर टूट पड़े तथा श्री हरिमंदर साहिब की पावनता की पुनर्स्थाप्ति हेतु कुर्बान हो गए। सन् १७६२ ई तथा १७६४ ई में अब्दाली ने फिर श्री हरिमंदर साहिब पर हमला करके इसको तहस-नहस करने की कोशिश की किंतु हर बार सच के परवाने अपनी शहादतें देकर पहरा देते रहे। मुगलों के बाद अंग्रेज सरकार ने भी इस सच के प्रेरणा-स्रोत को ख़त्म करने की अनेकों चालें चली, परंतु कामयाब न हो सके। भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिलने के उपरांत १९४७ ई के बाद १९८४ ई में देश की फौज ने इस पर हमला करके अपनी मूर्खता का सबूत दिया।

पंचम पातशाह की लासानी शहादत ने सिक्ख कौम को सच के हक में डटने की नयी दिशा प्रदान की थी। छठम पातशाह के मीरी-पीरी सिद्धांत, दशम पातशाह द्वारा खालसा पंथ की सृजना ये सब कार्यवाहियां सच की शक्ति को उभारने के लिए थीं। आज गुरु नानक-नाम लेवा सिक्ख ही नहीं बल्कि सारा संसार सिक्ख गुरु साहिबान की अद्वितीय देन के समक्ष नत्मस्तक हो रहा है और जहांगीर, औरंगज़ेब तथा वक्त के अत्याचारी हाकिम, जो सच की आवाज़ को मिटाना चाहते थे, को नफ़रत की निगाह से देखता है।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

श्री गुरु अरजन देव जी : जीवन व विचारधारा

-डॉ. जगजीत कौर*

श्री गुरु अरजन देव जी सिक्ख धर्म परंपरा की पांचवी ज्योति हैं। विश्व धर्मों के इतिहास में ऐसा प्रखर व्यक्तित्व शायद कोई नहीं है जो गंभीर, दार्शनिक, तत्त्ववेत्ता, ज्ञानयोगी, तपी-साधक, मनीषी, उच्च कोटि के बाणीकार, अद्भुत कलात्मक संपादनकर्त्ता, कर्मठ कार्यकर्त्ता, संगठनकर्त्ता के साथ कोमल हृदय-भक्त, स्नेही, पिता, पति, भाई, आज्ञाकारी पुत्र भी हो और जिसे आदर्शों, धर्म-सिद्धांतों की रक्षा हित समग्र मानवता, सारे भारतवासियों के स्वसम्मान की रक्षा हित शिरोमणि शहीद होने का गौरव प्राप्त हुआ हो। किसी महान सत्य को संसार के सामने रखना, उसकी व्याख्या-आख्यान मानव हित करना, निश्चय ही प्रशंसायोग्य है किंतु उसी सत्य को स्वयं जीवन में ढालना और उसी सत्य की रक्षा हित विरोधी, नृशंस सत्ता के हाथों असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहादत का जाम पी जाना श्री गुरु अरजन देव जी जैसी आलौकिक दैवी शक्ति-संपन्न ज्योति द्वारा ही संभव है। गुरु-घर का तो आदर्श ही रहा है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

और :

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥
(पन्ना ११०२)

यदि परमेश्वर से प्रेम-मिलन-क्रीड़ा की सच्ची चाहना है तो पहले मरना सीखो, शीश तली पर धरकर प्रेम-साधना-मार्ग में प्रवेश करो; ऐसा उपदेश करने वाले कथनी और करनी के सूरमा गुरुदेव जी का अवतरण चतुर्थ गुरु पिता श्री गुरु रामदास जी और माता भानी जी के गृह गोइंदवाल साहिब में १५ अप्रैल सन् १५६३ ई को हुआ। उस समय श्री गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक विरासत गुरगद्दी पर तृतीय गुरुदेव श्री गुरु अमरदास जी आसीन थे। चतुर्थ गुरुदेव श्री गुरु रामदास जी का विवाह श्री गुरु अमरदास जी की सुपुत्री बीबी भानी जी से हुआ जो स्वयं सेवा, सिमरन, भक्ति-साधना की प्रतिमूर्ति थीं। अत: पंचम गुरुदेव जी की देख-रेख, शिक्षा-दीक्षा अति आध्यात्मिक वातावरण में हुई। लगभग ११-१२ साल की आयु से ही गुरु-नाना, गुरु-पिता, सेवा-मूर्ति माता के संरक्षण में रहने से आप बाणी-रचना करने लगे थे। ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी से पौराणिक ग्रंथों का पठन-पाठन करते हुए आपको अल्प आयु में ही गुरमुखी, ब्रजभाषा, हिंदी, संस्कृत, अरबी, फारसी के ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ग्रंथों व दर्शन-शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त हो गया। कुशाग्र बुद्धि, ज्ञान, विवेक-सम्पन्न बाल को देखते ही नानाश्री ने गद्गद् कंठ से 'दोहिता, बाणी का बोहिथा' आशीर्वाद दिया। भविष्यवाणी की-- "बाणी का जहाज तैयार करेगा; मानवता का निसतारा होगा।" गुरुदेव जी की विलक्षण प्रतिभा को देखते हुए श्री गुरु रामदास जी ने वरिष्ठ प्रिथीचंद, द्वितीय महादेव को छोड़कर तीसरे और

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६

सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को गुरगद्दी दी। महादेव मस्त, उदासीन स्वभाव के थे। प्रिथीचंद गुरगद्दी को दुनियावी अधिकार मानता था, अत: भाई से जलने लगा। यही जलन-ईर्ष्या जीवन भर रही और विरोधी पक्ष के साथ मिल वह गुरुदेव जी को कष्ट ही देता रहा।

श्री गुरु अरजन देव जी १८ वर्ष की अवस्था में गुरगद्दी पर विराजमान हुए और तब से अपनी समग्र चेतना निर्माण-कार्यों में लगा दी। श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर नगर बसाकर अमृत सरोवर की खुदाई शुरू की थी। श्री अमृतसर नगर में ५२ प्रकार के व्यापारियों को बसाकर व्यापार को बढ़ावा दिया था। श्री गुरु अरजन देव जी ने अमृत सरोवर को पक्का किया। तरनतारन, हरिगोबिंदपुर, छेहरटा, करतारपुर आदि नगर बसाए, उन्नत किए और सरोवरों का निर्माण किया। सबसे खूबसूरत और विश्व का अनूठा कलात्मक नमूना श्री हरिमंदर साहिब बनवाया, जो अमृत (रामदास) सरोवर के बीचो-बीच दैव लोक से स्वत: सहज उतरता नूर का स्रोत, अद्वितीय दैवी प्रकाश का पुंज, विश्व की अनुपम अकेली मिसाल है। मोह-माया, विकारों की अग्नि से तपते, जलते, भटकते हज़ारों-लाखों सांसारिक प्राणियों को आत्मिक सुख, शांति, स्थिरता और शीतलता प्रदान करने वाला गुरु जी द्वारा दिया गया मानवता को यह नायाब तोहफा है। इसके चार बड़े द्वार रखे गए कि विश्व के किसी भी कोने से आत्मिक शांति की खोज में आने वाला भूला-भटका जिज्ञासु यहां प्रवेश कर असीम शांति, सुकून का रसास्वादन कर सके। जाति, वर्ण, वर्ग, संप्रदाय के भेदभाव से हीन, *"खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेस चहुं वरना कउ सांझा ॥"* दर है, सर्व-मानवता का उपदेश-केंद्र है। इसके स्वर्ण-जड़ित सुनहरे झिलमिलाते गुंबद व्यक्ति के अंतर्मन में व्याप्त नूरी ज्योति का प्रकाश हैं। इसकी बनावट और नक्काशी में मुगल-शैली और भारतीय वास्तु-कला-शैली का सुमेल किया गया है। कला की यह कृति सार्वभौम सत्य की अभिव्यक्ति है, अनंत काल तक मानवता का विरसा है, थाती है। इसीलिए स्वयं गुरु साहिब के शबदों में कहा जाता है :

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ (पन्ना १३६२)

श्री गुरु अरजन देव जी ने जहां श्री हरिमंदर साहिब के रूप में महान आध्यात्मिक केंद्र स्थापित किया, वहीं विश्व को सबसे बड़ी देन, विलक्षण आध्यात्मिक साहित्य सागर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में दी। गुरुदेव जी की दूरदर्शिता और अद्भुत सूझ-बूझ का ही परिणाम है कि पूज्य गुरु साहिबान ने अपने जीवन-काल में मानव-कल्याण हित जिन महत आदर्शों, विचारों, सिद्धांतों और साधना-विधि का प्रचार-प्रसार किया वे सब शुद्ध, सत्य रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुरक्षित हैं। विश्व के किसी भी धर्म-नायक, धर्म-संस्थापक व समाज-सुधारक ने अपने जीवन-काल में अपने सिद्धांतों, पावन उपदेशों को लिपिबद्ध नहीं किया है। श्री गुरु अरजन देव जी ने कठोर श्रम करके अपने से पूर्व गुरु साहिबान की बाणी, सभी भक्तों आदि की बाणी का संकलन किया।

(श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी को बाद में १७०६ ई में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दमदमा साहिब में भाई मनी सिंघ जी से लिखवाकर इसमें स्थान दिया। इस विशालकाय ग्रंथ साहिब को ही १७०८ ई. में नांदेड़ में परम ज्योति में लीन होने से पूर्व गुरुदेव जी ने गुरु-पद पर प्रतिष्ठित करते हुए *"सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ"* का आदेश दिया। यह दमदमी बीड़ कही जाती

है। सभी उतारे इसी पावन बीड़ से होते हैं। यही *"प्रगट गुरां की देह"* मान्य और पूज्य है।)

सत्य बाणी के विशाल भंडार को एक ही स्थान पर एक निश्चित तंत्र देकर संकलित करना श्री गुरु अरजन देव जी की अद्‌भुत संपादना-शक्ति का परिचायक है। बाणी के विशाल भंडार को निश्चित तकनीक और वैज्ञानिक तंत्र में बांधा गया है। सारी बाणी ३१ रागों में है। सबसे पहले प्रत्येक राग में श्री गुरु नानक देव जी 'महला १' की बाणी को रखा गया है। उसके बाद द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम एवं नवम गुरु की बाणी 'महला २, ३, ४, ५ और ९ के अंतर्गत है। तत्पश्चात भक्त साहिबान की बाणी को रखा गया है। इसमें भक्त कबीर जी को पहला स्थान दिया गया है। रागों की समाप्ति पर फुटकल सलोक, भट्टों की बाणी और सलोक वारां ते वधीक रखी गई है। ३१वें राग जैजावंती में केवल नौंवें पातशाह 'महला ९' की बाणी है। सभी रागों को उनके स्वभाव के अनुसार एक निश्चित तंत्र में बांधा गया है। रागों का प्रारंभ सिरी राग, जो स्वभाव से गंभीर स्वभाव का है, जवानी के शिखर पर पहुंचे माया-लिप्त जीव को चेतावनी है :

किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥
रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ . .
करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥
(पन्ना ४२)

राग माझ और गउड़ी में प्रभु-प्रेम की प्रेरणा दी गई है। इसी प्रकार राग के स्वभाव के अनुसार जीव को साधना-पथ का निर्देश दिया गया है। उसी उपदेश-मार्ग पर चलती जीवात्मा प्रभाती राग में प्रभु से मिल जाती है, जीवन में प्रकाश फैलता है, विगास और परगास होता है, विभास एवं आनंदानुभूति की अवस्था आती है। *"गुर गुर करत सदा सुख पाइआ"*, *"सतसंगति मिलि भइआ परगास"*, जीवन में सुख ही सुख, आनंद ही आनंद, प्रकाश ही प्रकाश उद्‌भासित हो उठता है। स्वयं को जीव धन्य मानता हुआ समर्पित हो गुरु-चरणों पर गद्‌गद्‌-भाव व्यक्त करता है :

सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहां दै साहु ॥
जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभना दा वेसाहु ॥
(पृष्ठ १४२६)

जीव की परम शोभा गुरु-चरणों की निकटता में ही है। गुरु-शरण ही चरम सुख है।

बाणी के अंतरंग तंत्र को देख विस्मादित हो जाना स्वाभाविक है। कैसे पहले एक पदे, दुपदे, तिपदे, चउपदे, पंचपदे, छ:पदे, असटपदियां, छंत, वारां देकर बाणी के गायन योग्य संकेत घरु १, घरु २, इसी तरह १७ घरों तक के संकेत हैं। एक ताल, द्विताल, त्रिताल, चउताल और बाणी फेर-फेर कर गायन करने के पड़ताल संकेत हैं। इसी प्रकार वारां का गायन जिन धुनियों पर करना है, उनका संकेत है, जैसे *"टुंडे अस राजै की धुनी ॥ लला बहलीमां की धुन गावणी;" "एक सुआन के घर गावणा।"* सम्पूर्ण बाणी निश्चित तंत्र से जुड़ी सत्य प्रभु की प्रशस्ति-गाथा की निरंतरता का आनंद प्रदान करती है। इस विशाल महाकाव्य तुल्य उदात संकलन में सर्वाधिक बाणी ३० रागों में श्री गुरु अरजन देव जी के अपने रचे २३१३ शबद हैं। इनमें कुछ विशेष शीर्षक की बाणियां हैं, जैसे-- 'बारह माहा', 'बावन अखरी', 'सुखमनी', 'वारां', 'थिती', 'दिनु रैणि', 'रुति', 'गाथा', 'सहसक्रिति', 'सलोक', 'चउबोले', 'फुनहे', 'सवैये', 'सलोक वारां ते वधीक' आदि बाणी इतनी सरल, सहज भाषा में रची गई है कि जनसाधारण इसका पाठ कर रसास्वादन करता है, इसीलिए यह लोकप्रिय भी हो सकती है। 'सुखमनी साहिब' और 'बारह माहा' तो ऐसी सरल भाषा में रचित

बाणी है कि यह आम जनमानस के कंठ में व्याप्त है। सुखमनी साहिब दोहा, चौपाई की तर्ज पर सलोक-असटपदियों में रचित २४ सलोकों-असटपदियों की बाणी है, जिसका मूल उद्देश्य गुरु साहिब ने स्वयं उपदेश किया है :

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ *(पन्ना २६२)*

इस बाणी में अत्यंत सूत्रात्मक शैली में अकाल पुरख, ब्रह्म, जीव, माया, सृष्टि जैसे दार्शनिक विषयों का सरलतम विवेचन किया गया है। संत, साधु, ब्रह्मज्ञानी, प्रभु का सेवक, गुरु का सिक्ख, गुरु, ब्राह्मण, पंडित, वैष्णव, अस्पृश्य सभी की समुचित परिभाषा दी गई है। लक्ष्य केवल एक ही दिया गया है-- हउमै-अहंकार का त्याग और सेवा-सिमरन द्वारा परमात्मा के नाम में लिवलीनता, जो परम सत्य *"सरगुण निरगुण निरंकार सुन समाधी आपि"* है, जो दुख-भंजन है, दुख-हति है; *"करण कारण प्रभ एक है दूसर नाही कोइ"* है। उसी की सेवा में जीव का कल्याण है :

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥
सरब इछा ता की पूरन होइ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥
बहुरि न होवै आवन जानु ॥ *(पन्ना २९५)*

गुरुदेव जी की बाणी के ऐसे पावन महावाक्य जीव को परम अध्यात्म सुख और रस में लीन तो करते ही हैं, मधुर रस की निष्पत्ति में सफल सार्थक तो हैं ही, कला की दृष्टि से भी श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी विशिष्ट है। शैली और भाषा की कथ्यानुकूल विविधता और गंभीरता आश्चर्यचकित करती है। शैली को सर्व-ग्राह्य बनाने में लोक-प्रचलित मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है, जैसे *"धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमालवती उपजहि नाही दाम ॥"* आदि। शैली के लगभग सभी प्रकार के संबोधन, प्रश्न, कथा, प्रसंग, वर्णन, प्रश्न-उत्तर, संवाद, फुनहे, चउबोले, निवेदन, प्रकाशन, प्रबोधन आदि का प्रयोग किया गया है। बाणी को अलंकृत करने में अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकारों और शब्दालंकारों का प्रयोग है। रूपक प्रिय अलंकार रहा है। भाषा की विविधता हद दर्जे की है। मूल साध भाषा में ब्रजभाषा, संस्कृत के तत्सम्, तद्भव, अर्धतत्सम, अपभ्रंश, अरबी, फारसी के शब्दों के साथ पंजाबी के पूर्वी, पश्चिमी, लहिंदी, दक्खणी, मुलतानी, सिंधी भाषा और लोक-प्रचलित बोलियों का सुंदर समिश्रण है। श्री गुरु अरजन देव जी का विशद् भाषा-ज्ञान उनकी प्रतिभा का द्योतक है। भाषा की विविधता रस-माधुर्य की सहज सृजना करती है और अल्पशिक्षित जनमानस इसका सहज आनंद-लाभ प्राप्त करता है।

बाणी की विचारधारा श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित मूल सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें परम पिता परमात्मा को ही एकमात्र परम सत्य माना गया है :

मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥

(पन्ना २७९)

जीव उसी परम सत्य का अंश है। माया इसे भटकाती है। माया-ग्रसित जीव हउमै के कारण अपने मूल रूप को भूल जाता है। यदि भाग्योदय हो तो गुरु की प्राप्ति होती है। गुरु-शरण में आकर *"गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥"* सतसंगति में बैठ जो निज स्वरूप को पहचानता है, माया उस जीव को भ्रमित नहीं कर सकती। प्रभु के नाम-रंग

(शेष पृष्ठ १६ पर)

मानव जीवन के लिए प्रकाश-स्तंभ : श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी

*-डॉ. परमजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में एक अमूल्य, अमर तथा अद्वितीय देन से मानवता को कृतार्थ करने वाले, सर्वसांझीवालता के प्रेरक, शांति तथा विनम्रता के पुंज, *"प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥"* तथा *"सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥"* के अनुसार गर्म तवी पर बैठकर ऊष्ण रेत को शीश पर डलवाकर शहादत का जाम पीने वाले श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १९ वैसाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, सन् १५६३ को गोइंदवाल साहिब में पिता श्री गुरु रामदास जी तथा माता बीबी भानी जी के घर हुआ। बचपन से ही नाना श्री गुरु अमरदास जी के असीम स्नेह तथा उनसे प्राप्त ज्ञान के कारण उच्च मानवता के सारे गुण आप में प्रकट होने लगे थे। श्री गुरु अरजन देव जी का गुरबाणी के प्रति अटूट प्रेम देखकर श्री गुरु अमरदास जी ने *'दोहिता, बाणी का बोहिथा'* कहकर आशीर्वाद दिया।

आप १८ वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर सुशोभित हुए तथा श्री गुरु रामदास जी द्वारा प्रारंभ किये गए कार्यों को सम्पूर्ण करने में लग गए। अमृत सरोवर के मध्य बनने वाले श्री हरिमंदर साहिब की नींव लाहौर के पीर साईं मीयां मीर जी के हाथों से रखवाकर सांझीवालता की मिसाल कायम की। उच्च आत्मिक जीवन के पथ-प्रदर्शक, मुक्ति-दाता श्री गुरु ग्रंथ साहिब को तैयार करके, १६०४ ई. में इसका पहला प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में करके, स्वयं नीचे आसन ग्रहण कर इस (पोथी साहिब) को सम्मान दिया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने ३० रागों में बाणी रची। आपकी बाणी साधारण मनुष्य के जीवन के बहुत निकट है। यह जीवन की ज्वलंत समस्याओं का समाधान करती हुई जीव को पग-पग पर सचेत करती है।

आज मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंचकर, सुख के विविध साधनों को संचित करके भी मानसिक तनाव में रहता हुआ बहुत सारे रोगों से पीड़ित है तथा चाहते हुए भी उसे मानसिक शांति प्राप्त नहीं होती। श्री गुरु अरजन देव जी मानसिक अशांति का कारण बताते हुए समझाते हैं कि सुख हेतु मनुष्य अनेक (सांसारिक) यत्न तो करता है किंतु परमात्मा, जो सुखों का सागर है, उसे याद नहीं करता :

आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥
नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ ॥
(पन्ना ९६५)

जिस प्रभु ने उद्यम करने के लिए हाथ, पैर, कान, नेत्र आदि दिए हैं, उसे भुलाकर मनुष्य अन्य कार्यों में उलझा हुआ है :

दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥(पन्ना २६७)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार परमात्मा के नाम का सिमरन करना ही जीवन का लक्ष्य है। इस वास्तविकता को न समझने

***६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); मो. ९८१२३-५८१८६**

वाले आत्मघाती बन जाते हैं :

दुलभ देह पाई वडभागी ॥
नामु न जपहि ते आतम घाती ॥ (पन्ना १८८)

वास्तव में दुनिया के सारे रूप, रंग, खुशियां, मनोरंजन के साधन आत्मिक जीवन के मार्ग में बाधक हैं, छिद्र हैं। इनमें लिप्त मनुष्य आत्मिक उन्नति नहीं कर सकता। कभी उससे मोह के समुद्र को पार नहीं किया जाता तो कभी वो लोभ की खाई में गिर जाता है। खाई में से निकलता है तो अहंकार का पत्थर आगे आ जाता है। परमात्मा का नाम सारी खुशियां, सारे सुखों का खज़ाना है, आत्मिक स्थिरता का आधार है :

रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥
हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥ (पन्ना १००३)

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य को सन्यास ले लेना चाहिए। मनुष्य को इस संसार में रहकर, अपने सारे कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए अपना आत्मिक जीवन संवारना है, सदैव परमात्मा को याद रखना है। गुरु जी के मत में परमात्मा के नाम के बिना जितनी भी उम्र गुज़रती है वह इस प्रकार होती है जैसे सांप अपनी आयु बिताता है। सांप की आयु चाहे लंबी होती है परंतु वह सदैव अपने अंदर विष पैदा करता रहता है। नाम विहीन मनुष्य भी अपने अंदर काम, कोध, लोभ, मोह, अहंकार का ज़हर एकत्र करता रहता है तथा सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य प्राप्त करके भी अंत में जीवन की बाज़ी हार कर चला जाता है :

बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥
नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥
(पन्ना ७१२)

ऐसे मनुष्य सदा सूली पर चढ़े हुए चोर की भांति मौत से डरते रहते हैं :

विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥
वेमुख होए राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥
(पन्ना ३१९)

परमात्मा का दर छोड़कर किसी अन्य की चाकरी करनी, बनावटी संतों, ज्योतिषियों के द्वार पर भटकना अपनी ज़िंदगी के समय को व्यर्थ गंवाना है :

बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥

गुरु जी ने हमें एक परमात्मा का आश्रय लेना सिखाया है। सुलही खां द्वारा चढ़ाई करने की ख़बर सुनकर तथा साहिबज़ादे श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब की बीमारी आदि के समय श्री गुरु अरजन देव जी ने परमात्मा का आश्रय लेकर हमें प्रभु पर विश्वास करने की शिक्षा दी तथा समझाया कि जहां अन्य कोई सहायता करने योग्य नहीं होता वहां परमात्मा सहायक होता है-- *"तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥"* इसलिए सारे आश्रय छोड़कर एक अकाल पुरख का ही आश्रय लेना चाहिए :

एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ॥
इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ॥
(पन्ना ९६१)

दुख, संताप, क्लेश, डर, जन्म-जन्मांतरों की गरीबी, बड़े-बड़े विवाद, यहां तक कि किए गए महापाप भी सच्चे दिल से परमात्मा का सिमरन करने से उसी तरह मिट जाते हैं जैसे अग्नि लकड़ी को भस्म कर देती है :

घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥
मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥ (पन्ना १३५४)

सांसारिक धन की तुलना में नाम-धन अमूल्य है। प्रभु का सिमरन करने वाले ही

सम्मान प्राप्त करते हैं। वे कभी किसी के मुहताज नहीं होते :

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥
(पन्ना २६३)

नाम का बल प्राप्त करके जन्म से मरण तक के सारे फिक्र मिट जाते हैं। मनुष्य माया में रहता हुआ भी माया से निर्लेप रहता है। वह दयालु हो जाता है। अपने तथा पराये का भेद नहीं रहता। परमात्मा प्रत्येक शरीर में व्यापक दिखाई देता है :

करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥
मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥
(पन्ना ६७१)

गुरु जी दृढ़ करवाते हैं कि इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए परमात्मा पर पूर्ण विश्वास होना ज़रूरी है। चाहे कोई इच्छा पूरी न हो या कोई नुकसान हो जाए, विश्वास कम नहीं होना चाहिए। जीव प्रभु से असीम पदार्थ लेकर जमा कर लेता है परंतु यदि कोई एक वस्तु न मिले तो विश्वास खो देता है। यदि परमात्मा एक वस्तु भी न दे तथा पहले दी हुयी (दस) भी ले ले तो मूर्ख जीव क्या कर सकता है? जिस प्रभु पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता उसे सदैव नमस्कार ही करनी चाहिए :

दस बसतू ले पाछै पावै ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ (पन्ना २६८)

मन को दृढ़ करने का तरीका बताते हुए गुरु पातशाह अमृत वेला में उठकर प्रभु का ध्यान धरने तथा नाम-सिमरन करने की ताकीद करते हैं :

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥
(पन्ना ६११)

अमृत वेला प्रभु-चरणों में बिताकर शेष समय में भी चलते-फिरते, उठते-बैठते हर समय परमात्मा को याद रखना जरूरी है :

चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥ (पन्ना १००६)

गुरु जी समझाते हैं कि यदि मन विकारों से मैला है; अंदर झूठ है, छल-कपट, लोभ के अधीन होकर गलत काम किये जाते हैं, दूसरों का बुरा सोचने की आदत है, दुर्व्यवहार करने का स्वभाव है तो तन को पवित्र करने से मन पवित्र नहीं होता :

सोच करै दिनसु अरु राति ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥ (पन्ना २६५)

परमात्मा के आश्रय के बिना सारे कर्म-धर्म पाखंड बन जाते हैं। परमात्मा का नाम जपना तथा आचरण पवित्र बनाना सारे धर्मों से श्रेष्ठ धर्म है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥(पन्ना २६६)

आचरण की पवित्रता के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्ति ज़रूरी है। जब तक अंदर 'मैं' की भावना है, प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती। विनम्रता वाला स्वभाव बनाकर ही आत्मिक आनंद की प्राप्ति हो सकती है तथा प्रभु का सामीप्य प्राप्त हो

सकता है :
काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥
होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥ (पन्ना ६१४)

कर्त्तापन के अहंकार से रहित होकर स्वयं को प्रभु को समर्पित करके प्रभु की रज़ा में रहना ही वास्तविक आराधना, जप, तप तथा ज्ञान है :
इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥
जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥ (पन्ना ३७७)

आज कर्म के बारे में अपने दृष्टिकोण को बदलने की ज़रूरत है। गुरु साहिब के अनुसार भक्ति, प्यार, सेवा, पवित्रता, परोपकार, संतोष तथा सच्चाई धर्म के आधारभूत तत्त्व हैं। गुरु जी दृढ़ करवा रहे हैं कि भले कार्य में देर न करनी, परमात्मा को याद रखना, पर-धन, पर-स्त्री का लालच न करना, निंदनीय कर्मों का त्याग करना, धर्म के लक्षण हैं :
नह बिलंब धरमं बिलंब पापं ॥
द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं ॥
सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लख्यिण ॥
नानक जिह सुप्रसंन माधवह ॥ (पन्ना १३५४)

निंदा सुनने वाले कान, पर-धन की लालसा रखने वाले हाथ, पराये नुकसान के लिए आगे बढ़ने वाले पैर आदि शरीर के सारे अंग जो गलत रास्ते पर चलते हैं, व्यर्थ हैं :
मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ (पन्ना २६८)

मनुष्य लोगों से छिपाकर छल-कपट करता है पर यह नहीं समझता कि परमात्मा सब कुछ जानता है :
तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ (पन्ना ५४६)

झूठ के मार्ग पर चलते हुए नाम-सिमरन का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। सत्य के मार्ग पर चलने का स्वभाव बनाने के लिए मन की मति का त्याग करके गुरु की शरण लेनी ज़रूरी है :
इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥
तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥
इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥
हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ (पन्ना ७६३)

अर्थात् इस रास्ते पर जो गुरु-भाई चलते हैं वे गुरु द्वारा बताया गया कार्य करते हैं। अपनी बुद्धि का अहंकार, अपने मन की मति का त्याग करके, प्रभु के अतिरिक्त अन्य माया आदि का मोह भूलकर प्रभु का दर्शन प्राप्त किया जा सकता है। यही गुरु का आदेश है।

गुरु की शरण में आकर दुविधा समाप्त हो जाती है। हमारे लिए गुरबाणी ही गुरु है। गुरबाणी के सिद्धांतों के अनुसार जीवन बनाने से मन में से अहंकार की मैल उतर जाती है, मन स्थिर हो जाता है। मनुष्य किरत करता हुआ माया के मोह से निर्लिप्त होकर संसार-समुद्र की विकारों वाली लहरों से पार हो जाता है। जो प्राणी गुरु द्वारा बताये गए मार्ग पर नहीं चलता उसका जीवन धिक्कार योग्य है। श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार वह मूर्ख

व्यक्ति कुत्ते, सूअर, सांप, गधे तथा काक के तुल्य है :

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ (पन्ना १३५६)

शराब आदि नशों का सेवन करने वाले के लिए गुरु जी का आदेश है कि जो इसे पीते हैं वे दुर्बुद्धि वाले दुराचारी हो जाते हैं तथा विकारों में लिप्त रहने से पागलों जैसा व्यवहार करते हैं पर जो नाम-रस पीते हैं उनको परमात्मा के नाम की लगन लग जाती है :

दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥ (पन्ना ३९९)

आधुनिक युग में शरीर का शृंगार करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। चंचलता को बढ़ाने वाले शृंगार करने से विकार बढ़ जाते हैं, इसलिए ये गुरमति में वर्जित हैं। गुरु के आदेश अनुसार चलने वालों को सत्य, संतोष, दया, धर्म आदि का शृंगार ही शोभा देता है :

सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥
सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥ (पन्ना ८१२)

आज समाज में गंदे, लचर गीतों को गाने तथा सुनने की रीति बढ़ती जा रही है, जिसके कारण नौजवान पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलकर गलत रास्ते पर जा रही है। गुरु साहिब समझा रहे हैं :

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥ (पन्ना ८२०)

अर्थात् परमात्मा से टूटे हुए मनुष्य, जो गंदे गीत, नाद तथा ध्वनियों के बोल बोलते हैं, वे आत्मिक जीवन के लिए व्यर्थ हैं। हे मेरे मोहन (प्रभु)! ऐसे बोल मेरे कानों में न पड़ें। मानसिक सुख तथा शांति का मंत्र दृढ़ करवाते हुए गुरु जी बताते हैं कि अपने मन में दूसरों का बुरा करने के बारे में मत सोचो, तुम कभी दुखी नहीं हो सकते :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

जो अपने मन से बुराई को मिटा लेते हैं उनको सभी अपने मित्र दिखाई देते है :

मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ (पन्ना २६६)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन तथा बाणी कलयुग के जीवों के लिए प्रकाश-स्तंभ है, उपदेश है, जो मायूस लोगों में नवजीवन का संचार करके स्वाभिमान के साथ जीवन जीने का ढंग ही नहीं सिखाती, वरन् विकारों से पूर्ण संसार-सागर में डूब रहे मनुष्यों के लिए जहाज का काम भी करती है :

कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ॥ (पन्ना १४०८)

आज के बदलते हालात में अपने मान-सम्मान तथा अस्तित्व को बनाए रखने के लिए यह ज़रूरी है कि हम दूसरों को दोष देने की आदत छोड़कर भेदभाव, बुद्धिमता, चतुराइयों को भुलाकर, गुरु जी के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने को अपने गौरवमयी विरसे के साथ जोड़ें! यह सत्य है कि जो प्रभु की कृपा-दृष्टि का पात्र बनता है तथा जिस मनुष्य पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि होती है वही गुरमति पर चलता हुआ अपने जीवन को सफल तथा आनंदमयी बनाता है :

जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ (पन्ना ६७२) ❁

शहीदी प्रसंग श्री गुरु अरजन देव जी : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

*-स. गुरदीप सिंघ**

सल्तनत चाहे कोई भी हो वह कभी भी अपने आपको दोषी नहीं मानती, हमेशा ही अपने विरोधी को दोषी ठहराकर अपने आप दोष-मुक्त होना चाहती है। जहांगीर बादशाह की सल्तनत ने भी इसी प्रकार अपने आप को दोष-मुक्त करते हुए शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी पर झूठे इलजाम लगाकर रियासत के 'यासा' जैसे सख़्त कानून के तहत उन्हें १६०६ ई. में लाहौर में बहुत भयानक और हृदय-विदारक यातनाएं देकर शहीद कर दिया।

श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक सिक्खी इतनी फैल गई थी कि 'दबिस्तान-ए-मजाहिब' के कर्ता मोहसिन फानी के अनुसार हिंदोस्तान का शायद ही कोई ऐसा शहर, गांव हो जहां पर सिक्ख न बसते हों। सिक्खी सिद्धांत झूठे कर्मकांडों पर करारी चोट मारते थे; जात-पात के भेदभाव को मूल रूप से ही रद्द करते थे। इस कारण तथाकथित उच्च जाति वर्ग और खासकर ब्राह्मण वर्ग सिक्खी लहर का विरोधी बनना आरंभ हो गया था। कट्टर जुनूनी मुसलमान गुरु जी के सिक्खी के प्रचार से बहुत दुखी थे। वे हिंदोस्तान में केवल इसलामी राज्य देखना चाहते थे। गुरु जी का सिक्खी प्रचार उनके इस कार्य में बाधा बनता था। सिक्खी के प्रचार से प्रभावित होकर बहुत-से मुसलमान भी सिक्ख धर्म को ग्रहण करने लगे थे। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा स्थापित २२ मंजिओं (प्रचार-केंद्र) में से एक मंजीदार अल्ला यार खां था, जो सिक्खी का बहुत बड़ा प्रचारक बन चुका था। इसी प्रकार जलंधर के गवर्नर सैयद अज़ीम खां ने सिक्खी से प्रभावित होकर न केवल सिक्खी के सिद्धांतों को ग्रहण किया बल्कि गुरु साहिब को विशेष विनती करके अपने इलाके करतारपुर (ज़िला जलंधर) में सिक्खी का महान केंद्र स्थापित करवाया। साईं मीयां मीर जी से गुरु जी ने सिक्खी के प्रमुख केंद्र श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर की नींव रखवाकर उन्हें बहुत बड़ा सम्मान दिया और यह सिद्ध कर दिया कि गुरु-घर में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता। भारी गिनती में मुसलमानों द्वारा सिक्ख धर्म को धारण कर लेने से कट्टर मुसलमान अगुओं को धक्का लगा, विशेषत: भारत में इसलाम का प्रचार करने वाली नक्शबंदी लहर वाले बहुत दुखी हुए।

ख्वाजा मुहम्मद बाकी बिला १५६४ ई. में काबुल में पैदा हुआ और १६०३ ई. में दिल्ली में उसकी मृत्यु हो गई। वो इस सिद्धांत से बहुत प्रभावित था कि राज्य शक्ति को धर्म प्रचार के काम में लाना बहुत ज़रूरी है। एक अन्य व्यक्ति, जिसका नाम शेख अहमद सरहंदी था, इसलाम का अच्छा ज्ञाता था। १५९९ ई. में 'हज' के लिए जाते समय दिल्ली में रहते हुए वह ख्वाजा मुहम्मद बाकी बिला को मिला और उससे प्रभावित होकर उसका चेला बन गया। बाकी बिला का एक अन्य शिष्य शेख फरीद बुखारी शेख अहमद सरहंदी का पक्का श्रद्धालु बन गया और राज दरबार की तरफ से उसे हर प्रकार की सहायता मिलने लगी।

भगवान दास की बड़ी भतीजी का विवाह अकबर के साथ कर दिया गया और महेशा दास

***३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०*

(बीरबल) को जयपुर से अकबर के दरबार में मनोरंजन के लिए भेज दिया गया। महेशा दास भगवान दास के पास नौकरी करता था जो कि बहुत ही चालाक था और अपनी हाज़िर-जवाबी के लिए प्रसिद्ध था। वह सिक्ख मत के प्रचार से बहुत दुखी रहता था। ब्राह्मणों को अपनी चुगली आदि राज दरबार में पहुंचाने की सुविधा हो गई। महेशा दास ने लंगर-प्रथा और बाणी का विरोध किया तथा प्रिथी चंद को भी भड़काया।

अकबर का पुत्र जहांगीर राज्य हासिल करने के लिए बहुत उतावला हो गया था, परंतु अकबर अपने पोते खुसरो को गद्दी देना चाहता था। जहांगीर ने राज दरबार में कई प्रमुख व्यक्तियों को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। १७ अक्तूबर, १६०५ ई को अकबर आगरा में मर गया। राज दरबारियों और जुनूनी मुसलमानों की मदद से जहांगीर ने राज सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया। खुसरो ने आगरा से बगावत कर दी और मथुरा से होता हुआ दिल्ली पहुंच गया। वह दिल्ली से पंजाब की तरफ चल दिया, ताकि लाहौर पर कब्ज़ा कर सके पर उसे इस काम में सफलता न मिली। चिनाब पार करते समय खुसरो तथा उसके साथियों को कैद कर लिया गया। लाहौर लाकर थोड़े समय के अंदर ही सबको सज़ा दे दी गई।

२३ मई, १६०६ ई को जहांगीर के पास एक लिखित शिकायत आई कि खुसरो जब ब्यास दरिया पार करके गोइंदवाल साहिब आया तो श्री गुरु अरजन देव जी ने उसको शरण दी थी। खुसरो की बगावत पर श्री गुरु अरजन देव जी की तरफ से सहायता करने की रिपोर्ट पढ़कर जहांगीर बहुत खफा हो गया। जहांगीर अपनी स्वलिखित तुजक-ए-जहांगीरी में लिखता है कि "उसको (श्री गुरु अरजन देव जी) हाज़िर किया जाए और उसका सारा माल-असबाब जब्त कर लिया जाए।" साथ ही हुक्म दिया कि "उसे रियासत के यासा कानून के तहत कठोर यातनाएं देकर खत्म कर दिया जाए।" यह हुक्म मुर्तजा खां (शेख फरीद बुखारी) द्वारा लाया गया था जो कि नक्शबंदी लहर का मुखिया और शेख अहमद सरहंदी का परम श्रद्धालु था। शेख अहमद सरहंदी ने अपने विश्वास-पात्र एवं शिष्य शेख अहमद बुखारी को चिट्ठी में लिखा-- "गोइंदवाल के इस भ्रष्ट काफिर की शहादत हमारी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। चाहे इसको किस तरह मारा गया, किस कारण और बहाने से खत्म किया गया, यह हमारी जीत है। इससे समूह काफिरों का नुकसान और मुसलमानों के फायदे की बात है। इस काफिर की शहादत से पहले मुझे एक सपना आया था, जिसमें मैंने देखा कि बादशाह जहांगीर ने काफिर का सिर कुचल दिया है।" इससे पता चलता कि गुरु जी की शहादत के पीछे शेख अहमद सरहंदी जो कि कट्टर किस्म का, सांप्रदायिक, संकीर्ण सोच और ईर्ष्यालु प्रवृत्ति वाला इंसान था, ने खुफिया तरीके से काम किया। इसका निशाना था कि सारे हिंदोस्तानी लोगों को इसलाम में शामिल किया जाए। शेख अहमद सरहंदी और शेख फरीद बुखारी के अतिरिक्त और भी बहुत-सी शक्तियां थीं जिन्होंने श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद करवाने में कोई कसर न छोड़ी।

बाणी के प्रचार के कारण लोग ब्राह्मणों के जाल से मुक्त होने लगे थे। व्रत रखने, जंत्र-मंत्र, छुआछूत, मुहूर्त, लगन तथा जात-पात विरोधी प्रचार से ब्राह्मणों को करारी चोट लगी। ब्राह्मणों ने हाकिमों के पास शिकायतें करनी शुरू कर दीं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में हिंदू धर्म के अलावा इसलाम धर्म के विरुद्ध भी लिखा गया है।

बढ़ रहे सिक्ख मत के प्रचार से सखी

सरवर की गद्दी वाले बहुत चिंतित थे। इसके मुखियों ने पूरा ज़ोर लगाया कि सरकारी शक्ति का प्रयोग करके सिक्ख धर्म के प्रचार को बंद किया जाए, अत: सखी सरवरीए भी गुरु-घर के विरुद्ध काम करने लग गए।

चंदू शाह लाहौर में सूबे का दीवान था। वह पंचम गुरु जी से दुश्मनी रखता था। चंदू शाह की बेटी का रिश्ता श्री गुरु अरजन देव जी के सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ करने की बात चलाई गई। चंदू अपने आपको बहुत बड़ा मानता था। उसने अहंकार में आकर अपने आपको 'चौबारा' तथा गुरु जी को 'मोरी की ईंट' कहकर गुरु-घर को नीचा कहने की गुस्ताखी की। जब सिक्ख संगत को इस बारे में पता चला तो उसने गुरु जी को चंदू की बेटी का रिश्ता लेने से मना कर दिया। इसके बाद चंदू के मन में गुरु जी के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गई।

गुरु जी को खत्म करने के लिए उन्हें मुर्तजा खां के हवाले कर दिया गया। अन्य जल्लादों की तरह चंदू भी गुरु जी के लिए जल्लाद बन गया। उसने अपनी हवेली में यासा कानून के तहत भयानक यातनाएं गुरु जी को दीं। उनको भूखा और प्यासा रखकर उबलते हुए पानी की देग में बिठाया गया; गर्म तवी पर बिठाकर शीश पर गर्म रेत डाली गई। इस प्रकार गुरु जी को कठोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। इस शहीदी-स्थल को गुरुद्वारा डेहरा साहिब के नाम से जाना जाता है जो कि लाहौर (पाकिस्तान) में है।

श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के बाद सिक्ख धर्म और भी तीव्र गति से फैलने लगा। मुगल सल्तनत की ओर से कठोरता से सिक्ख धर्म को कुचलने की नीति फेल हो गई। श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी से सिक्ख इतिहास में एक नया क्रांतिकारी मोड़ आया। गुरु जी को 'शहीदों का सिरताज' कहा जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी : जीवन व विचारधारा

(पृष्ठ ८ का शेष)

में रंगा जीव प्रभु से एक्य प्राप्त करता है :

प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥
ओइ दाते दुख काटनहार ॥ जा कै संगि तरै संसार ॥
जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै संगि एक लिव लागी ॥
गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥ *(पन्ना २८५)*

इस प्रकार अपने मधुर उपदेशों से जनसाधारण को स्थायी सुख का मार्ग दिखाते हुए श्री गुरु अरजन देव जी श्री गुरु नानक देव जी के आदेशों का ही प्रचार-प्रसार करते रहे। उस समय की कट्टर धर्म-नीति से प्रेरित मुगल सत्ता के बादशाह जहांगीर को यह पाखंड की दुकान लगती थी। इसलाम को घातक खतरा महसूस कहकर उसने 'खुसरो की बगावत में गुरु जी का हाथ है' का बहाना बना गुरु साहिब को लाहौर पकड़ लाने का आदेश दिया। घर में ही विरोधी बैठे थे। प्रिथी चंद, चंदू लाल आदि ने भी साथ दिया। मुर्तजा खां को सौंप दिया गया गुरुदेव को, जिसने यासा कानून के अधीन नृशंस, अमानुषिक कष्ट देकर गुरु जी को शहीद किया। ४३ वर्ष मानवता की सेवा करते हुए *"ना को बैरी नही बिगाना"* का आदर्श पालन करने वाले गुरुदेव परम ज्योति में ३० मई, सन् १६०६ को लीन हो गए।

श्री गुरु अरजन देव जी का सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

श्री गुरु अरजन देव जी बहुपक्षीय, अद्वितीय, अतुलनीय, अद्भुत, अनुकरणीय तथा विराट व्यक्तित्व व प्रतिभा के मालिक थे। उनके सद्गुणों, सामाजिक, आध्यात्मिक, धार्मिक परोपकारी कार्यों का वर्णन कर पाना असंभव है। न केवल सिक्ख धर्म में ही बल्कि विश्व के इतिहास में भी उनको आदरपूर्वक, श्रद्धापूर्वक सदैव स्मरण किया जाता है। उनकी दूरदृष्टि, दिव्यदृष्टि, सहन-शक्ति, क्षमा-शक्ति, दया-भावना, नम्रता की प्रशंसा दुनिया के प्रत्येक धार्मिक गुरु, बुद्धिजीवी एवं विद्वान ने की है। वे न केवल गुरमुखी, देवनागरी, संस्कृत, गणित के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता थे बल्कि वे चित्रकला, शिल्पकला, घुड़सवारी तथा नेज़ाबाज़ी में भी निपुण थे। श्री हरिमंदर साहिब, तरनतारन, लाहौर डब्बी बाज़ार, बाऊली साहिब, दीवानखाना, करतारपुर (भारत) का शीशमहिल उनकी शिल्प कला की उत्तम उदाहरणें हैं। उन्होंने लोगों को वृक्षों के महत्त्व का एहसास करवाने हेतु कई बाग भी लगवाए। श्री गुरु अरजन देव जी शांति के पुंज थे। उन्होंने सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया। वे नाम-सिमरन के साथ-साथ सेवा में भी सदैव जुटे रहते थे।

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म श्री गुरु रामदास जी के घर बीबी भानी जी की कोख से १९ वैसाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, सन् १५६३ को गोइंदवाल साहिब में हुआ। उन्होंने बचपन के ग्यारह वर्ष गोइंदवाल साहिब में ही व्यतीत किए। आपकी परिवरिश सिक्खी के धार्मिक वातावरण में ही हुई।

सितंबर, १५७४ में श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समाए थे और श्री गुरु रामदास जी गुरगद्दी पर विराजमान हुए थे। श्री गुरु रामदास जी ने अपना निवास श्री अमृतसर में कर लिया था।

श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर नगर की नींव रख दी थी। उनका ज्यादा समय निर्माण-कार्य में ही व्यतीत होता था। श्री गुरु अरजन देव जी धर्म प्रचार की ओर अधिक ध्यान देते थे। लंगर की रसद (राशन) का धन और मसंदों द्वारा बाहर से लाए गए धन का हिसाब प्रिथी चंद ही रखता था। श्री गुरु अरजन देव जी केवल सेवा को ही अपना मुख्य ध्येय समझते थे। श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की लगन, नम्रता व सेवा-भावना को मुख्य रखते हुए तथा उन्हें अन्य अनेक गुणों का मालिक देखकर गुरिआई की गद्दी बख़्श (सौंप) दी। अपने बड़े भाई प्रिथी चंद का विरोध झेल लेने के बाद तथा भाई गुरदास जी का सहयोग मिलने के बाद श्री गुरु अरजन देव जी ने अब अपना पूरा ध्यान श्री अमृतसर के निर्माण की ओर लगा दिया। लंगर भी पुनः अपनी पहली शान से चलने लगा। सिक्खों में सेवा का उत्साह भरने हेतु हुकमनामे भेजे। सन् १५८६ में संतोखसर की खुदाई शुरू की। प्रिथी चंद ने कड़ा विरोध किया। भाई

**बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

गुरदास जी बाबा बुड्ढा जी व अन्य सिक्खों ने उसकी एक न चलने दी।

सन् १५८८ माघी वाले दिन श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखी गई। नींव रखने का पवित्र कार्य मीर मुअईन-उल-असलाम उर्फ़ साईं मीयां मीर जी ने किया। श्री हरिमंदर साहिब बनने पर सिक्खी का केंद्र मज़बूत हो गया। गुरु जी की कीर्ति चहुं ओर फैल गई। श्री हरिमंदर साहिब के चार द्वार दिशा अनुकूल रखे ताकि दिशा आदि का झगड़ा ही खत्म हो जाए। सिक्ख संगत श्री गुरु अरजन देव जी के व्यक्तित्व व सेवा से बहुत प्रभावित हो रही थी।

श्री गुरु अरजन देव जी ने (मुसलमान) सखी सरवरों के प्रभाव को कम करने हेतु उनके केंद्र के करीब नया नगर सन् १५९६ में बसाया। उसका नाम तरनतारन रखा गया। यह नगर बनने पर सरवरियों के प्रचार को काफ़ी चोट पहुंची। क्षेत्र के शासक नूरदीन के पुत्र अमीर दीन ने वे पक्की ईंटें, जो तरनतारन सरोवर के लिए आई थीं, बलपूर्वक उठाकर अपनी हवेली में लगवा दीं। गुरु जी पूरे जोश तथा उत्साह के साथ सिक्ख धर्म के इस केंद्र को बसाने में जुटे रहे। इस हेतु वे इसके नज़दीकी गांवों में प्रचार हेतु भी जाते रहे। गुरु जी खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब, सरहाली व खानपुर तक गए। तरनतारन में ही प्रथम कुष्ठ आश्रम बनवाया। एक पिंगलवाड़ा भी यहीं बनवाया।

श्री गुरु अरजन देव जी तरनतारन का निर्माण-कार्य संपूर्ण होने के उपरांत दोआबा क्षेत्र की ओर चले आए। दोआबा क्षेत्र के लोग भ्रमों, अंधविश्वासों के जाल में फंसे हुए थे; तथाकथित निम्न जातियों ने इसलाम धर्म अपना लिया था, हिंदू धर्म में तो उन्हें छुआछूत, ऊंच-नीच के भेदभाव का शिकार होना पड़ता था। ऐसा केवल दोआबा सहित कुछेक क्षेत्रों में ही नहीं हो रहा था बल्कि पूरे भारत में हो रहा था। गुरु जी ने दोआबा क्षेत्र में भी प्रचार-केंद्र बनाने का निर्णय किया। सन् १५९३ में उन्होंने जलंधर के निकट करतारपुर नगर की नींव रखी। करतारपुर में ही माता गंगा जी के नाम पर कुआं खुदवाया, जिसे गंगसर कहते हैं। क्षेत्र में धर्म-प्रचार किया। इसी प्रचार से प्रभावित होकर भाई मंझ जैसा सखी सरवरों का जत्थेदार गुरु जी की शरण में आया और सिक्खी का उच्च कोटि का प्रचारक बना। गुरु जी ने भाई मंझ को सम्मान देते हुए कहा, "मंझ गुरु का बोहिथा, जग लंघणहारा" अर्थात् "जो भाई मंझ जैसा रहन-सहन अपनाएगा वह इस संसार (जन्म-मरण) से मुक्ति पा लेगा।"

दोआबा क्षेत्र में लगभग एक वर्ष तक सिक्ख धर्म का प्रचार करने के बाद उन्होंने सन् १५९४ में वडाली गांव की ओर प्रचार करना शुरू किया। गुरु जी ने अपना पक्का ठिकाना भी वडाली में बना लिया और वे वहीं से प्रचार हेतु जाते थे। वडाली में ही १९ जून, १५९५ को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ।

इन्हीं वर्षों में वर्षा न होने के कारण पंजाब में बहुत भारी सूखा पड़ गया। सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं थे। कृषि वर्षा के पानी पर निर्भर थी, अत: फ़सलें सूख गईं। कुएं तो बहुत कम थे। लोगों ने इस प्रकोप से बचने हेतु फ़कीरों व तावीज़ों आदि की ओर रुख कर लिया। गुरु जी ने इस नाजुक समय में तेज़ी के साथ प्रचार किया और सभी लोगों को समझाया कि सकारात्मक कोशिश करने से व गुरु की कृपा से ही विपत्ति टल सकती है। गुरु जी ने कुएं खुदवाने का अभियान शुरू किया। एक-रहंट कुएं की जगह द्वि-रहंट, चार-रहंट

कुएं ज़रूरत मुताबिक बनवाए। इसी तजुर्बे को कामयाब करने के लिए गुरु जी ने वडाली के निकट पश्चिम की ओर छः- रहंट वाला कुआं बनवाया। इसी कुएं के नाम पर १५९७ ई में यहां एक गांव (अब कसबा) बसाया गया जो 'छेहरटा' नाम से विख्यात है। इस ऐतिहासिक कुएं वाले स्थान पर एक आलीशान गुरुद्वारा साहिब भी सुशोभित है।

भयानक अकाल (भुखमरी) के कारण लाहौर की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। तत्कालीन इतिहासकार नूरुलहक के कथनानुसार, "भूख व बीमारियों के कारण लाहौर शहर की गलियां एवं बाज़ार मुर्दों से भरे रहते थे। उनको शहर में से उठाकर बाहर दफ़नाने-जलाने का कोई प्रबंध नहीं था।" इतनी बुरी दशा लाहौर की हो गई कि अकबर को स्वयं मौके पर आना पड़ा।

समाचार पाकर श्री गुरु अरजन देव जी भी सन् १५९९ में लाहौर पहुंचे। दसवंध की काफी रकम जमा हो गई थी। गुरु जी ने ज़रूरतमंदों को मदद पहुंचानी शुरू कर दी। दिन-रात निरंतर लंगर जारी किए। बेघरों को आश्रय देने हेतु चूना मंडी, लाहौर में इमारत के निर्माण का काम शुरू कर दिया। डब्बी बाज़ार में बाऊली (जलकुंड) को बनाना शुरू किया। तामीरदारी के इन कामों के कारण बेरोज़गारों को रोज़गार मिलने लगा; रहने के लिए जगह बन गई। यही नहीं, गुरु जी ने मुर्दों को उठाने, जलाने, दफ़नाने का काम स्वयं अपने हाथों से किया। यह देख लोग 'वाह-वाह' कहने लगे; गुरु जी की जय-जयकार करने लगे।

गुरु जी आठ माह तक लाहौर में ही रहे। फिर निर्माण का कार्य सिक्खों के सुपुर्द कर सिक्ख धर्म का प्रचार करने तथा ज़रूरतमंदों की सहायता करने हेतु आगे चल पड़े। गुरु जी के आकर्षक एवं विराट व्यक्तित्व, मधुर वाणी, प्रेमपूर्ण स्वभाव, सादा रहन-सहन, नम्रता और सेवा-कार्यों के कारण अकबर बहुत प्रभावित हुआ। वह गुरु जी के दर्शन कर तथा आलौकिक बाणी-कीर्तन सुनकर प्रसन्न हुआ।

गुरु जी गोइंदवाल साहिब से श्री अमृतसर आये। यहां गुरु जी अधिक समय तक नहीं रुके और प्रचार करने के लिए गुरदासपुर की ओर चले गए। उन्होंने लोगों से अपने भ्रमों को दूर करने को कहा। डेरा बाबा नानक से होते हुए (रावी वाले) करतारपुर, कलानौर आदि स्थानों पर प्रचार करने के उपरांत बारठ (साहिब) में पहुंचे। वहीं पर उनकी बाबा श्रीचंद से भेंट हुई। लगभग एक वर्ष तक गुरदासपुर क्षेत्र में प्रचार किया। फिर १६०१ ई में श्री अमृतसर आ गए।

प्रचार-दौरे से वापिस लौटकर श्री गुरु अरजन देव जी ने अपना पूरा ध्यान बाणी को संभालने की ओर लगाया। सिक्ख संगत का संसार के महान् संपादक से रूबरू होने का वक्त आ पहुंचा था। भाई गुरदास जी उनका अलाही फ़रमान सुनने को बेताब बैठे थे । गुरु जी के पास सभी महापुरुषों की बाणी थी। भक्त साहिबान की बाणी श्री गुरु नानक देव जी इकट्ठी कर दे गए थे। वह खज़ाना भी उनके पास था। 'नानक' नाम तले उनका भतीजा मेहरबान काव्य रूप 'कच्ची बाणी' लिख रहा था। संदेह था कि कहीं 'पक्की (धुर) की बाणी' में 'कच्ची बाणी' न मिला दी जाए; भोले-भाले सिक्ख कहीं गुमराह न हो जाएं। श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी को बाणी लिखने पर लगाया। उन्होंने इकट्ठी की हुई बाणी का उतारा करना शुरू किया।

सारी बाणी की संभाल का काम बहुत

बड़ा था और अति सूझबूझ, लगन व मेहनत की आवश्यकता थी। बाणी को समाहित, संपादित करने का सारा काम गुरु जी की निगरानी में, आगवानी में १५ भादों, संवत् १६६१ (१६०४ ई) को संपूर्ण हुआ व १७ भादों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित की गई। बाबा बुड्ढा जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अपने शीश पर रखकर तथा श्री गुरु अरजन जी स्वयं चंवर (वंदना) करते हुए श्री हरिमंदर साहिब में लाए और इसका प्रकाश किया गया। जो पहला वाक आया वो था, *"संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥"* बाबा बुड्ढा जी प्रथम ग्रंथी बने।

(बाद में दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने समय में पुन: आदि बीड़ का संपादन कर इसमें नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा रचित बाणी को शामिल किया।)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अस्तित्व में आ जाने के महान कार्य से सिक्ख धर्म बहुत मज़बूत हो गया। श्री हरिमंदर साहिब सिक्ख धर्म के मुख्य धर्म-केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने फ़रमाया, "यह (आदि) ग्रंथ साहिब संसार-सागर से पार जाने के लिए एक जहाज़ (रूप) बनाया गया है। जो मन लगाकर पढ़ेगा, सुनेगा और विचार (अध्ययन) करेगा वह आसानी से पार चला जाएगा।"

भाई गुरदास जी २४वीं वार की १९वीं पउड़ी में लिखते हैं कि "श्री गुरु अरजन देव जी श्री गुरु नानक देव जी की पावन गद्दी पर बैठकर अपने बुजुर्गों की रौशनी को सभी तरफ़ फैला रहे थे और शबद के प्रकाश से ही अनेक भटकती आत्माओं को रास्ता दिखा रहे थे। उनका कर्त्तव्य ही गिरी मनोवृत्तियों को ऊपर उठाकर सम्मान देना है।"

यह यकीन के साथ कहा जा सकता है कि श्री गुरु अरजन देव जी के गुरिआई-काल के वक्त सिक्ख धर्म ने काफ़ी उन्नति की।

लतीफ़ अपनी राय व्यक्त करते हुए लिखता है, "श्री गुरु अरजन देव जी एक उत्साही व जज़्बे वाले गुरु थे। उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों को सही अर्थों में समझा तथा उनका उचित तरह से प्रचार करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।"

श्री गुरु अरजन देव जी ने मसंद-व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया। मसंदों को नियुक्त करने का काम चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी कर गए थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने मसंदों को जत्थेबंद किया। मसंदों की जिम्मेदारी थी कि वे सिक्ख संगत से दसवंध की रकम एकत्र कर गुरु-घर तक पहुंचाएं। यह दसवंध कोई 'कर' नहीं था बल्कि सिक्खों द्वारा चाव व खुशी से भेंट की गई रकम होती थी।

मुहसिन फ़ानी कहता है, "मसंदों द्वारा लोग सिक्ख बन गए। बड़े मसंदों द्वारा बहुत-सी दुनिया सिक्ख बनी और फिर उन मसंदों ने अपने नायक हर ज़िले व हर जगह नियुक्त किए। फिर उनके द्वारा लोग गुरु के सिक्ख बने।"

अंग्रेज़ विद्वान मैलकम के शब्द काबिले-गौर हैं, "श्री गुरु अरजन देव जी ऐसे पहले गुरु थे, जिन्होंने उसूलों को खास मर्यादा में बांधा। इसी की बदौलत सिक्ख एक-दूसरे के निकट हुए और उनकी संख्या बढ़नी शुरू हुई। मुगल सरकार ने सिक्खी के पसार (फैलाव) को देख ईर्ष्यावश क्रोध दिखाया और गुरु जी को शहादत देनी पड़ी।"

दिव्य अमर शहीद श्री गुरु अरजन देव जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

जब गरीबों, दुखियों, मज़लूमों एवं अबलाओं पर अत्याचार हो रहे थे और धर्म पर अधर्म का पर्दा पड़ता जा रहा था, उस समय विश्व-इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों व सिद्धांतों की रक्षार्थ शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म हुआ। जिस सिक्ख धर्म के वृक्ष को प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने लगाया था उसी को अन्य गुरु साहिबान ने प्रफुल्लित किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने अत्यंत यातनाएं और कष्ट झेलते हुए, अपनी लासानी शहादत देकर इसे खून से सिंचित किया।

गुरु जी बाल्य-काल से ही सरल, सहज एवं शांति वाले कर्मयोगी थे। सद्भावना, परोपकार एवं धर्म-निरपेक्षता जैसे गुण गुरु जी को विरासत में मिले थे। आप दया, सेवा, सिमरन, निर्भीकता एवं साहस आदि चारित्रिक गुणों के धनी थे। आपने धर्म की संकीर्णता को तोड़ते हुए, वैर-विरोध को मिटाते हुए सांझीवालता का उपदेश दिया। आपने जात-पात का खंडन करते हुए सभी को एक ईश्वर की संतान होने का उपदेश दिया और कहा कि सभी अच्छे हैं, कोई बुरा नहीं है। गुरु जी ने मेहनत, मज़दूरी, श्रम और सच्ची किरत करने का आहवान किया। आपने ऐसे आलौकिक, आध्यात्मिक और आदर्श जीवन की संरचना की जो समस्त कर्मकांडों से मुक्त होकर सच्चाई के मार्ग पर चले।

आपने श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण पवित्र अमृत सरोवर के बीचो-बीच कराया और चारों दिशाओं में चार दरवाजे समस्त जातियों, वर्णों, धर्मों के लिये बिना किसी ऊंच-नीच की भावना के रखवाए ताकि समस्त मानव जाति को भाईचारे, सद्भावना, धर्म-निरपेक्षता और सांझीवालता का उपदेश मिलता रहे। आपने श्री गुरु नानक देव जी के समय से चली आ रही गुरबाणी-कीर्तन की प्रथा को और भी प्रोत्साहित किया। आपने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सबसे पहले श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश किया, जिसके प्रथम ग्रंथी बाबा बुड्ढा जी को नियुक्त किया।

आपने संगत और पंगत के सिद्धांत को और भी दृढ़ करवाया, जहां राजा-रंक, गरीब-अमीर सभी एक पंगत में बैठकर समानता और सहिष्णुता का परिचय देते थे। गुरु जी के कार्यों में जन-चेतना और जन-हित की भावना निहित थी। सामाजिक एवं राष्ट्रीय आदर्शों की दृष्टि से विचार करें तो हम गुरु जी को सदैव अन्याय एवं अधर्म की शक्तियों से जूझते हुए देखते हैं। गुरु जी का समस्त जीवन अनैतिकता एवं अधर्म के विरुद्ध निरंतर संघर्ष का जीवन रहा है। असत्य एवं अंधकार पर सत्य एवं प्रकाश की जीत ही गुरु जी का मूल परमार्थ था। गुरु जी सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए हमेशा संघर्षरत रहे। उन्होंने मानव-सेवा को ईश्वर की सेवा का दर्जा प्रदान किया।

गुरु जी सिक्खी सिद्धांतों एवं आदर्शों को

(शेष पृष्ठ २७ पर)

***५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा-३२४००७ (राजस्थान), मो ९४१३६-५१९१७*

शहीदों के सिरताज : श्री गुरु अरजन देव जी

-स. बलविंदर सिंघ 'बालम'*

श्री गुरु अरजन देव जी का नाम इतिहास में सूर्य की भांति सदैव चमकता रहेगा। उन्होंने अपने नियमों, अनुशासन तथा धर्म के लिए जो शहीदी दी, वह बेमिसाल है। भारत में ही नहीं अपितु सारे विश्व में उनकी शहीदी बेमिसाल है। यातनाएं झेलकर देश-धर्म की खातिर शहीदी देने का ज़िक्र हमेशा-हमेशा श्री गुरु अरजन देव जी के साथ जुड़ा रहेगा। वे सहनशीलता के समंदर, प्रभु की कृपा में रहने वाले, कर्मठ, सांझीवालता के पथ-प्रदर्शक, संतुलित मस्तिष्क वाले एवं इंसानियत के पुजारी थे। वे जुल्म के आगे डट जाने वाले निर्भीक हृदय वाले थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना इंसानी जीवन-मूल्यों को मद्देनज़र रखकर की थी। इस पावन ग्रंथ का कोई भी शबद पढ़ लिया जाये वह इंसानी जीवन-मूल्यों से बाहर नहीं जा सकता।

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १९ वैसाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, १५६३ ई. को श्री गुरु रामदास जी के गृह में माता भानी जी की पावन कोख से गोइंदवाल साहिब में हुआ। शादी के काफी अरसे बाद आपको पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई जो छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के नाम से विख्यात हुए। श्री गुरु अरजन देव जी का बड़ा भाई प्रिथी चंद उनसे दुश्मनी रखता था। वह लालची स्वभाव का था। आदतन वह एक अच्छा इंसान नहीं था। प्रिथी चंद के पिता (श्री गुरु रामदास जी) इसी कारण उसको पसंद नहीं करते थे। लाहौर प्रवास के दौरान श्री गुरु अरजन देव जी के कई पत्र, जो उन्होंने विरह में पिता-गुरु जी को लिखे थे, प्रिथी चंद चुरा लेता था। बाद में उसकी यह चोरी पकड़ी गई जिससे वह शर्मिंदा हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। उनकी मेहनत, मोह, त्याग, निष्काम सेवा, आध्यात्मिक रुचि इत्यादि को देखते हुए उनके पिता जी ने उनको गुरगद्दी की बख़्शिश करने का निर्णय ले लिया। वे सितंबर, १५८१ ई. में गुरगद्दी पर विराजमान हुए। श्री गुरु अरजन देव जी के तीसरे भाई का नाम महादेव था जो वैरागी प्रवृत्ति का था।

श्री गुरु अरजन देव जी कुछ समय श्री अमृतसर में रहकर गांव वडाली चले गये। वहीं श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ था। फिर उन्होंने श्री अमृतसर आकर अमृत-सरोवर को पक्का करवाया, श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया, संतोखसर बनवाया, तरनतारन बसाया तथा वहां के सरोवर की नींव रखी; करतारपुर, छेहरटा और श्री हरिगोबिंदपुर भी बसाया, लाहौर की बाउली का निर्माण करवाया, रामसर तथा गुरु का बाग की नींव रखी। वे निर्माण-कार्यों में काफी दिलचस्पी रखते थे।

श्री गुरु अरजन देव जी की दीर्घ प्राप्ति थी-- श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना। उन्होंने सन् १६०१ से लेकर १६०४ ई. तक रामसर के

*ओंकार नगर, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९८१५६२५४०९

किनारे बैठकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ की हस्तलिखित (पांडुलिपि) तैयार की। इस पावन ग्रंथ में गुरु साहिबान के अलावा धर्म, जात-पात से रहित भक्तों-संतों की बाणी शामिल है। भाई गुरदास जी ने इस पावन ग्रंथ को अपने हाथों से लिखा। इसका प्रकाश १६०४ ई में श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में किया गया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब तैयार करने पर गुरु-घर के कई ईर्ष्यालुयों ने बहुत विरोधता की क्योंकि वे अपनी रचना भी इस पावन ग्रंथ में शामिल करवाना चाहते थे। प्रिथी चंद ने इस विरोधता को और भड़काया। कान्हा, छज्जू, पीलू एवं शाह हुसैन जैसे कवियों का कलाम शामिल नहीं किया गया। इन कवियों ने ईर्ष्या करके तत्कालीन सत्ताधारी हकूमत के बादशाह जहांगीर तक गलत बातें पहुंचाने में कोई कसर न छोड़ी। जहांगीर ने इस पावन ग्रंथ के कई पन्ने पढ़ाकर देखे परंतु उसको कहीं भी इस्लाम धर्म के विरुद्ध कोई बात न मिली। दूसरी तरफ सबसे ज्यादा कट्टर मुसलमान वज़ीर थे शेख अहमद सरहंदी तथा शेख फरीद बुखारी। इन दोनों ने इस पावन ग्रंथ की सबसे ज्यादा विरोधता की।

चंदू शाह लाहौर में सूबे का दीवान था। चंदू ने अपनी बेटी की शादी गुरु जी के बेटे (श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब) के साथ करनी चाही और साथ में अहंकार भरे स्वर में चंदू ने यह भी कह दिया कि "कहां मैं और कहां गुरु जी ?" 'मोरी की ईंट चौबारे में' जैसे प्रतीकों का प्रयोग किया। संगत ने चंदू की विरोधता की। संगत के कहने पर गुरु जी ने इस शादी के लिए न कह दी। चंदू का क्रोध सातवें आसमान को छू गया। उसके सीने में बदले की चिंगारी सुलगने लगी। चंदू शाह, शेख अहमद सरहंदी तथा शेख फरीद बुखारी ने कई किस्म की साज़िशें श्री गुरु अरजन देव जी के विरुद्ध शुरू कर दीं। एक झूठी कहानी बनाकर जहांगीर तक पहुंचा दी गई कि बागी खुसरो को गुरु जी ने पनाह दी है, उसकी मदद की है, उसका अभिनंदन किया है। जहांगीर ने गुरु जी को दो लाख रुपये जुर्माना कर दिया। जुर्माना अदा न करने पर आपको गिरफ्तार कर लिया गया। तीन रातें तथा तीन दिन अत्यंत कष्ट दिए गए। जून माह की कड़कती धूप में लोहे की गर्म तवी पर गुरु जी को बिठाया गया, जिसके नीचे आग की लपटें थीं। ऊपर से गर्म रेत की बौछार की गई। इस पर भी गुरु जी घबराए नहीं। साईं मीयां मीर जी जैसे धार्मिक दरबारी नेता सिक्खी के दायरे में आ चुके थे। उन्होंने लाहौर की ईंट से ईंट बजाने को कहा। यातनाओं से भरपूर दृश्य देखने वालों के हृदय कांप उठे।

१ आषाढ़, संवत् १६६३ तद्नुसार ३० मई, १६०६ ई को जहांगीर के हुक्म से रावी दरिया के छोर पर ले जाकर गुरु जी को शहीद कर दिया गया। आप जी की याद में अब वहां गुरुद्वारा डेहरा साहिब बना हुआ है। कुछ समय बाद बेशक जहांगीर माफी मांगने माता गंगा जी (सुपत्नी श्री गुरु अरजन देव जी) के पास आया तथा चंदू जैसे साज़िशी को उनके सुपुर्द भी किया परंतु माता गंगा जी ने सब प्रभु के भरोसे पर छोड़ दिया। जहांगीर ने कुछ मोहरें भी चढ़ाईं जिन्हें संगत में बांट दिया गया। गुरु जी की बाणी की निम्न पंक्तियां मानवता के द्वार खोलती हुई प्रस्तुत हैं :

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ (पन्ना ८८५)

❁

भक्त कबीर जी की बाणी में सामाजिक चेतना

-डॉ. अमृत कौर*

डॉ. शुकदेव के शब्दों में 'कबीर' मनुष्य के दमन और अपमान के विरुद्ध एक आक्रामक शब्द है। शक्ति और सत्य के बल पर जब कोई स्वर, विद्रोह और निर्भय आवाज़ कार्यशील होती है, वह 'कबीर' शब्द के अंदर होती है। 'कबीर' अन्याय के प्रति, वाह्याडंबरों के प्रति विरोध और सत्य का प्रतीक है। प्रत्येक क्रांतिकारी और विद्रोही व्यक्ति 'कबीर' के आइने में अपना अक्स देखता है। 'कबीर' एक ऐसा गीत है, ऐसा शस्त्र है, जो सांप्रदायिक भेदभाव और अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह के साथ दृढ़ता से जुड़ चुका है। वह मानवीय विजय-पताका का झंडा है। ऐसे परम मनुष्य का संदेश कभी पुराना नहीं होता। वह सार्वभौमिक और सर्वकालीन युगदृष्टा बन मनुष्य की कल्पना को सदैव आंदोलित करता रहता है। (कबीर बीजक का शास्त्रीय अध्ययन, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ १)

भक्त कबीर जी सामाजिक चेतना, सांप्रदायिक एकता और सद्भावना के प्रतीक हैं। राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए, प्रेम और सद्भावना का संदेश देने के लिए, नफ़रत की आग बुझाने के लिए, मुहब्बत का पाठ पढ़ाने के लिए वे निरंतर प्रयास करते रहे। भक्त कबीर जी साधारण जनता के मसीहा थे। उन्होंने आम लोगों की भाषा में लिखकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-- आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, साहित्यिक में साधारण जनता का मार्गदर्शन किया। उनकी यह अद्वितीय प्रतिभा उन्हें सामाजिक चेतना का अग्रदूत बनाती है। वे सामाजिक समस्याओं को समझाकर उनके समाधान के लिए आयु-पर्यंत संघर्ष करते रहे। भक्त कबीर जी समाज के राज्य-अभिमानी वर्ग के विरुद्ध सदैव 'गगन दमामा' बजाकर रखते थे। वे निरंतर दीन के हितों की रक्षा करने के लिए योद्धा बनकर जूझते रहे। पुरजा-पुरजा कट मरना परंतु जीवन रूपी रण-क्षेत्र में कभी पीठ नहीं दिखानी। सच्चाई के लिए, सदैव सिर धड़ की बाज़ी लगा देने के लिए भक्त कबीर जी प्रेरणा देते हैं। जब कभी धर्म-युद्ध का दमामा बजता है, रण-क्षेत्र में लड़ने के लिए भक्त कबीर जी का चुनौती देने वाला यह शबद सहज ही मानव-स्मृति का अंग बन जाता है :

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

भक्त कबीर जी की इन पंक्तियों के स्वर पर मार्च-पास्ट करती हुई गुरु की लाड़ली फौज देश और धर्म की रक्षा के लिए, स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए, युद्ध-क्षेत्र में प्राणों को न्यौछावर करने लिए तत्पर हो जाती है। यह शबद रणभेरी का काम करता हुआ, लहू को गर्माता हुआ, जान हथेली पर रखकर पुरजा-पुरजा कट मरने के लिए, प्राणों की आहुति देने के लिए

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), मो. :९८१५१-०९९५७

प्रोत्साहित करता है।

भक्त कबीर जी मानवीय एकता, समानता, भातृत्व-भाव का संदेश देते हैं; ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाकर निम्न वर्ग में आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना पैदा करते हैं कि एक ही मूल से सभी बने हैं। ज़रा आंखों से माया का परदा उठाकर देखें, घट-घट में वह साईं रमता नज़र आएगा और हम वैर-विरोध भूलकर एक-दूसरे के प्रति अपमानजनक व कटु शब्द बोलना छोड़ देंगे। भक्त कबीर जी का यह शबद गुरमति दर्शन का मूल आधार बन गया है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ (पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी को अपने व्यवसाय से प्रेम था। वे अपनी तथाकथित निम्न जाति का सम्मान किया करते थे :

कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥ (पन्ना १३६४)

भक्त कबीर जी जात-पात को नहीं मानते थे। उनका कहना था कि परमेश्वर के नाम-सिमरन का चाव सब जाति-अभिमानों से श्रेष्ठ है :

कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ (पन्ना १३६८)

उन्होंने इन शब्दों द्वारा साधारण जनता में समानता का भाव आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना को जागृत किया :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥ (पन्ना ३२४)

सभी खुदा के बंदे हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं। भगवान प्यार और भक्ति के भूखे हैं :

राजन कउनु तुमारै आवै ॥
ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥ . . .
कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥ (पन्ना ११०५)

भक्त कबीर जी धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ प्रेम का पाठ पढ़ने के लिए भी कहते हैं। उनका एक दोहा लोक-प्रचलित है :

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोइ।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होइ।

भक्त कबीर जी धार्मिक कर्मकाडों, दिखावों, आडंबरों के विरुद्ध थे। वे विद्रोह का झंडा उठाए तीखी भाषा में वाह्य आडंबरों पर प्रहार करते हैं। भक्त कबीर जी सच्ची भाषा बोलते हैं और सच हमेशा कड़वा होता है :

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥१॥
अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि मिहरामति साई ॥१॥रहाउ॥
दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥
दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥२॥
ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥
गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥३॥
कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरु नांएं ॥
दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जांएं ॥ (पन्ना १३४९)

लोग परमात्मा की वास्तविकता से कोसों दूर हैं। यदि हम माला हाथ में लिए फेर रहे

हैं और मन दसों दिशाओं में भटक रहा है तो ऐसे सिमरन का कोई लाभ नहीं। भक्त कबीर जी मानव को उदाहरण देकर सच्चे मन से भक्ति करने के लिए कहते हैं :

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ (पन्ना ३३७)

धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और ज्ञान एकत्रित करने पर केवल किसी एक वर्ग विशेष का ही एकाधिकार नहीं है, इस पर सर्वसाधारण का अधिकार है। भक्त कबीर जी कहते हैं :

तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥
तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥ (पन्ना ४८२)

मैं (तथाकथित निम्न वर्ग का) जुलाहा ही सही पर मैं तुम से कदापि पीछे नहीं हूं। तुम्हें अपने ज्ञान पर अभिमान है, जबकि मैं अपने प्रभु को सच्चे मन से प्यार करता हूं :

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥
(पन्ना १३६७)

हिंदू और मुसलमानों के पारस्परिक वैर-विरोध तथा कट्टरता के विरुद्ध भक्त कबीर जी ने मानवीय एकता का संदेश देकर दोनों धर्मों में सद्भावना पैदा करने का प्रशंसनीय कार्य किया। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी उन्हें मानव एकता का अग्रदूत मानते हुए लिखते हैं कि "भक्त कबीर जी एक ऐसे दोराहे पर खड़े थे जहां एक ओर से हिंदुत्व निकल आता था और दूसरी ओर से मुसलमानत्व। वे मानवीय एकता की दिव्य रोशनी बनकर चमके।"

भक्त कबीर जी ने अपना संदेश घर-घर तक पहुंचाने के लिए लोक-भाषा को अपनी बाणी का माध्यम बनाया। संस्कृत में लिखे होने के कारण धार्मिक ग्रंथ साधारण जनता की समझ से बाहर थे और ब्राह्मणों की बपौती बन गए थे। इन धार्मिक ग्रंथों पर उनका एकाधिकार था। इस बहते नीर वाली साधारण भाषा में बाणी-उच्चारण के द्वारा वे सर्वसाधारण को जागृत और शिक्षित करने में सफल हुए। लोक-भाषा में रची होने के कारण उनकी बाणी लोगों की जुबान पर चढ़ी हुई है; शाश्वत मूल्यों पर आधारित होने के कारण सदाबहार है।

भक्त कबीर जी की बाणी का सामाजिक निर्माण व उत्थान में विशेष योगदान है। वे साधारण जनता को धार्मिक आडंबरों और कर्मकांडों में उलझने की अपेक्षा जीवन को ऊंचा बनाने के सरल नियम बताते हैं :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५)

भक्त कबीर जी की ये पंक्तियां परिश्रम के द्वारा आजीविका कमाने के सिद्धांत को दर्शाती हैं। भक्त कबीर जी सम्पूर्ण आयु कड़े परिश्रम द्वारा जीविका-अर्जन करते रहे। भक्त कबीर जी कर्मयोगी थे। उन्होंने सर्वसाधारण को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाकर गर्व से सिर ऊंचा उठाकर जीना सिखाया। वे नाम जपते हुए काम करने का संदेश देते हैं। लाखों-करोड़ों इकट्ठा करने की उनकी तृष्णा नहीं है, मगर दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर सबका अधिकार है :

दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥ मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥ (पन्ना ६५६)

सदाचारक-नैतिक रूप से सुदृढ़ जीवन सामाजिक निर्माण की आधारशिला है। इसके लिए भक्त कबीर जी जीवन में सद्गुणों को धारण करने पर बल देते हैं; काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार दुर्गुणों को त्यागने को कहते हैं :

--परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥
परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥ *(पन्ना ३२४)*
--कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥
(पन्ना १३७२)

भक्त कबीर जी द्वारा लोक-भाषा में लिखे ऐसे अनगिनत दोहे आज भी साधारण जनता का पथ-प्रदर्शन करते हैं। जीवन में शुभ गुणों के विकास के लिए भक्त कबीर जी साधसंगत करने पर बल देते थे।

पारस के स्पर्श से लोहा जैसे सोना बन जाता है, ऐसे ही महान पुरुषों की संगत से आम व्यक्ति में भी सद्‌गुणों का विकास हो जाता है :
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥
(पन्ना १३६५)

भक्त कबीर जी तामसिक भोजन और मादक पदार्थों के सेवन के विरुद्ध थे :
कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ॥
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि ॥
(पन्ना १३७७)

विजय सच्चाई और नेकी की होती है, ऐसा भक्त कबीर जी का विश्वास है। रावण प्रसिद्ध राजा था परंतु अनैतिक जीवन के कारण उसका कितना भयानक अंत हुआ, यह सर्वविदित है :
इक लखु पूत सवा लखु नाती ॥
तिह रावन घर दीआ न बाती ॥ *(पन्ना ४८१)*

प्रभु को तो मन की शुद्धता और पवित्रता के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है :
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ *(पन्ना ३२४)*

दिव्य अमर शहीद श्री गुरु अरजन देव जी

(पृष्ठ २१ का शेष)

बहुत अधिक महत्त्व देते थे। गुरु जी की सच्चाई, आदर्शों की दृढ़ता, लोकप्रियता और धर्म-निरपेक्षता की लहर से भयभीत होकर उस समय की मुगल हकूमत के क्रुद्ध बादशाह जहांगीर ने गुरु जी पर अत्यंत अत्याचार कराये इसके लिए ज्येष्ठ-आषाढ़ माह की आग बरसाने वाली गर्मी के दिनों को चुना गया। यातनाओं की शृंखला में पहले श्री गुरु अरजन देव जी को खौलते हुए पानी में बिठाया गया। यहीं बस नहीं हुई, गुरु जी को लाल-सुर्ख गर्म लोह पर बैठाकर और नीचे आग जलाकर उनके पूरे शरीर पर गर्म रेता डाली गई। गुरु जी विचलित हुए बिना अडोल रहे। उन्होंने प्रभु-भक्ति में लीन रहकर *"तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥"* को वास्तविक रूप से दृढ़ करवाया। गुरु जी की दृष्टि विश्वव्यापी, समानतावादी और समस्त का भला चाहने वाली थी। आखिरकार मुगल बादशाह जहांगीर द्वारा दी गई यातनाओं के फलस्वरूप गुरु जी शहादत प्राप्त कर परमात्मा की ज्योति में हमेशा के लिए लीन हो गये।

लाहौर (पाकिस्तान) में रावी नदी के तट पर गुरु जी की अमर याद में आलीशान गुरुद्वारा डेहरा साहिब बना हुआ है, जो सिक्खी आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा के लिए और मानवीय धर्म एवं वैचारिक स्वतंत्रता के लिए, गुरु जी के महान बलिदान को बारंबार स्मरण कराता है।

भक्त कबीर जी की बाणी में वाह्याडंबरों का विरोध

-डॉ. मधु बाला*

महान पुरुषों का अवतरण साधारण प्राणियों के मार्गदर्शन हेतु ही होता है। मार्गदर्शन के दो तरीके हैं-- पहला, स्वयं उस मार्ग का पालन करना तथा दूसरा, समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना। *"एकै साधै सब सधै"* उक्ति के अनुसार भक्त कबीर जी ने समाज-सुधारक का पद ग्रहण किया। भले ही समाज को सुचारू रूप देने में पूर्ववर्ती महात्मा-संत-सज्जन पुरुषों ने भी प्रयास किया परंतु उनको भक्त कबीर जी जितनी सफलता न मिल सकी। भक्त कबीर जी ने 'मैं' का त्याग करके 'एकत्व' का प्रचार किया। भक्त कबीर जी के समय में समाज-संचालकों की 'कथनी' और 'करनी' में समानता न रही थी। वर्ण-व्यवस्था पूर्णत: जन्म के आधार पर मानी जाती थी। हिंदू समाज का पतन अपने ही बनाए हुए खोखले एवं आडंबरपूर्ण व्यवहार के कारण हो रहा था। शास्त्रों के जाल-जंजाल से निकलकर सहज तक पहुंच पाने की क्षमता उसमें विद्यमान नहीं थी। हिंदू समाज की दो बड़ी कमजोरियां थीं-- अपनी कुल का अभिमान और वाह्याचार। भक्त कबीर जी ने प्रभु-नाम को ही सबका सार माना। अन्य सभी आचरण बंधन में बांधते हैं जबकि प्रभु-नाम बंधनों से मुक्ति दिलाने वाला है। गुणों पर अभिमान करने से किसी का भला नहीं होता। परमात्मा अभिमान नहीं सहन कर सकता; निष्काम कर्म से ही मुक्ति मिलती है। बाहरी ज्ञान के साथ-साथ आवश्यक है कि भीतरी ज्ञान से परमात्मा के हृदय-निवास को अनुभव किया जाए :

किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥
किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥
पड़े सुने किआ होई ॥
जउ सहज न मिलिओ सोई ॥१॥ . . .
अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥
इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥
बसतु अगोचर पाई ॥
घटि दीपकु रहिआ समाई ॥२॥ . . .
ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥
झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥ . . .
लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥
कउरापनु तऊ न जाई ॥ *(पन्ना ६५५)*

आधुनिक काल में जिन विषयों पर विचार-विमर्श करके हम स्वयं के आधुनिक होने का दंभ भरते हैं उन विषयों के संबंध में भक्त कबीर जी ने स्पष्ट शब्दों में अत्यंत निडरता एवं निर्भीकतापूर्वक अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने धर्म सम्बंधी, आचरण सम्बंधी, संप्रदाय सम्बंधी सभी कृत्रिम एवं आडंबरपूर्ण आचरण का खुलकर एवं डटकर विरोध किया। भले ही उनकी बाणी में कठोरता के भाव हैं, परंतु उनका मंतव्य सदा निर्मल, कोमल एवं सहज ही रहा। प्रमुख परमात्मा का नाम-सिमरन ही है, सांसारिक भोग पदार्थ एवं दिखावा नहीं। कर्मकांड से परमात्मा कोसों दूर है। 'संसार' और 'सार' में ज़मीन-आसमान का अंतर है। 'सार' का ध्यान मुक्ति दिलाता है तथा 'संसार' का ध्यान बंधन का कारण है।

वर्ण-व्यवस्था के मुताबिक तथाकथित ब्राह्मणों को उच्च दर्जा प्राप्त था। तथाकथित शूद्र वर्ग इस कर्मकांडी वर्ग के छल का शिकार था। भक्त

*आई-१०९, गली नं: ५, मजीठीआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन ९९१४१-९०७२४

कबीर जी ने स्पष्ट शब्दों में फरमान किया है :
गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥ . . .
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥ (पन्ना ३२४)

मूर्ति-पूजा का खंडन उन्होंने डटकर किया :
बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥
(पन्ना ६५४)

बाहरी आडंबर मुक्ति का साधन नहीं हैं। मनुष्य के लिए उचित है कि वह मन के विकारों का त्याग करे, विषयों से दूर रहे। वन में निवास करने से नहीं अपितु घर-गृहस्थी में रहकर ही परमात्मा का स्पर्श मिलता है। बात तो मन पर काबू पाने की है, विकारों को त्यागने की है :
--ग्रिहु तजि बन खंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥
अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥
(पन्ना ८५५)
--जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥
मनु जीते जगु जीतिआ जां ते बिखिआ ते होइ उदासु ॥ (पन्ना ११०३)

तत्कालीन समाज में हिंदू-मुस्लिम दोनों में ही अपने-अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने की होड़ लगी थी। भक्त कबीर जी ने दोनों ही धर्मों की कुप्रवृत्तियों का खुलकर विरोध किया। उन्होंने दोनों की संकीर्ण सोच का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है :
अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥
(पन्ना १३४९)

तीर्थ-स्नान करने के महात्म के भ्रम को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया :
नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥
कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥ (पन्ना ३३६)

भक्त कबीर जी ने सभी धर्मों की कुरीतियों को दर्शाकर केवल मानवता के आधार पर जीवन-यापन का संदेश दिया है। अपने-पराए के भेदभाव से ऊपर उठकर ही मनुष्य अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

समाज में फैले हुए मिथ्याचारों, आडंबरों, रूढ़ियों, भेदभावों एवं सामाजिक कुरीतियों का ओजमयी बाणी में खंडन करने वाले भक्त कबीर जी युग-चेत्ता के रूप में जाने जाते हैं। उनकी बाणी मानव-मन को झकझोरने वाली है :
अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥
(पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी की बाणी में ऐसा सत्य है कि मनुष्य उस विषय को सोचने को मज़बूर हो जाता है। महाकवि मिल्टन ने श्रेष्ठ काव्य विधा के तीन गुण माने हैं-- सादगी, असलियत और जोश। ये तीनों गुण भक्त कबीर जी की बाणी में मिलते हैं। साधारण-जन के लिए भी सुगमता से बोधगम्य इनके उपदेश समाज को चेतना प्रदान करने वाले सिद्ध होते हैं। छोटे-छोटे दायरों में सीमित समाज को भक्त कबीर जी ने विशाल एवं विस्तृत भूमि प्रदान की। उन्होंने समाज में फैली बुराइयों को दूर करके व्यवस्थित समाज की नींव हेतु प्रयास किया। त्रिगुणायत जी के शब्दों में, "उन्होंने देश, धर्म, समाज, दर्शन, साधना, सभी क्षेत्रों में क्रांति की जो धारा बहाई, उससे निश्चय ही उन क्षेत्रों के कालुष्य बह गए थे।"

सामाजिक चेतना के पुरोधा : भक्त कबीर जी

*-डॉ. दादूराम शर्मा**

जब शक्ति और सत्ता के मद में चूर मुगल इसलाम के नाम पर धर्म का भयावह और विकृत रूप प्रस्तुत कर रहे थे और विजित हिंदू समाज जन्मगत और जातिगत श्रेष्ठता के मिथ्या अहंकार में चूर होकर अपने ही समाज के निम्न वर्ग के लोगों को अछूत कहकर ठुकरा रहा था, प्रताड़ित कर रहा था, धर्म के नाम पर कर्मकांड का, आडंबरों और मिथ्याचारों का बोलबाला था, तभी समग्र समाज को यथार्थ दृष्टि और सही दिशा देने वाले परम निर्भीक संत भक्त कबीर जी का प्रादुर्भाव हुआ।

भक्त कबीर जी का तत्व-ज्ञान दीर्घकालीन सतसंग और व्यक्तिगत साधना का सहज प्रतिफलन है। उनकी दृष्टि में धर्म वाणी का, वाग्विलास का नहीं, आचरण का विषय है। परमात्मा का साक्षात्कार करके ही मुक्ति मिल सकती है। भक्त कबीर जी के अनुसार सतसंग से प्राप्त ज्ञान को पहले आचरण और व्यवहार की कसौटी पर कसा जाये, फिर औरों से कहा जाये। 'जैसी कथनी वैसी करनी' या 'जैसी करनी वैसी कथनी' ही उनका अभिमत था।

हमारे देश में जितनी भी क्रांतियां हुईं, युगांतरकारी परिवर्तन हुए, इन सबके मूल में धर्म ही रहा है और इस धर्म के संशोधक, प्रवर्त्तक, संचालक और उपदेशक रहे हैं-- महापुरुष, गुरु और भक्त। उन्होंने सदैव हमारे समाज को रूढ़ियों, अंधविश्वासों, धर्माडंबरों और थोथे कर्मकांडों से मुक्त करके उसे नवचेतना और नवीन जीवन-दृष्टि देकर प्रगति-पथ पर आगे बढ़ाया है; भेदभाव की जड़ें काटकर लोगों को भाईचारे के बंधन में बांधा है। श्री गुरु नानक देव जी और भक्त कबीर जी ऐसे ही युगपुरुष हुए हैं।

सामाजिक चेतना के पुरोधा भक्त कबीर जी के व्यक्तित्व के निम्नांकित बिंदु द्रष्टव्य हैं :-

१. श्रमजीवी साधु : भक्त कबीर जी भिक्षा मांगकर जीवन निर्वाह करने वाले नहीं थे। वे कपड़ा बुनकर अपनी जीविका चलाते थे। उन्होंने जहां-तहां अपने को 'जुलाहा' कहकर अपने व्यवसाय का स्वाभिमान के साथ उल्लेख किया है।

२. गृहस्थी संत : भक्त कबीर जी घर-बार छोड़कर सन्यासी नहीं हुए अपितु आजीवन अपनी पत्नी, अपने परिवार के साथ रहे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व के पारस स्पर्श से अपने परिवार को भी भक्ति-रंग में रंग दिया। जिसे प्रभु-नाम रूपी चिंतामणि मिल गई हो वह संसार की तुच्छ, नश्वर वस्तुओं का संग्रह नहीं किया करता।

३. महान् समाज-सुधारक : तत्कालीन समाज में जातिगत एवं वर्गगत भेदभाव अपनी चरम सीमा पर था; छुआछूत महामारी की तरह फैल रही था। उन्होंने अपने उपदेशों की कभी कड़वी तो कभी मीठी दवा पिलाकर समाज को स्वस्थ करने का स्तुत्य प्रयास किया। अपनी बाणी में उन्होंने धन, यौवन आदि की नश्वरता और कुलाभिमान आदि की असारता बता-बताकर हमें निरंतर सावधान किया है। धर्मांधता के मतवाले हाथी को उन्होंने अपनी

**महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१; मो. ८८७८९८०४६७*

संत-वाणी के अंकुश से नियमित किया था।

४. ऊंच-नीच का भेद और अस्पृश्यता पर करारी चोट : सभी मनुष्य जब एक ही परमात्मा द्वारा बनाए गये हैं तब उनमें जातिगत, वर्णगत या वर्गगत भेदभाव कैसा? ये भेदभाव तो मानव-निर्मित हैं। उनकी दृष्टि में सर्वोत्तम वही है, वही पवित्र है, जिसके मुख में प्रभु का नाम हो :

कबीर सुोई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥
देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥
(पन्ना १३७०)

भक्त कबीर जी द्वारा छुआछूत के विरुद्ध चलाए गए देशव्यापी प्रबल धार्मिक आंदोलन का ही परिणाम था कि तथाकथित स्वर्ण समाज तथा निम्न वर्ग के मध्य की दूरी कम हो सकी थी।

५. सर्वधर्म समभाव अथवा सांप्रदायिक एकता के प्रथम पुरोधा : भक्त कबीर जी अस्पृश्यता-निवारक ही नहीं, सांप्रदायिक एकता के आंदोलन के भी प्रथम पुरोधा थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी की बाणी को सम्मिलित करके स्मरणीय सिक्ख गुरु साहिबान ने उनके प्रति अपनी अशेष श्रद्धा प्रकट की है।

भक्त कबीर जी के अनुसार परमात्मा एक ही है। उसके नाम अनेक हैं किंतु उनमें तत्त्वत: कोई भेद नहीं है। उस सर्वव्यापक, विराट परमात्मा को किसी धर्म-स्थान के संकीर्ण घेरे में सीमित नहीं किया जा सकता। धर्म के आधार पर मानव-मानव में भेद करना अनुचित है क्योंकि सभी का सृष्टा परमात्मा ही है और सबके भीतर आत्मा के रूप में उसी की ज्योति है। धर्म के नाम पर अत्यधिक कट्टर और धर्मोन्मादी लोगों को फटकरने वाले और उन्हें धर्म का सच्चा मर्म समझाने वाले भक्त कबीर जी का विश्व में स्थान अद्वितीय है :

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥
(पन्ना १३७२)

६. भक्त कबीर जी की विनम्रता : पाखंडियों पर वज्र बनकर टूटने वाले परम आस्तिक भक्त कबीर जी की विनम्रता तो देखते ही बनती है :

—कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥
(पन्ना १३६४)

--कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥
गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥
(पन्ना १३६८)

--कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥
(पन्ना १३७५)

७. भक्त कबीर जी के 'राम' : भक्त कबीर जी के 'राम' दशरथ पुत्र नहीं निर्गुण-निराकार ब्रह्म हैं, प्रभु हैं, इसलिए वे अवतारवाद को भी स्वीकार नहीं करते। वे निर्गुण प्रभु-राम को ही जपने का उपदेश देते हैं। प्रभु कभी उन्हें संरक्षक पिता के रूप में दिखाई देते हैं, कभी अत्यंत क्षमाशील तो कभी ममतामयी माता बन जाते हैं। कभी वे स्वयं को उस गुलाम के रूप में देखते हैं जिसके सब कुछ पर मालिक (परमात्मा) का एकाधिकार होता है।

भक्त कबीर जी ने समाज को चिंतन-मनन की स्वस्थ दृष्टि दी, छुआछूत को चुनौती दी और सांप्रदायिक विद्वेष को मिटाकर भाईचारा स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया। भक्त कबीर जी की बाणी स्वस्थ-विवेकशील जीवन की कुंजी है; आदर्श समाज की आधारशिला है। सामाजिक चेतना जगाने वाले भक्त कबीर जी की सशक्त बाणी कालजयी और अमर है।

प्रथम खालसा राज्य के संस्थापक : बाबा बंदा सिंघ बहादर

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

बाबा बंदा सिंघ बहादर का सिक्ख धर्म में प्रवेश एक अद्भुत क्रांति को साथ लाया। बाबा जी ने सिक्ख-संगठन को एक ऐसी प्रचंड राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित कर दिया जिसने उत्तर-पश्चिमी भारत पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में सन् १७०९ से लेकर १७१६ ई तक सिक्खों ने पंजाब में जो विजय अभियान चलाया उसने पंजाब की मुगल सत्ता को बुरी तरह से हिलाकर रख दिया। भारत में मुगल साम्राज्य का पतन बाबा बंदा सिंघ बहादर के ही हाथों होना शुरू हुआ। बाबा जी ने सिक्खों और गुरु-परिवार को कष्ट पहुंचाने के जिम्मेदार मुगल शासकों, सामंतों आदि को जमकर रौंदा। उनके भीषण प्रहार ने मुगलों में त्राहि-त्राहि मचा दी। मुगल उनसे इतने भयभीत और परेशान थे कि उन्होंने बाबा जी के विषय में बड़ी घृणा प्रकट की है। बाबा जी के समकालीन प्रसिद्ध सूफी बुल्ले शाह सिक्खों की बढ़ रही शक्ति से दुखी होकर कहता है :

दर खुल्ला हशर अज़ाब दा।
बुरा हाल होइआ पंजाब दा।. . .
मुगलां ज़हिर पिआले पीते।
भूरिआं वाले राजे कीते।

यहां 'भूरिआं वाले' का अर्थ सिक्ख है। मुगलों की बाबा जी के प्रति इतनी संकीर्ण सोच बाबा जी के भीषण युद्ध-कौशल एवं उनकी मैदान-ए-जंग में हासिल महान् सफलताओं का प्रतीक है।

बाबा बंदा सिंघ बहादर का जीवन : बाबा बंदा सिंघ बहादर का जन्म १६ अक्तूबर, १६७० ई को कश्मीर के पुंछ ज़िले में, राजौरी क्षेत्र में हुआ। आपके पिता एक राजपूत किसान थे, जिनका नाम श्री रामदेव था। पिता ने बालक का नाम लछमण दास रखा। एक किवदंती के अनुसार, एक बार लछमण दास से एक गर्भवती हिरनी का शिकार हो गया जो अपने बच्चों सहित उनके सामने तड़प-तड़प कर मर गई। दुखी और विचलित हृदय लछमण दास ने वैराग्य ले लिया और माधो दास बन गये। बाद में माधो दास ने महाराष्ट्र के नांदेड़ नामक स्थान पर अपना मठ स्थापित कर लिया।

कहा जाता है कि वह वहां आने वाले लोगों को अपनी मंत्र-शक्ति से भ्रमित और भयभीत कर दिया करता था। सितंबर, १७०८ ई में जब दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी वहां पहुंचे तो माधो दास ने उन्हें भी मंत्र आदि से परेशान करने का प्रयास किया परंतु गुरु जी की शक्ति और व्यक्तित्व से अभिभूत होकर माधो दास विनम्र होकर गुरु जी के चरणों में बैठ गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने माधो दास को अमृत छकाकर 'बंदा सिंघ' बना दिया और मुगलों के साथ संघर्ष जारी करने के लिए पंजाब भेजा। गुरु जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को एक नगाड़ा, ध्वज और पांच तीर प्रदान किये। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार गुरु जी ने भाई विनोद सिंघ, भाई बाज सिंघ, भाई काह्न सिंघ, भाई बिजै सिंघ एवं भाई राम सिंघ (पांच सिंघों) सहित २० अन्य सिंघों को भी बाबा बंदा सिंघ बहादर के

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

साथ कर दिया। गुरु जी ने बाबा जी को कुछ हुकमनामे भी दिये जो उन्होंने सिक्ख संगत के नाम बाबा बंदा सिंघ बहादर की सहायता करने के आदेश के तौर पर लिखे थे।

गुरु-आज्ञा से पंजाब को कूच : दिल्ली पहुंचकर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने हुकमनामे सिक्ख संगत को भेज दिये। वज़ीर खां और पहाड़ी राजाओं के द्वारा सिक्खों पर किये अत्याचारों का बदला लेने का संदेश मिलते ही हर दिशा से सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादर के झंडे तले एकत्र होने लगे। जल्दी ही बाबा जी की फौज की गिनती ४०,००० तक पहुंच गई। बाबा जी की फौज की विशेषता यह थी कि इसमें सिर्फ सिक्ख ही नहीं थे, बल्कि हिंदू, मुसलमान, राजपूत, जाट और अनेक तथाकथित दलित वर्गों के लोग भी थे जो मुगलों के अमानवीय अत्याचारों से त्रस्त होकर ज़ालिमों को समाप्त करने के लिए लामबंद हुए थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादर की विजय : बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिंघों की फौज लेकर कूच किया। सेना पहले समाणा नामक स्थान पर पहुंची। यह वो स्थान था जहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का निवास था। धर्मी सेना ने २४ घंटे के अंदर-अंदर समाणा पर कब्जा कर लिया। इसके बाद बाबा बंदा सिंघ बहादर आगे बढ़े और शाहबाद, डसका, मुस्तफाबाद आदि शहरों पर खालसे का निशान साहिब झुला दिया। इसके बाद खालसा फौज कपूरी के कसबे की ओर बढ़ी। इस कसबे का हाकिम कदामुद्दीन सिक्खों के खिलाफ लूटमार करने के लिए अक्सर सैनिकों के झुंड भेजा करता था। बाबा जी ने कदामुद्दीन को उसके किये की भयानक सज़ा दी और सढौरा की ओर चल दिये। सढौरा हिंदुओं पर जुल्म ढाने के बदनाम केंद्र के रूप में मशहूर था। यहां का शासक असमान खां था जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रिय पीर बुद्धू शाह का हत्यारा था। असमान खां को उसकी करनी का फल चखाया। अब तक मालवा और माझा क्षेत्र से अनेक सिक्ख जत्थे बाबा जी के साथ आ मिले थे।

इसके पश्चात् खालसा फौज सरहिंद फ़तहि करने के लिए निकल पड़ी। सरहिंद वह स्थान था जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे मासूम साहिबजादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को ज़ालिम सूबेदार वज़ीर खां ने ज़िंदा दीवार में चिनवा दिया था। वज़ीर खां को सबक सिखाने की इच्छा हर सिक्ख के मन में थी। वज़ीर खां के लश्कर और शहादत की दीवानी खालसा फौज का आमना-सामना चप्पड़चिड़ी नामक स्थान, जो सरहिंद शहर से १० मील की दूरी पर है, पर हुआ। कुछ ही घंटों के युद्ध के बाद वज़ीर खां मारा गया सरहिंद पूरी तरह खालसा के कब्ज़े में आ गया। गुरु-परिवार के द्रोही सुच्चा नंद, जिसकी साहिबज़ादों को शहीद करवाने में विशेष भूमिका थी, की हवेली को मलबे का ढेर बना दिया गया।

खालसा राज्य की स्थापना : बाबा बंदा सिंघ बहादर साथ-साथ अपने जीते हुए इलाकों में राज्य-प्रबंध की व्यवस्था भी करते चल रहे थे। उन्होंने भाई फ़तहि सिंघ को समाणा का, भाई राम सिंघ को थानेसर का और भाई बाज सिंघ को सरहिंद का सूबेदार नियुक्त कर दिया। सरहिंद के बाद बाबा जी ने रामराईयों को शोधते हुए मलेरकोटला और रायकोट शहरों पर भी कब्ज़ा कर लिया। इसी बीच बाबा जी ने देवबंद के फौजदार को भी सिक्ख विरोधी गतिविधियों के कारण दंडित किया।

बाबा जी फिर पश्चिम की ओर बढ़े। जलालाबाद, जलंधर, रिआड़की आदि शहरों को

जीतते हुए लाहौर के समीप तक जा पहुंचे। अब लगभग सारे पूर्वी पंजाब में सिक्खों का राज्य स्थापित हो चुका था। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सरहिंद के पूर्व में स्थित लोहगढ़ किले को अपनी राजधानी बनाया। किले की पूरी फौजी तैयारी की गई। यहीं पर बाबा जी ने पहले-पहल खालसा राज्य की नींव रखी। वे रोज़ दरबार लगाते और जनता की दुख-तकलीफें दूर करते। बाबा जी की पंजाब को सबसे बड़ी देन जागीरदारी-प्रथा का उन्मूलन था। उस समय अधिकांश जागीरदार मुसलमान थे जो लगान इकट्ठा करने के बहाने आम जनता पर बे-तरह जुल्म करते थे। बाबा जी ने जीते गये इलाकों में भूमि जोतने वाले किसानों को भूमि का मालिक घोषित कर दिया। गरीब हल चलाने वाले जमींदार बन गये। इससे पंजाब की अर्थ-व्यवस्था में ज़बरदस्त सुधार आया। आज जो पंजाब में आर्थिक समृद्धि कायम है उसके बीज बाबा जी ने ही बोये थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने खालसा राज्य का एक अलग सिक्का भी जारी किया जिसकी कीमत मुगलों के सिक्के से अधिक रखी गई। सिक्के पर फारसी भाषा में खुदवाया गया था :

सिक्का जद् बर हर दो आलम तेगि नानक वाहिब असत।
फतहि गोबिंद सिंघ शाहि-शाहान फ़जलि सच्चा साहिब असत।

(अर्थात् सच्चे पातशाह की कृपा से यह सिक्का दो जहान में चलाया। यह समस्त दान देने वाली श्री गुरु नानक देव जी की कृपाण है और शाह-ए-शहंशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ की फ़तहि है।)

बाबा जी ने जो अपनी मुहर बनवाई उस पर भी खुदवाया :

देगो तेगो फतहि ओ नुसरति बे-दिरंग।
याफत अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

(अर्थात् श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपा से देग, तेग, फ़तहि और बे-रोक बरकतें हासिल कीं।)

बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में स्थापित प्रथम खालसा राज्य पूर्ण धर्म-निरपेक्ष राज्य था। फारसी के सरकारी भाषा होने पर भी अन्य कई भाषाओं को मान्यता प्राप्त थी। राज्य का मुख्य उद्देश्य विश्व-शांति कायम करना था। राज्य में जारी की जाने वाली हर सनद और दस्तावेज़ पर 'जबर-ब-अमान दहिर' लिखा होता था, जिसका अर्थ है-- 'विश्व का शांति-स्थान।'

बाबा जी की शहादत : शांतचित्त, संयमी, वीर, परोपकारी व्यक्तित्व वाले बाबा बंदा सिंघ बहादर का राज्य--प्रथम खालसा राज्य-- गुरु साहिबान की कृपा सदका अनेक मुश्किल हालातों के बावजूद भी सन् १७१६ तक कायम रहा। मुगल बादशाह बहादुर शाह एक लाख फौज़ लेकर कई दिनों तक लोहगढ़ को घेरे रहा पर अंततः मुंह की खाकर, निराश होकर उसे वापस जाना पड़ा।

आखिर वह दिन भी आ गया जब बाबा बंदा सिंघ बहादर को शहादत का जाम पीना था। लगातार मुहिम पर मुहिम चलाने वाले मुगलों ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को गुरदास नंगल की गढ़ी में से कई महीनों के घेरे के बाद गिरफ्तार कर लिया और भयानक यातनाएं देते हुए दिल्ली में शहीद कर दिया। १७०९ से १७१६ ई तक के आठ वर्ष बाबा बंदा सिंघ बहादर के लासानी संघर्ष की अद्वितीय मिसाल हैं। उन्होंने न सिर्फ प्रथम खालसा राज्य की स्थापना की बल्कि उसे कामयाबी से चलाकर सिक्खों को अदम्य राजनीतिक शक्ति से भर दिया। उनके नेतृत्व में सिक्खों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और उनके परिवार को कष्ट देने वाले आततायी ज़ालिमों को जमकर सज़ा दी।

बाबा बंदा सिंघ बहादर की नेतृत्व एवं संगठन-क्षमता

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

जीवन परिचय : १६ अक्तूबर, सन् १६७० को कश्मीर के पुंछ ज़िले के राजौरी क्षेत्र के निवासी श्री रामदेव भारद्वाज के घर जन्मे पुत्र का नाम लछमण देव रखा गया। व्यस्क होने पर लछमण देव अपने पिता के कार्यों में हाथ बंटाने लगा। उसे तीर-अंदाज़ी का शौक था। १५ वर्ष की अवस्था में तवी नदी के तट पर वो तीर-अंदाज़ी कर रहा था, जिसके कारण एक हिरनी मर गई। फलतः उसे इसके कारण संसार से वैराग्य हो गया। उसका किसी भी काम-काज में मन न लगता था। कुछ दिनों बाद वैरागी साधुओं का एक दल उसके घर के पास से गुज़रा। उनके मनोहर वचन सुनकर वह घर-बार छोड़कर उनके साथ मिल गया। उसके गुरु जानकी दास बैरागी ने उसका नाम बदलकर माधो दास रख दिया। सन् १६९२ में माधो दास ने गोदावरी नदी के तट पर बसे नांदेड़ (महाराष्ट्र) नामक कसबे में अपनी कुटिया बना ली।[१] ३ सितंबर, सन् १७०८ को दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उसकी कुटिया में पहुंचे। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर माधो दास ने अमृत छका और गुरु साहिब ने उसका नाम बंदा सिंघ बहादर रख दिया। गुरु साहिब ने उसे तत्कालीन मुगल शासकों के जुल्म और अन्याय के विरुद्ध तथा मानवीय अधिकारों की सुरक्षा हेतु शस्त्र और धर्म पर मर-मिटने के लिए तैयार २० शूरवीरों के अतिरिक्त खालसा पंथ के पांच मुखी सिंघों के साथ बाबा जी को पंजाब की ओर विदा किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हुकमनामों और बाबा जी के चुंबकीय आकर्षण के फलस्वरूप पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों के सिक्ख शूरवीर बाबा बंदा सिंघ बहादर के झंडे के नीचे एकत्र हो गए। मुस्लिम इतिहासकार खफ़ी खां के अनुसार, २-३ महीने में ही चार हज़ार घुड़सवार और सात हज़ार, आठ सौ पैदल सैनिक बाबा जी की सहायतार्थ पहुंच गए। डॉ. गोकुल चंद नारंग के अनुसार, शीघ्र ही पैदल सैनिकों की संख्या ८,९०० हो गई और अंत में उनकी संख्या ४०,००० तक पहुंच गई। इन शूरवीरों की सहायता से बाबा जी ने दो वर्ष से कम समय में सोनीपत, कैथल, समाणा, घुड़ाम, डसका, सहारनपुर, चप्पड़चिड़ी (सरहिंद-युद्ध से जुड़ा स्थान, जो साहिबज़ादा अजीत सिंघ नगर-- मोहाली के समीप है) पर अधिकार कर लिया। चप्पड़चिड़ी से सरहिंद की दूरी थोड़ी ही है।[२] इस प्रकार सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खां, जिसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को दीवार में ज़िंदा चिनवा दिया था, को मारकर उसे उसके कुकर्मों का फल चखाया। यह घटना १४ मई, सन् १७१० को घटित हुई थी।

स्वतंत्र सिक्ख राज्य की घोषणा : सरहिंद के सभी २८ परगने बाबा बंदा सिंघ बहादर के अधीन थे। उन्होंने सरहिंद-विजय के पश्चात

**१६९७, जीवन संत कॉटेज, दीवान मूल चंद स्ट्रीट, नज़दीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)*

शांति स्थापित करके खालसा दरबार का आयोजन किया। वस्तुत: यह खालसा राज्य की स्थापना का उद्घोष था। पहली बैठक में ही उन्होंने घोषणा कर दी कि ज़मीन उसी व्यक्ति की है, जो उस पर हल चलाता है। इस प्रकार जागीरदारी की प्रथा तोड़ दी गई। उन्होंने भाई बाज़ सिंघ को सरहिंद प्रांत का सूबेदार नियुक्त किया। भाई आली सिंघ को नायब सूबेदार नियुक्त किया गया। भाई फ़तहि सिंघ को समाणा के सूबेदार के पद पर पक्का किया गया। भाई बाज़ सिंघ के छोटे भ्राता भाई राम सिंघ को थानेसर का सूबेदार नियुक्त किया गया। बाबा बिनोद सिंघ को थानेसर में रखी गई सिक्ख सेना की टुकड़ी का कमांडर नियुक्त करके उसे जरनैली सड़क पर अपने सिक्ख सैनिकों को स्थायी रूप से टिके रहने और दिल्ली की ओर से आनी वाली किसी भी सेना को रोकने का आदेश दिया।

उन्होंने सढौरा (आधुनिक हरियाणा में) और नाहन (आधुनिक हिमाचल प्रदेश में) के मध्यवर्ती क्षेत्र को अपनी राजधानी बनाकर उसका नाम लोहगढ़ रख दिया।

वस्तुत: बाबा जी एक सम्राट बन चुके थे। अपने साम्राज्य के स्थायी चिन्न के रूप में उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गबिंद सिंघ जी के नाम पर एक सिक्का जारी करके स्वतंत्र सिक्ख राज्य की घोषणा कर दी। इस सिक्के के ऊपरी भाग पर फ़ारसी शब्दों में इस प्रकार लिखा गया था :

सिक्का ज़द बर हर दो आलम तेगि नानक वाहिब असत।

फ़तहि गोबिंद सिंघ शाहि-शाहान फजलि सच्चा साहिब असत।

अर्थात् मैंने दुनिया भर के लिए यह सिक्का जारी किया है। यह श्री गुरु नानक साहिब का आशीर्वाद है। मुझे सम्राटों के सम्राट श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने विजय प्रदान की है। यह भगवान की कृपा है।

सिक्के के दूसरी ओर ये शब्द अंकित थे :

जखब-अमानु-दहिर, मुसव्वत शहिर; जीनतु - तख़्त, मुबारक बख़्त।

अर्थात् समय के सुख, शहर की सलाह, तख़्त की शोभा हेतु सौभाग्यवश जारी किया गया।

इसी प्रकार हुकमनामों (आदेश-पत्र) के लिए सरकारी मुहर भी बनवाई गई, जिसके नीचे निम्नलिखित फ़ारसी शब्द अंकित थे :

देग़ो तेग़ो फ़तहि ओ नुसरति बे-दिरंग।

याफ़त अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

अर्थात् मुझे देग़ (लोगों के लिए लंगर तैयार करवाने) और तेग़ (तलवार चलाने) की प्रेरणा एकदम श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त हुई है।

बाबा जी ने मुगल बादशाहों की तरह एक नया संवत् (New Era) भी आरंभ किया ताकि सिक्ख जनता यह महसूस न करे कि वे मुगलों से कम हैं। संसार भर के इतिहास में यह एक अद्वितीय उदाहरण है कि खालसा राज्य के राज-नेता बाबा बंदा सिंघ बाहदर ने अपने व्यक्तिगत नाम का कहीं भी प्रयोग नहीं किया।

भाई केसर सिंघ (छिब्बर) का निम्नलिखित कथन बाबा बंदा सिंघ बहादर के उच्च चरित्र का द्योतक है :

बंदा कहे : सच्च को लागो बुरा न करो कोई।
जो करेगा बुरा तिस मारेगा सोई।२७। . . .
तब एह पंथ गुरू का बेसिर होइ गिआ।
बंदा सी निरलेपी कहे साहिब दे पंड सी चाई। . . .
सिंघां नूं बंदा एह कहे :

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

महाराजा रणजीत सिंघ की श्री हरिमंदर साहिब के प्रति के श्रद्धा एवं सत्कार

-स. बिक्रमजीत सिंघ*

महाराजा रणजीत सिंघ के जीवन-काल की कई ऐसी मिसालें हैं जो उनकी शख़्सियत और गुणों के साथ जुड़ी हुई हैं। बात चाहे सामाजिक, सभ्याचारक अथवा धार्मिक प्रबंध से सम्बंधित क्यों न हो, एक महाराजा होने के नाते वे उन सभी बातों की योग्य अगुआई करते थे। महाराजा की शख़्सियत का सबसे बड़ा गुण यह था कि वे धार्मिक पक्ष से श्रद्धा-भावना वाले तो थे मगर कट्टर बिल्कुल भी नहीं थे। वे अपने राज्य में सभी धर्मों का पूर्ण सत्कार करते थे किंतु एक सिक्ख होने के नाते उनकी सिक्ख धर्म, सिक्खी सिद्धांतों और गुरबाणी के प्रति अथाह श्रद्धा-भावना और सत्कार था। वे गुरु-स्थानों की सेवा के प्रति बहुत ही उत्साहित रहा करते थे। उन्होंने कई गुरुद्वारा साहिबान की देखभाल और प्रबंध को पूर्ण गुरु-मर्यादा के साथ चलाने के लिए कई कार्य किए और प्रबंधक भी नियुक्त किए। सन् १८०५ ई में महाराजा रणजीत सिंघ ने जब श्री अमृतसर को अपने राज्य का हिस्सा बना लिया तो वे सबसे पहले श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में नंगे पांव चलकर अकाल पुरख का शुक्राना करने पहुंचे।

महाराजा ने श्री अमृतसर में रहते हुए श्री हरिमंदर साहिब में कई ऐसे कार्य करवाये जो कि आज भी यहां पर देखने को मिलते हैं और जो उनकी श्री हरिमंदर साहिब के प्रति श्रद्धा, सत्कार और आस्था के सूचक भी हैं।

श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंध को पूर्ण गुरु-मर्यादा और कुशल ढंग से चलाने के लिए महाराजा रणजीत सिंघ ने लगभग ५०० सेवादारों की नियुक्ति की। महाराजा ने इन सेवादारों का इंचार्ज भाई लहिणा सिंघ मजीठिया को बनाया और समूचा प्रबंध स. सूरत सिंघ चिनौट वालों को सौंपा। साथ ही श्री हरिमंदर साहिब की देख-रेख और प्रबंध को चलाने हेतु कई अहम दिशा-निर्देशों के साथ-साथ श्री हरिमंदर साहिब की आमदनी के लिए सरकारी खज़ाने में से कुछ हिस्सा और जागीर भी इस स्थान के नाम पर लगवा दी।

श्री सोहन लाल सूरी कृत 'उमदा-उत-तवारीख' में महाराजा द्वारा श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के दर्शन और पुण्य-दान का विवरण बहुत मात्रा में दर्ज है। जब भी महाराजा को कोई अहम अथवा बड़ी जीत हासिल होती, महाराजा सतिगुरु का शुक्राना करने यहां पर ज़रूर आते थे। जब महाराजा ने श्री अमृतसर को अपने राज्य में शामिल किया तब उन्होंने तुरंत श्री हरिमंदर साहिब के रखरखाव और प्रबंध की तरफ विशेष ध्यान दिया। गुरु साहिबान की बसाई हुई नगरी और सिक्खों की धार्मिक राजधानी के इर्द-गिर्द एक मज़बूत दीवार का निर्माण करवाया गया। गुरु के लंगर के नाम जागीरें लगवा दी गईं और बुंगों के निर्माण के लिए हुक्म दिये गये। उन्होंने मिसर छज्जू मल्ल को श्री अमृतसर शहर का टैक्स इकट्ठा करने के लिए नियुक्त किया और महसूल चुंगी की सारी आमदन श्री हरिमंदर साहिब के नाम कर दी।

इतना ही नहीं, उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब में उस समय सेवा कर रहे सेवादारों के नाम पर भी जागीरें लगवाईं और श्री हरिमंदर साहिब के रागियों एवं ग्रंथियों के वेतन में दोगुना

*२९४६/७, बाज़ार लोहारां, चौंक लछमणसर, श्री अमृतसर-१४३००१, मो. ८७२७८००३७२

इज़ाफा कर दिया।

महाराजा रणजीत सिंघ का श्री हरिमंदर साहिब के प्रति इतना सत्कार था कि वे अपना कोई भी नया काम शुरू करने से पहले यहां अरदास करने ज़रूर आते थे। इसके अलावा वे विशेष दिनों, गुरुपर्वों के अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब के अंदर बैठकर कीर्तन भी सुना करते थे।

महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री हरिमंदर साहिब की इमारत-सृजना के लिए कई तरह के कार्य किये, जिनमें सबसे बड़ा कार्य उनके द्वारा श्री हरिमंदर साहिब की इमारत पर सोने (स्वर्ण) के पतरे (चादर) लगवाने का था। इस कार्य के लिए उस समय के प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, गुरबाणी के कथावाचक, कोमल कलाओं के पारखू और कलाकार भाई संत सिंघ ज्ञानी को पांच लाख रुपए सुपुर्द किये।

श्री हरिमंदर साहिब की इमारत पर सोने के पतरे चढ़वाने के लिए महाराजा रणजीत सिंघ की तरफ से कोमल कलाओं के माहिर चिनौट (लायलपुर, पाकिस्तान) से बुलवाये गए। इनमें से प्रमुख मिस्त्री यार मुहम्मद ख़ान था जो कि सोने का वर्क (कवच) और सोने का पानी चढ़ाने में बहुत ज्यादा माहिर था। चिनौट से काफी गिनती में बुलाये गए कारीगरों और उनके सहायकों के रहने के लिए प्रबंध श्री अमृतसर के लाहौरी दरवाज़े के अंदर एक हवेली में किया गया था। श्री हरिमंदर साहिब सहित हरि की पौड़ी, छोटी परिक्रमा, पुल दर्शनी ड्योढ़ी और सरोवर की बड़ी परिक्रमा में संगमरमर, चांदी, सोने तथा गच मीनाकारी एवं जड़त का काम महाराजा रणजीत सिंघ के समय ही शुरू हुआ।

ज्ञानी गिआन सिंघ की पुस्तक 'तवारीख श्री अमृतसर' के मुताबिक, "महाराजा रणजीत सिंघ की तरफ से श्री दरबार साहिब के फर्श, दीवारों इत्यादि की सेवा के अलावा सिर्फ सोने, चांदी और नक्काशी पर १६,३९,००० रुपए का खर्च उस समय किया गया।"

महाराजा रणजीत सिंघ ने सोना लगवाने के अलावा श्री हरिमंदर साहिब की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए श्री हरिमंदर साहिब के फर्श पर बहुत ही सुंदर संगमरमर लगवाया, जिसके लिए कई कारीगरों को दूसरे राज्यों से बुलवाया गया। श्री हरिमंदर साहिब की दीवारों पर भी बहुत सुंदर संगमरमर लगवाकर उस पर बहुत ही बेशकीमती और बाकमाल मीनाकारी एवं नक्काशी करवाई गई, जिसमें नीलम, पन्ने और हीरे जड़े गए। यह सारी कलाकारी सिक्ख कला का उत्तम नमूना है।

ज्ञानी किरपाल सिंघ अपनी पुस्तक 'श्री हरिमंदर साहिब दा सुनहरी इतिहास' में श्री हरिमंदर साहिब की इस कला के बारे में लिखते हैं कि "महाराजा रणजीत सिंघ की यह प्रबल इच्छा थी कि श्री हरिमंदर साहिब के अंदर कोमल हुनरों (कारीगरी) का जो भी काम किया जाए वह मुगल कला अथवा राजपूताना कला की नकल न हो। . . . उनकी यह चाह थी कि यहां के कला के काम में सौंदर्य के साथ-साथ यहां के आत्मिक-रस की भी झलक हो और वह यहां (श्री हरिमंदर साहिब) के संगीतमयी वायुमंडल के साथ एक स्वर रखती हो। यह तो स्पष्ट है कि जितने भी प्रकार के हुनरों का काम श्री हरिमंदर साहिब के भीतर हुआ दिखता है, वह सारा महाराजा रणजीत सिंघ की ही देन है। यही समय सिक्ख कला के विकास का समय कहा जा सकता है।"

दूर-दराज़ से बुलाये अलग-अलग मुस्लिम कारीगरों के अलावा महाराजा ने यहां पर की गई चित्रकारी और नक्काशी के काम के लिए सिक्ख हुनरमंदों को भी बुलाया था। इन चित्रकारों में स. किशन सिंघ, स. बिशन सिंघ, स. जवाहर सिंघ, महंत ईशर सिंघ, स. निहाल सिंघ,

भाई हरनाम सिंघ, भाई आतमा सिंघ और भाई गिआन सिंघ के नाम विशेष रूप से वर्णनीय हैं जिन्होंने प्रकृति की चहल-पहल को अकाल पुरख की अनोखी सृजना के रूप में अपनी चित्रकला में संजोया। इन चित्रकारों एवं कलाकारों ने अपनी चित्रकला में मिथिहासिक घटनाओं को नहीं बल्कि प्रकृति को चित्रित किया है। डॉ. सरूप सिंघ अलग के अनुसार, "जब प्रसिद्ध आर्किटेक्ट परसी ब्राऊन ने श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन किये तो इस सर्वपक्षी जलाल को देखते हुए वे बोल उठे कि श्री हरिमंदर साहिब के भीतर धार्मिक पवित्रता वाली भावनाएं संगमरमर और शीशे जैसी बेजान चीज़ों में भी स्पष्ट तौर पर झलकती दीख पड़ती हैं।

श्री हरिमंदर साहिब के पश्चिम अर्थात् सामने वाले (मुख्य) द्वार पर एक सुनहरी पतरा (Golden plate) लगा हुआ है जिस पर मूल-मंत्र एवं जपु जी साहिब की पहली पउड़ी के बाद लिखा है :-

"श्री महाराज गुरू साहिब जी ने आपणे परम सेवक सिक्ख जाण कर श्री दरबार साहिब जी की सेवा श्री महाराजा सिंघ साहिब रणजीत सिंघ जी पर दया करकै कराई। संमत १८८७"

श्री हरिमंदर साहिब के उत्तर द्वार पर भी कुछ इस तरह लिखा हुआ है :-

"सेवा श्री गुरू रामदास जी की सवरन की अर संग सुपेद बडभागी जानके श्री महाराजा रणजीत सिंघ जी से कराई। मारफत श्री भाई संत सिंघ ज्ञानी जी की।"

महाराजा रणजीत सिंघ श्री हरिमंदर साहिब को पूर्ण रूप से समर्पित थे। उन्होंने जहां खुद श्री हरिमंदर साहिब में अलग-अलग सेवाएं करवाईं वहीं अपने समय में कई सिक्ख सरदारों को भी सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

महाराजा अपनी किसी भी मूल्यवान वस्तु को गुरु-दरबार में भेंट कर देते थे। इतिहासकारों के मुताबिक एक बार महाराजा रणजीत सिंघ अपने खज़ानची से पहले श्री हरिमंदर साहिब पहुंच गये। उस समय उनके पास पैसे इत्यादि नहीं थे। उन्होंने अपने गले में पहनी हुई सुच्चे मोतियों की माला उतारकर गुरु-दरबार में भेंट कर दी। महाराजा रणजीत सिंघ के पोते कुंवर नौनिहाल सिंघ की शादी पर एक हीरे-मोती जड़ा हुआ सिहरा बनवायाा गया। उस सेहरे पर २९५३ सुच्चे मोतियों को पिरोया गया था। इसके अलावा उसमें हीरे और पन्ने भी जड़े हुए थे। उस सिहरे को जब महाराजा रणजीत सिंघ ने देखा तो वे उसकी सुंदरता पर मोहित हो गए। उस सिहरे को भी महाराजा ने श्री हरिमंदर साहिब में भेंट कर दिया। वह सिहरा आज भी श्री हरिमंदर साहिब के तोशाखाना में सुरक्षित है। इसके अलावा श्री हरिमंदर साहिब को महाराजा द्वारा भेंट किया गया काफी बहुमूल्य सामान तोशाखाना में आज भी सुरक्षित है, जिसे गुरुपर्वों के दिन 'जलौ' के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

महाराजा को जब भी कोई कीमती तोहफा भेंट करता तो महाराजा फौरन उसे श्री हरिमंदर साहिब में भिजवा देते। सन् १८२६ ई में हैदराबाद (दक्षिण प्रांत) के निज़ाम की तरफ से महाराजा को एक बहुत ही बेशकीमती शामियाना (चानणी) भेंट किया गया जो कि बहुत ही खूबसूरत था। इसमें सोने और चांदी की तारों के अलावा बहुमूल्य हीरे और सुच्चे मोती लगे हुए थे। जब यह शामियाना महाराजा साहिब ने देखा तो उन्होंने अपने दरबारियों को कहा कि यह शामियाना उनके दरबार में नहीं बल्कि श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु रामदास जी के दरबार में लगना चाहिए। महाराजा ने वह शामियाना श्री हरिमंदर साहिब भिजवा दिया। जब श्री अकाल तख़्त साहिब के (तत्कालीन) जत्थेदार अकाली फूला सिंघ को यह पता चला

कि वह शामियाना महाराजा के दरबार में लगकर आया है तो अकाली फूला सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ को गुरु-मर्यादा का उल्लंघन करने हेतु धार्मिक सज़ा (तनखाह) के तहत एक दिन की सेवा और दो गांवों की ज़मीन श्री हरिमंदर साहिब के नाम लगवाने का हुक्म कर दिया। महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अकाल तख़्त साहिब की मर्यादा को मुख्य रखते हुए उस धार्मिक सज़ा को प्रवान कर लिया। यह घटना महाराजा रणजीत सिंघ के श्रद्धावान होने तथा श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब के प्रति उनकी समर्पण-भावना की सूचक है। यहां पर यह भी बात ज़िक्रयोग्य है कि यह बहुमूल्य शामियाना, जो श्री हरिमंदर साहिब के तोशाखाना में संभालकर रखा हुआ था, जून, १९८४ के फौजी हमले के दौरान जल कर राख हो चुका है।

महाराजा रणजीत सिंघ अपने राज्य-काल में विदेशियों को भी श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करने के लिए आमंत्रित किया करते थे। एक बार हिंदोस्तान के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड ऑकलैंड (Lord Ockland) अपनी बहन एमली एडिन (Emily Edan), जो कि एक चित्रकार थी, को साथ लेकर दिसंबर, १८३८ ई में श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन के लिए आया। वो श्री हरिमंदर साहिब की आभा को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। श्री हरिमंदर साहिब के साथ-साथ महाराजा ने श्री अकाल तख़्त साहिब और गुरुद्वारा साहिब बाबा अटल राय में भी सेवा के कार्य करवाए।

श्री हरिमंदर साहिब के अलावा महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अमृतसर शहर की सुरक्षा हेतु शहर के चारों तरफ एक पक्की दो गज़ चौड़ी दीवार का निर्माण करवाया। इस दीवार के भीतर की तरफ एक कच्ची दीवार भी निर्मित की गई, जिसकी चौड़ाई १० गज और लंबाई ८७२४ गज़ थी। इस दीवार के भीतर रेत भर दी गई, जिस पर रखकर तोप चल सकती थी। जो बाहरी पक्की दीवार थी उसके साथ एक गहरी खाई बना दी गई और उसे पानी से भर दिया गया ताकि कोई बाहरी हमलावर शहर पर हमला करने हेतु अंदर न आ सके। शहर के अंदर आने के लिए इस दीवार में १२ बड़े दरवाजे रखे गए, जिनमें से कुछ आज भी श्री अमृतसर में देखे जा सकते हैं। इन दरवाजों को अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

महाराजा ने शहर की सुरक्षा के अलावा जंग के सामान के संरक्षण के लिए और फौज की रिहायश के प्रबंध के लिए श्री अमृतसर में एक बहुत बड़ा किला बनवाया। इसका नाम उन्होंने दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर 'गोबिंदगढ़' रखा। श्री गुरु रामदास जी द्वारा बसाये इस शहर की सुंदरता के लिए एक बहुत बड़ा सुंदर बाग भी बनवाया गया, जिसका नाम श्री गुरु रामदास जी के नाम पर 'रामबाग' रखा गया।

श्री अमृतसर में महाराजा रणजीत सिंघ से सम्बंधित और भी कई स्थान आज भी मौजूद हैं। महाराजा रणजीत सिंघ के समय श्री अमृतसर उत्तरी भारत का बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र बना रहा।

महाराजा रणजीत सिंघ, जिनके राज्य की सीमाएं पंजाब से लेकर काबुल-कंधार तक लगती थीं, गुरु-घर के बहुत बड़े श्रद्धालु, परम सेवक, नीतिवित्ता और निमाणे सिक्ख थे। वे अपने अंतिम समय तक गुरु साहिबान, गुरबाणी और गुरु-घर के साथ-साथ सिक्खी सिद्धांतों को समर्पित रहे।

सहायक पुस्तकें :
१. श्री हरिमंदर साहिब दा सुनहिरी इतिहास : सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ
२. हरिमंदर दरशन : स. सरूप सिंघ अलग्ग
३. तवारीख श्री अमृतसर : ज्ञानी गिआन सिंघ
४. श्री हरिमंदर साहिब जी दा इतिहास : डॉ. अजीत सिंघ औलख'

शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में सभी धर्मों को बराबर सम्मान प्राप्त था। सभी लोग सुखी रहते थे। महाराजा रणजीत सिंघ वास्तविकता में प्रजा के दिल पर राज्य करते थे। वे अमीर, गरीब सभी की अपीलें सुनते थे। गरीब लोग बिना किसी रुकावट के अपनी शिकायत महाराजा के पास कर सकते थे। महाराजा का दिल प्रजा के लिए दया-भावना से भरा हुआ था। उनको खलकत में से खुदा नज़र आता था। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में किसी को कभी फांसी की सज़ा नहीं हुई थी। महाराजा अपने राज्य को अकाल पुरख का राज्य और अपने आप को प्रजा का सेवक समझते थे। महाराजा के दरबार की शाही मुहर, जो पत्रों आदि पर लगाई जाती थी, इस प्रकार थी :

देगो तेगो फतहि ओ नुसरति बे-दिरंग।
याफत अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

महान योद्धा महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म शुक्रचक्किआ मिसल के प्रवर्त्तक सरदार चढ़त सिंघ के सुपुत्र सरदार महां सिंघ के घर १३ नवंबर, १७८० ई को हुआ था। महाराजा की उम्र अभी १२ साल की ही थी कि १७९२ ई में उनके पिता जी अकाल चलाना कर गए। उनके पश्चात आप शुक्रचक्किआ मिसल के मुखी बन गए।

एक समय एक मुसलमान लिखारी ने सुंदर लेखनी में बहुत प्रेम के साथ कुरान शरीफ़ लिखी। वो उसको किसी मुसलमान नवाब को भेंट करके उससे कोई अच्छा इनाम प्राप्त करना चाहता था। महाराजा रणजीत सिंघ ने उस लिखारी को अपने पास बुलाकर उससे वो कुरान शरीफ़ ले ली और उसे बहुत बड़ी राशि इनाम के रूप में प्रदान की। इससे जाहिर होता है कि महाराजा सब धर्मों के साथ-साथ उनके धर्म-ग्रंथों का भी सम्मान किया करते थे।

महाराजा रणजीत सिंघ ऐसे महाबली थे कि दुश्मन उनसे सदा भयभीत रहते थे। उन्होंने मुलतान, कश्मीर, पिशौर, चंबा, कांगड़ा, जम्मू, चीन, लेह-लद्धाख पर जीत प्राप्त करके खालसाई झंडा लहराया। महाराजा को सभी धर्मों और सभी जातिओं के लोग सत्कार देते थे। कवि शाह मुहम्मद लिखता है :

महाबली रणजीत सिंघ होइआ पैदा,
नाल ज़ोर दे मुलक हिलाए गिआ।
मुलतान, कशमीर, पिशौर, चंबा,
जम्मू, कांगड़ा कोटि निवाए गिआ।
होर देश लद्धाख ते चीन तोड़ी,
सिक्का आपणे नाम चलाए गिआ।
शाह मुहंमदा जाण पचास बरसां,
अच्छा रज्ज के राज कमाए गिआ।

महाराजा की बात तो अलग उनके सेनापति सरदार हरी सिंघ नलूआ ने भी पठानों की तौबा-तौबा करवा रखी थी। स. हरी सिंघ नलूआ के नाम से, उसकी शक्ति से पठान औरतें भी परिचित थीं। वे अपने बच्चों को 'नलूआ आ गया' कहकर डराया, चुप कराया करती थीं।

महाराजा रणजीत सिंघ की लोकप्रियता की बहुत-सी कहानियां प्रचलित हैं। एक समय देश में सूखा पड़ जाने के कारण अनाज का अकाल

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

पड़ गया। लोग भूखे मरने लगे। महाराजा ने गरीबों के लिए अनाज के सरकारी भंडार खोल दिए। एक ८० साल का वृद्ध और उसकी छोटी उम्र के पोते ने अनाज की भारी गांठ ले ली। वे उसको उठा नहीं पा रहे थे। महाराजा भेष बदलकर प्रजा में घूम रहे थे। बुजुर्ग आदमी की विनती सुनकर महाराजा ने अनाज की गांठ अपने सिर पर रखकर उस बुजुर्ग व्यक्ति के घर पहुंचा दी।

इसी प्रकार एक गरीब बूढ़ी औरत ने सुना हुआ था कि राजा लोग पारस के सामान होते हैं। वो अपना लोहे का तवा लेकर महाराजा के शरीर के साथ छुहाने के लिए आई। तब वास्तविकता को जान कर, शेर-ए-पंजाब ने उस गरीब औरत को स्वर्ण-मुद्राएं देकर निहाल कर दिया। इसी प्रकार बेर तोड़ते समय बेरी के वृक्ष को पत्थर मार रहे बच्चों द्वारा फेंका एक पत्थर महाराजा को जा लगा जो कि उधर से गुज़र रहे थे। महाराजा के सिपाही उन बच्चों को पकड़ ले आए। बच्चों की पूरी वार्ता सुनकर दयालु महाराजा ने कहा, "अगर एक बेरी के वृक्ष को पत्थर मारने से वो इन बच्चों को बेर देती है, तो मैं तो देश का राजा हूं, मेरे को पत्थर लगने से मैं इन बच्चों को पैसे दूंगा।" साथ ही महाराजा ने उन बच्चों को प्रेम से समझा दिया कि इस तरह भविष्य में पेड़ों को पत्थर नहीं मारना। ऐसा करने से किसी राहगीर का नुकसान हो सकता है।

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में मुसलमान, हिंदू, सिक्ख आदि सभी खुश रहते थे। सभी को बिना किसी पक्षपात के पूरा न्याय मिलता था। निःसंदेह महाराजा अपने आप को प्रजा का सच्चा सेवक समझते थे और अपने राज्य को अकाल पुरख की बख़्शिश कहते थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादर की नेतृत्व एवं संगठन-क्षमता *(पृष्ठ ३६ का शेष)*

"गरीब दी रक्खिआ करो, गब्भरू न कोई रहो।"
जे तुसीं उस पुरखु दे सिक्ख अखवाउ।
तां पाप, अधरम, अनिआउ न कमाउ।४४।[३]
"सिक्ख उबार असिख संघरो ॥ पुरख दा कहिआ हिरदे धरो।

अर्थात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नांदेड़ (महाराष्ट्र) में चले जाने के पश्चात् मुगल शासकों के डर से कुछ लोग उनके षड़यंत्र में लिप्त होने लगे थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने उन्हें समझाया कि तुम (गुरु साहिबान के बताए हुए) सद्‌मार्ग पर चल रहे हो। तुम्हारा कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता। तुम्हारा बुरा करने वाले (विदेशी शासकों) का सर्वनाश स्वयं अकाल पुरख कर देगा। भले ही कोई भी व्यक्ति हो, यदि वह निर्धन है तो उसकी रक्षा करो। कोई भी गब्भरू (अहंकारी शत्रु) बचने न पाए। तुम कोई भी पाप, अधार्मिक कार्य न करो और अन्याय के विरुद्ध तैयार-बर-तैयार होकर अपने धर्म-विरोधी लोगों का संहार करो। यही अकाल पुरख स्वरूप (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) का कथन है, जिसे सहर्ष हृदय में धारण करो।

संदर्भ-सूची :

१. M.A. Macauliffe : The Sikh Religion: Its Gururs, Sacred Writings and Authors, Vol.5, Page 238 (Clarendon Press oxford, 1909).
२. डॉ अंम्रितलाल पाल (संपादक) : 'बंदा सिंघ बहादर' पुस्तक में संकलित डॉ सुखदिआल सिंघ का लेख 'चप्पड़चिड़ी दी लड़ाई', पृष्ठ ५१
३. भाई केसर सिंघ (छिब्बर), संपादक : प्रो पिआरा सिंघ पदम, 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का', चरण ११, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, सन् २००५.

महाराजा रणजीत सिंघ की धर्म-निरपेक्षता

*-डॉ. मनमोहन सिंघ**

शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ केवल पंजाब में ही नहीं बल्कि सारे संसार में सम्मान की दृष्टि से जाने जाते हैं। महाराजा रणजीत सिंघ अपनी बहादुरी, न्यायप्रियता, समानता व धर्म-निरपेक्षता के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। इस महान राजा ने अपनी धांक तिब्बत से सिंध तथा खैबर से सतलुज तक जमा दी और राज्य किया। महाराजा की खासियत, मान-सम्मान व प्रशासन-कला आने वाली पीढ़ियों को भी मात देती है।

महाराजा रणजीत सिंघ के अच्छे स्वास्थ्य का राज़ यह था कि वे सुबह उठकर कुछ घंटे घुड़सवारी करते, पलटूनों का निरीक्षण करते थे। इसके बाद वे अपना दरबार लगाते व ज़रूरी फरमान जारी करते थे। महाराजा रात को जल्दी सो जाते थे, जैसे कहा जाता है कि जल्दी सोना व जल्दी जागना सेहत के लिए अच्छा होता है। महाराजा अमृत वेले जागने के बाद स्नान करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ सुनते ताकि आत्मिक शांति बनी रहे।

यह कहा जाता है कि महाराजा रणजीत सिंघ सभी को एक समान समझते व देखते थे। महाराजा की एक आंख चेचक से बचपन में ही खराब हो गई थी। उनके राज्य में जाति-धर्म, रंग-रूप के अनुसार किसी के साथ अन्याय नहीं होता था। इस सिद्धांत को भारत के संविधान ने भी अपनाया है। महाराजा रणजीत सिंघ के सिद्धांतों ने प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने में मार्गदर्शन प्रदान किया है।

महाराजा के शासन-काल में एक बार अकाल पड़ गया। उन्होंने अन्न के भंडार खोल दिये व ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिसको जिस चीज़ की ज़रूरत है, वो आकर ले जाये। इस बात का एक बच्चे को पता लगा। उसने अपने बूढ़े दादा को इसके बारे में बताया। बच्चे के बताने पर बूढ़ा आदमी अनाज लेने चला गया। बूढ़ा आदमी इतना कमज़ोर था कि वह अनाज उठाने में असमर्थ था। महाराजा रणजीत सिंघ यह सब देख रहे थे। उन्होंने अनाज उठाकर उस बूढ़े आदमी के घर छोड़ दिया। इस प्रकार बूढ़े आदमी के दिल में महाराजा के प्रति इज्जत और भी बढ़ गई।

एक बार कुछ बच्चे बेरी के पेड़ पर पत्थर मारकर बेर तोड़ रहे थे। महाराजा उधर से गुज़र रहे थे। अचानक एक पत्थर महाराजा को आ लगा। महाराजा ने उन्हें सज़ा देने के स्थान पर पैसे दिए। किसी के पूछने पर महाराजा ने कहा, "जब बेरी के पेड़ को पत्थर मारने से बेर मिलते हैं तो मैं बच्चों को पैसे दूंगा।"

जब तक महाराजा जीवित रहे, वे राज्य के विस्तार व आम जनता की भलाई के कार्यों में लगे रहे। उनका कहा हुआ हर शब्द कानून होता था। महाराजा ने अपनी ताकत का कभी गलत इस्तेमाल नहीं किया था। वे अपने आप को जनता का दास समझते थे। उन्होंने अपने

८८९, फेज़-१०, मोहाली-१६००६२

राज्य में कार्य-कुशलता बढ़ाने के लिए उसे चार राज्यों में विभाजित किया हुआ था-- लाहौर, मुलतान, पेशावर और कश्मीर। प्रत्येक प्रांत गवर्नर के अधीन होता था। किसी के भी साथ बेइंसाफी होने से महाराजा अपने आपको दुखी महसूस करते थे।

गांवों में पंचायतों के द्वारा न्याय होता था। पंचायत के सदस्यों के पास अच्छी ज़मीन का होना तथा उनका गांवों में प्रभावशाली होना ज़रूरी था। इंसाफ के लिए महाराजा भेस बदल कर जनता के बीच जाया करते थे, इसलिए प्रत्येक को इंसाफ मिलना स्वाभाविक था। राज्य की आमदनी का मुख्य साधन भूमि-कर तथा बाहर से आने वाली वस्तुओं पर कर लगाना था।

हालांकि मुगलों ने सिक्खों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये परंतु महाराजा रणजीत सिंघ ने मुगलों के प्रति बदले की भावना नहीं रखी तथा उन पर किसी प्रकार का विशेष कर आदि नहीं लगाया, जैसा कि मुगल शासक करते थे। महाराजा ने मुसलमानों को उनकी योग्यता के अनुसार अपने राज्य में पदवियां दी हुई थीं। महाराजा रणजीत सिंघ हर धर्म के धार्मिक समारोह में भाग लेते थे।

महाराजा के दरबार में हर धर्म के लोग उच्च पदों पर तैनात थे। राजा धिआन सिंघ, गुलाब सिंघ, सुचेत सिंघ, हीरा सिंघ आदि जो पियादे के रूप में लाहौर आये थे, राज्य में दरबारी नियुक्त किये गये। राजा हीरा सिंघ को महाराजा अपना बेटा समझते थे। भवानी दास ने महाराजा का वित्तीय विभाग कायम किया। मुलतान का दीवान एक बढ़िया गवर्नर साबित हुआ, जिसका नाम सावन मल था। कश्मीरी पंडित दीवान गंगाराम व अयोध्या प्रसाद वित्त मंत्री नियुक्त हुए। फकीर नरुद्दीन ने महाराजा के पास कई पदवियों पर कार्य किया। महाराजा उसके कार्य से इतने खुश थे कि शाही खज़ाने की चाबी भी उसी को दी हुई थी तथा उसे लाहौर का गृह मंत्री भी नियुक्त किया। फकीर अज़ीजुद्दीन महाराजा रणजीत सिंघ का सहायक तथा विदेश मंत्री भी था। हिंदू लोगों को मंत्री, जरनैल व गवर्नर आदि पदवियां दी हुई थीं। राज्य के खज़ाने पर मुखबर भी हिंदू ही था।

दाता गंजबख़्श के मकबरे को दोबारा बनवाने के लिये महाराजा ने कई लाख रुपये खर्च किये तथा कई अन्य मकबरों को भी उचित दान दिया। राज्य की तरफ से मस्जिदों व मुसलमानों की शैक्षणिक संस्थाओं को भी अनुदान दिया जाता था। हिंदुओं व उनकी संस्थाओं को भी महाराजा रणजीत सिंघ का संरक्षण प्राप्त था। कई प्रसिद्ध मंदिरों, जैसे कांगड़ा, ज्वाला के मंदिरों को महाराजा ने सुनहरी छतर तोहफे के रूप में दिये तथा बनारस के मंदिरों को अनुदान भेजा। राज्य के अन्य कई मंदिरों व संस्थाओं का प्रबंध राजकीय खज़ाने से किया जाता था। ईसाइयों के धार्मिक कार्यों में भी किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं डाली गयी। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में किसी को भी अपना धर्म बदलने के लिये मज़बूर नहीं किया गया।

यह सब कुछ अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में धर्म-निरपेक्षता का सिद्धांत असली रूप में अपनाया गया था। महाराजा रणजीत सिंघ २८ जून, सन् १८३९ को इस संसार से सदा के लिये कूच कर गये थे।

जून, १९८४ ई में गुरुद्वारों पर हुए फौजी हमले

-सिमरजीत सिंघ*

सिक्खों के लिए गुरुद्वारा मात्र पूजा-स्थान ही नहीं बल्कि वह पावन पवित्र स्थान है जहां उनके जागत-ज्योति दस गुरु साहिबान के पावन आत्मिक स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब शोभित होते हैं, जो कि उनको हर रोज़ हुकमनामे के रूप में जीवन-क्षेत्र में जूझने के लिए अगुआई बख़्शिश करते हैं। सिक्ख अपने गुरु के हुक्म अनुसार जीवन-यापन करके ही खुद को सुखी एवं संतुष्ट महसूस करता है। गुरु के दर पर हाज़िर होने के बिना प्रत्येक गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख खुद को अधूरा एवं एकाकी प्रतीत करता है। अपना धार्मिक स्थान प्रत्येक धार्मिक मत के धारक को प्राकृतिक रूप से प्यारा लगता है परंतु सिक्ख संगत को तो अपने गुरुद्वारा साहिबान जान से भी प्यारे हैं। इस हकीकत की पुष्टि हर वक्त होती रही है। बाबा दीप सिंघ जी तथा उनके साथियों द्वारा श्री हरिमंदर साहिब के अपमान को सुनकर इसका सम्मान बहाल करने के लिए जानें वार देना तथा स. महिताब सिंघ एवं स. सुक्खा सिंघ द्वारा श्री हरिमंदर साहिब का अपमान करने वाले मस्से रंगड़ को राजस्थान से आकर सोधणा प्रमुख उदाहरणें हैं। और भी अनेकों उदाहरणें हैं।

अफ़सोसनाक पहलू है कि प्रत्येक सरकार राजसी सत्ता तथा ताकत की खुमारी में गुरुद्वारों के लिए जानें वार देने वाली सिक्ख मानसिकता को दरकिनार करके सिक्खों के गुरुद्वारों को बहाने से या स्पष्ट बल प्रयोग करने से पीछे नहीं रहती थी। राजतंत्री सरकारों या एलानी कट्टर मज़हबी नीति की धारक सरकारों ने तो ऐसा करना ही था परंतु घोर दुखदायक तथ्य यह है कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने का दावा करने और दम भरने वाली उत्तर स्वतंत्रता काल की भारत की केन्द्रीय सरकार इससे पीछे नहीं रही। १९८४ ई में पहले कुछ वर्षों से बहुत ही चालाकी तथा चुस्ती से हालात को मनमर्ज़ी के मोड़ दिये तथा अपनी ही प्रजा बनी सिक्ख कौम के परम पावन केन्द्रीय स्थान श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर तथा इसके साथ समूह पंजाब में ४० के लगभग अन्य गुरुद्वारा साहिबान को एक ही समय में फौजी हमले का शिकार बनाकर कत्लोगारत के इरादे से अपनी घोर करतूतों तथा कृतघ्नता का दिखावा किया। अठारहवीं सदी के मुगल हाकिमों तथा अफ़गान हमलावरों द्वारा घटित घल्लूघारों की ही तर्ज पर सिक्ख कौम का सर्वनाश या नसलघात करने के अति मंद इरादों को इस सामूहिक फौजी हमले द्वारा मूर्तिमान किया गया। इस हमले का सत्य कई कारणों के कारण एकदम पूरी दुनिया के आगे ज़ाहिर नहीं हो सका, धीरे-धीरे ज़ाहिर हो रहा है।

हाकिमों की सोची-समझी सोच के तहत कथित नीला तारा तथा इसके साथ जुड़ी फौजी कार्यवाही के लिए ज्यादा से ज्यादा सिक्खी स्वरूप वाले जरनैलों की सेवाएं हासिल की गईं, दुनिया को यह जताने के लिए कि उनके मनों में सिक्खों के प्रति कोई बुरी भावना नहीं है तथा सिक्खों का बड़ा हिस्सा उनकी इस कार्यवाही के पक्ष में है। २ जून, १९८४ ई तक भारतीय फौज ने जम्मू-कश्मीर से लेकर श्री गंगानगर

*संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।

तक अंतर्राष्ट्रीय सरहद को लगभग पूरी तरह से सील कर दिया था। सारे पंजाब के गांवों-शहरों में फौज की लगभग ७ डिवीज़नें तैनात कर दी थीं तथा फौजियों को पहले ही चयनित जगह पर पोज़ीशनें लेने के लिए कह दिया गया था।

समूची लड़ाई की निरंतर जानकारी रखने के लिए एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया था जिसकी समूची कमांड कथित तौर पर उस समय के बड़े राजसी नेता के पुत्र के हाथ में थी। अरुण नेहरू, जो कपूरथला रियासत के एक पुराने रजवाड़े ख़ानदान की संतान है, क्रियाशील था और उप रक्षा मन्त्री के. पी. सिंघ दिओ उसकी सहायता कर रहा था।

जनरल गौरी शंकर को पंजाब के राज्यपाल का सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया गया। लेफ जनरल कृष्णा स्वामी सुंदरजी को फौजी हमले का समूचा चार्ज सौंपा गया। लेफ़ जनरल रणजीत सिंघ दियाल को उसका सहायक लगाया गया था। ज़िक्रयोग्य है कि आर. एस. दियाल कथित तौर पर निरंकारी मंडल का पैरोकार था।

लेफ्टिनेंट जनरल रणजीत सिंघ दियाल को समूची कार्यवाही का मुख्य संचालक बनाया गया तथा पंजाब के गवर्नर का मुख्य सलाहकार नियुक्त किया गया।

श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब : मेजर जनरल कुलदीप सिंघ (बराड़) को श्री दरबार साहिब पर हमले की अगुआई करने का कार्य सौंपा गया था। फौज की पांच पलटनों-- पहली, दूसरी, दसवीं, ग्यारहवीं तथा पंद्रहवीं को श्री दरबार साहिब समूह पर हमले के लिए तैनात किया गया। ये दसते फौज के बढ़िया लड़ाकू दलों से चुने गए थे। इसके अलावा सिखलाई प्राप्त कमांडो की दो बटालियन थीं जिन्होंने गहरे लाल रंग वर्दी पहनी हुई थी, सिर पर गहरे काले रंग के लोह टोप पहने हुए थे, ताकि रात के अंधेरे में नज़र न आएं। सभी कमांडोज़ ने बुल्ट प्रूफ जैकिट पहनी हुई थी। १९८४ ई के फौजी हमले में श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब पर ५०० गोलियों के सुराख लगे जिनमें से ३८० गोलियों के निशान सोने के पतरों पर लगे थे। केवल श्री दरबार साहिब की इमारत के नुकसान का अंदाज़ा १०,००,००० रुपए लगाया गया।

मेजर जनरल जे. एस. (जसवाल) को श्री अमृतसर, बटाला तथा गुरदासपुर में फौजी कार्यवाही का चार्ज संभाला गया था।

श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के चारों तरफ अर्द्ध-सैनिक सुरक्षा बलों तथा फौजी दलों ने काफी समय पहले घेराबंदी करनी शुरू कर दी थी तथा हर आने-जाने वाले यात्री की तलाशी ली जाती थी। सी. आर. पी. एफ. के सिपाहियों द्वारा बिना कारण तंग-परेशान भी किया जाता था। संगत श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व मनाने के लिए इकट्ठा हो रही थी। १ जून, १९८४ ई को पूरे पंजाब में एक ही समय पर कर्फ्यू लगा दिया गया तथा १२:४० बजे श्री दरबार साहिब की तरफ गोलाबारी शुरू कर दी गयी। इस गोलाबारी से कई यात्री शहीद हो चुके थे। यह गोलाबारी देर रात तक चलती रही। फौज की इस कार्यवाही की शिकायत करने के लिए जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. अबिनाशी सिंघ, सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. (संत) हरचंद सिंघ लौंगोवाल, अध्यक्ष, शिरोमणि अकाली दल द्वारा गवर्नर पंजाब तथा भारत के राष्ट्रपति से टेलीफोन पर बात करने की कोशिश की गयी परंतु फौज द्वारा टेलीफोन लाइनें बंद कर दी गयी थीं तथा किसी के साथ भी तालमेल नहीं हो सका। २ जून को और फौज आ गयी तथा गोलाबारी होती रही। ३ जून को श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व था। फौज द्वारा सुबह ६ बजे से १०:०० बजे तक कर्फ्यू में ढील

कर दी गई जिस कारण बहुत सारी संगत श्री दरबार साहिब पहुंच गयी। अचानक ही सख़्ती करते हुए फौज द्वारा कर्फ़्यू लगा दिया गया जिसके कारण श्री दरबार साहिब के दर्शन-स्नान करने आए श्रद्धालु अंदर रहने के लिए मज़बूर हो गए। ३ जून को अचानक सारा पंजाब फौज के हवाले कर दिया गया तथा फौजियों को खुली छूट दे दी गयी कि वे किसी को भी जान से मार सकते हैं। फौज ने सारे पंजाब की आवाजाही पर पाबंदी लगा दी। श्री अमृतसर की टेलीफोन एवं बिजली-सेवा बंद कर दी गयी ताकि श्री अमृतसर के बारे में दुनिया को कुछ भी पता न चले। ४ जून को फिर फौज की तरफ से श्री हरिमंदर साहिब कांप्लेक्स पर चारों ओर से गोलाबारी हो रही थी। स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल पर बुरी तरह से गोलियों की बौछाड़ की जा रही थी। ५ जून को गोलाबारी और तेज हो गयी। आए यात्रियों के लिए लंगर-पानी का कोई प्रबंध नहीं हो सका। श्री गुरु रामदास सराय के अंदर पानी वाली टंकी को फौज ने बम मारकर उड़ा दिया था। गोलाबारी और तेज होती जा रही थी। फौज घंटा-घर की तरफ से जूतों सहित श्री दरबार साहिब के अंदर दाख़िल हो गयी। श्री गुरु रामदास सराय की तरफ से गेट तोड़कर फौज तोपों-टैंकों से लैस होकर अंदर दाख़िल हो गयी।

श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर : ५ जून को श्री अकाल तख़्त साहिब पर तोपों तथा टैंकों से हमला कर दिया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब की इमारत आग की लपटों की लपेट में आ चुकी थी। फौज द्वारा गिरफ्तार किए गए यात्रियों के धार्मिक चिन्ह 'कृपाणें' उतारकर नालियों में फेंकी गईं। अगर कोई पानी मांगता तो उसे राइफलों के बट्टों के साथ पीटा जाता। फौज द्वारा बच्चों व बुजुर्गों का भी लिहाज़ नहीं किया जाता था। एक छोटा-सा बच्चा, जिसकी मां गोली लगने के कारण मर गयी, वह मां! मां! कहता रो रहा था। एक फौजी ने उसको उसकी मरी हुई मां की लाश पर लिटाकर उस पर गोलियों की बौछाड़ कर दी। चारों तरफ जहां तक नज़र जाती थी, लाशें ही लाशें नज़र आती थीं। कमरों में से खून बहकर बरामदों तक आ रहा था। फौज वाले कमरों में बाहर से गरनेड फेंक रहे थे तथा दिल दहलाने वाला चीख-चिहाड़ा चारों तरफ सुनाई दे रहा था। बाद में इन कमरों में से लाशें उठाकर बिना किसी को बताए फौज की निगरानी तले अंतिम संस्कार कर दिया गया।

इस फौजी हमले के दौरान श्री दरबार साहिब कांप्लेक्स में स्थित पावन स्थान श्री अकाल तख़्त साहिब का २ करोड़, श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब का १० लाख, दर्शनी ड्योढ़ी का २० लाख, तोशेखाने में पड़ी वस्तुओं का २०० करोड़, सिक्ख रेंफ्रेंस लाइब्रेरी का ५० लाख, केन्द्रीय सिक्ख संग्रहालय का १० लाख, परिक्रमा का २ करोड़, श्री गुरु रामदास लंगर हाल का १५ लाख, अकाल रैस्ट हाऊस का १० लाख, श्री गुरु रामदास सराय का १० करोड़, स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल का ५० करोड़, श्री गुरु नानक निवास का २० करोड़, बारांदरी की इमारत का ५० लाख, गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल का २५ लाख रुपए का अंदाज़न नुकसान होने का विवरण इकट्ठा किया गया।

गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी : गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी की नौ-मंज़िला सुंदर इमारत गुरुद्वारा माता कौलां जी के पास स्थित है। यह स्थान छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साहिबज़ादा बाबा अटल राय जी की याद में सुशोभित है। जून, १९८४ ई में हुए हमले के दौरान इस गुरुद्वारा साहिब पर भी फौज की गोलियों तथा बमों से लगी आग से अंदाज़न ५ करोड़ का नुकसान हुआ। इस गुरुद्वारा साहिब से

लगते रिहायशी क्वार्टरों में भी फौज द्वारा जमकर लूटमार की गयी तथा गोलियों-बमों से नुकसान पहुंचाया गया। इसका अंदाज़ा माहिरों द्वारा अंदाज़न ५० लाख रुपए लगाया गया है। इन गुरुद्वारों के साथ लगते दो पावन सरोवरों की भी भारी तोड़-फोड़ की गयी जिससे लगभग २ करोड़ का नुकसान होने का अंदाज़ा लगाया गया।

बुंगा रामगढ़िया : श्री दरबार साहिब कांप्लेक्स में मिसलों के समय की सुंदर इमारत बुंगा रामगढ़िया सुशोभित है। इस इमारत के ऊंचे बुर्ज दूर से ही दीख पड़ते हैं। इन बुर्जों पर फौज का कहर जमकर टूटा तथा ऐतिहासिक बुंगा तहस-नहस कर दिया गया। इस पर लगे गोलियों व गोलों के निशान अपनी कहानी खुद बता रहे हैं। इस ऐतिहासिक इमारत का ५० लाख रुपए का अंदाज़न नुकसान रिकार्ड किया गया। सिंधियों के बुंगे का २० लाख रुपए का अंदाज़न नुकसान हुआ।

शहीद मार्किट की दुकानों पर, श्री दरबार साहिब तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िमों के ६७ रिहायशी क्वार्टरों पर भी फौज ने तलाशी लेने के बहाने तोड़-फोड़ एवं लूटमार की। इसके नुकसान का अंदाज़ा लगभग ४० लाख रुपए रिकार्ड किया गया।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुख्य कार्यालय की फौज ने बहुत बुरी तरह से तोड़-फोड़ की। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं छोड़ी जो दोबारा काम आ सके। कार्यालय में पड़ी लाखों रुपए की स्टेशनरी, फर्नीचर एवं धर्म प्रचार कमेटी की गाड़ियों को आग लगाकर जला दिया गया। इस नुकसान की अंदाज़न कीमत १ करोड़ ३७ लाख रुपए रिकार्ड की गयी।

श्री दरबार साहिब, तरनतारन : पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने दिल्ली-लाहौर शाह रोड पर तरनतारन शहर की स्थापना की तथा श्री दरबार साहिब एवं पावन सरोवर का निर्माण करवाया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य-काल के दौरान श्री दरबार साहिब, तरनतारन की ऐतिहासिक इमारत को नया रूप देकर सुंदर मीनाकारी करवाई। श्री दरबार साहिब, तरनतारन श्री अमृतसर शहर से २४ किलोमीटर दूर स्थित प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। १६ जून, १९८४ ई रात ८:३० बजे गुरुद्वारा साहिब को चारों तरफ से घेरा डाल लिया। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य गेट वाली तरफ से फौज ने स्पीकर द्वारा अनाऊंसमेंट करनी शुरू कर दी कि जो भी कोई गुरुद्वारा साहिब के अंदर है वह हाथ खड़े करके बाहर आ जाए। गुरुद्वारा साहिब से सारी संगत हाथ खड़े करके बाहर आ गयी। केवल शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िम व कुछ कार सेवा वाले सेवादार ही अंदर रह गए। उस समय गुरुद्वारा साहिब के मैनेज़र स. गुरदीप सिंघ भी गुरुद्वारा साहिब में मौजूद थे। रात को किसी को भी बाहर से अंदर और अंदर से बाहर नहीं आने दिया। अमृत वेले मैनेजर साहिब ने गुरुद्वारा साहिब की सफाई की सेवा सेवादारों से करवाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया। फौज ने १७ जून को सुबह अमृत वेले चार बजे लोगों में दहशत भरने के लिए पहली गोली चलाई जिससे सेवादार भाई दरशन सिंघ बहुत ही मुश्किल से बचा। गोली उसके बहुत ही पास से गुज़रकर गयी। इसके बाद चारों तरफ से कई गोलियां फौज ने चलाईं। इस गोलाबारी के दौरान ही मीनार के पास एक व्यक्ति को गोली लगी जो मौके पर ही दम तोड़ गया। १८ जून को फौज ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के डेढ़ दर्जन के लगभग सेवादारों को गिरफ्तार करके उनकी बुरी तरह से मारपीट की। उन सबके बाजू पीछे बांधकर कई घंटे बैठाए रखा और फौज वाले उनको गंदी गालियां निकालकर बेइज्जत करते रहे। बाद में फौज इनको मिल्टरी कैंप में ले गयी।

इनमें से कई सेवादार कई-कई महीने की जेल काटकर रिहा हुए।

फौज का घेरा लगभग चार दिनों तक चलता रहा। फौज ने सारे गुरुद्वारा साहिब की तलाशी ली किंतु उनको कोई हथियार न मिला। फौज का मंतव्य तो केवल सिक्खों के धार्मिक स्थानों का अपमान करना व उनकी भावनाओं से खिलवाड़ करना था।

गुरुद्वारा जन्म स्थान बाबा बुड्ढा जी, कत्थूनंगल : यह गुरुद्वारा साहिब श्री अमृतसर से १८ किलोमीटर की दूरी पर बटाला रोड पर गांव कत्थूनंगल में मौजूद है। इस गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कार-सेवा द्वारा बाबा प्रेम सिंघ ने कई वर्षों की मेहनत तथा संगत के सहयोग से बाबा बुड्ढा जी की याद में बड़ी श्रद्धा-भावना से करवाया था। जून, १९८४ ई में फौज श्री अकाल तख़्त साहिब के हमले से निपटकर लोगों को डराने के लिए ये नये ढंग-तरीके अपना रही थी कि लोग फौज द्वारा किए जुल्म के खिलाफ एकजुट न हो जाएं। जून, १९८४ ई में फौज ने अचानक ही सुबह गुरुद्वारा जन्म स्थान बाबा बुड्ढा जी को घेरकर चारों ओर टैंक व तोपें लगा दीं। ऐसे लग रहा था जैसे फौज गुरुद्वारा साहिब की पूरी इमारत को तहस-नहस कर देगी। चारों ओर दहशत का माहौल था। फौजी अफसर व फौज जूतों समेत गुरुद्वारा साहिब के अंदर दाख़िल होकर शोर मचा रही थी। फौज बाबा प्रेम सिंघ को गुरुद्वारा साहिब में आतंकवादी छिपे होने के बारे में कहकर धमकाने लगी। बाबा जी ने बड़ी नम्रता के साथ फौज के अधिकारियों को बताया कि गुरुद्वारा साहिब में मौजूद नौजवान सेवादार हैं। इनमें से कोई भी खाड़कू नहीं है। फौज ने बाबा जी की कोई बात न सुनी और अपनी मनमर्ज़ी से सारे गुरुद्वारा साहिब के अंदर तलाशी लेने लग गयी। जब कोई एतराज़योग्य वस्तु न मिली तो शाम को फौज को खाली हाथ वापिस आना पड़ा। फौज द्वारा जूतों समेत तथा अन्य कई ढंगों से गुरु-घर के किये गये अपमान से संगत की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची तथा उनके हृदय छलनी हो गए।

गुरुद्वारा बाउली साहिब, गोइंदवाल साहिब : ६ जून, १९८४ बुधवार वाले दिन सुबह ९ बजे के लगभग गुरुद्वारा साहिब के मैनेजर स. बली सिंघ अपने नित्यक्रम के अनुसार जब कार्यालय पहुंचे तो वहां सात-आठ व्यक्ति-- स. बलबीर सिंघ, डॉ. लाभ सिंघ, भाई रणजीत सिंघ आदि उप प्रबंधक स. गुरदिआल सिंघ के पास बैठे हुए थे जो रात को श्री अमृतसर से आ रही बम-धमाकों की अवाज़ों तथा कर्फ्यू के बारे में बातें कर चिंताग्रस्त हो रहे थे तो उसी समय अचानक दर्शनी ड्योढ़ी की तरफ से फौज की गाड़ियों की आवाज़ आनी शुरू हो गयी। देखते ही देखते फौज ने गुरुद्वारा साहिब को चारों तरफ से घेरकर राईफलें तान लीं। चारों तरफ माहौल दहशतज़दा हो गया। फौजियों ने गुरुद्वारा साहिब को निशाना बनाकर लाइट मशीनगनें तान लीं। मैनेजर साहिब कार्यालय से बाहर आकर फौज के कमांडर के पास गए तो फौजी कमांडर ने गुरुद्वारा साहिब में घुसपैठिए छिपे होने की बात करते हुए गुरुद्वारा साहिब की तलाशी लेने के बारे में कहा। मैनेजर साहिब ने गुरुद्वारा साहिब के अंदर किसी भी तरह के एतराज़योग्य व्यक्ति होने से इंकार किया किंतु फिर भी फौज ने बड़े ही करूर ढंग से गुरुद्वारा साहिब की तलाशी ली। इस दौरान गुरुद्वारा साहिब की मर्यादा में विघ्न पड़ा जिससे सिक्ख संगत की भावनायों को गहरी चोट पहुंची।

तख़्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा) : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब के घेरे से निकलकर रास्ते में अनेकों मुसीबतों का मुकाबला करते हुए जनवरी,

१७०६ ई. में तलवंडी साबो की धरती को अपने चरणों से निवाजा। इस पावन स्थान पर गुरु जी ने भाई मनी सिंघ जी से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी दर्ज करवाकर संपूर्णता बख़्शी। इस पावन ऐतिहासिक स्थान को सिक्खी का पांचवां तख़्त होने का गौरव हासिल है। जून, १९८४ ई में यहां भी फौज द्वारा घोर अपमान किया गया।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, जींद : जींद सिक्खों की प्रसिद्ध रियासत का प्रधान शहर रहा है। इस शहर को पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी व नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त है। उनकी याद में पावन स्थान जींद में सुशोभित है। जून, १९८४ ई में फौजी हमले के दौरान यह स्थान भी फौजी कहर से बच नहीं सका।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, धमतान : धमतान पंजाब के संगरूर ज़िले की हद के साथ लगते हरियाणा प्रांत का गांव है। इस गांव की उत्तर दिशा की ओर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब बांगर से आगरा को जाते समय इस स्थान पर ठहरे थे। यहां के निवासी दग्गो ज़िमींदार ने गुरु जी की श्रद्धा-भावना से सेवा की थी। इस स्थान पर गुरु जी ने भाई मीहां जी को नगाड़ा, निशान तथा लंगर चलाने के लिए लोह (तवी) की बख़्शिश की थी जिससे 'मीहांशाही संप्रदाय' चली थी।

महाराजा करम सिंघ ने गुरु जी की आमद की याद में गुरुद्वारा साहिब की इमारत तैयार करवाई। यहां जून, १९८४ में फौज ने घेराबंदी करके गुरु-घर की तलाशी ली और कीमती सामान साथ ले गयी।

गुरुद्वारा श्री नानकिआणा साहिब, संगरूर : श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पावन-चरण स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा श्री नानकिआणा साहिब मालवा के प्रसिद्ध शहर संगरूर के साथ लगते गांव में सुशोभित है। श्री गुरु नानक देव जी पूरब की प्रचार-यात्रा के समय यहां आए थे और भाई मरदाना जी उनके साथ थे।

छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी अकोई साहिब से यहां आए थे। श्री गुरु नानक देव जी की याद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने एक थड़े का निर्माण करवाया। बाद में राजा रघुबीर सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब की नयी इमारत बनवाई। जून, १९८४ ई. में गुरुद्वारा साहिब की इमारत को घेरा डालकर भीतर काम करते सभी मुलाज़िमों को बंदी बना लिया गया, जिनको बाद में रिहा किया गया।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री मुकतसर साहिब : गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री मुकतसर साहिब दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त वह स्थान है जहां गुरु साहिब ने पीछा कर रही मुगल फौज का डटकर मुकाबला किया था। इस युद्ध के दौरान श्री अनंदपुर साहिब से बेदावा देकर चले गए सिंघों ने मुगल फौज का डटकर मुकाबला करके शहीदियां प्राप्त कीं तथा गुरु साहिब से मुक्त होने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। ३ जून, १९८४ ई को भारतीय फौज ने इस गुरुद्वारा साहिब को चारों ओर से घेरा डालकर गोलीबारी की। इस दिन पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी दिवस था और कर्फ्यू में छूट मिलने के कारण संगत गुरु जी का शहीदी दिवस मनाने के लिए गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठा होना शुरू हुई थी। संगत के अलावा गुरुद्वारा साहिब में ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी तथा गुरुद्वारा साहिब की हदूद के अंदर रहते मुख्य ग्रंथी तथा अन्य कर्मचारी-परिवार भी थे। गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब फौजी कार्यवाही का मुख्य केंद्र था। सारे गुरुद्वारा साहिब के गिर्द एक ऊंची दीवार

बनी हुई थी, जिसमें आठ दरवाज़े संगत के अंदर-बाहर जाने के लिए बने हुए थे।

४ जून को फौज ने गुरुद्वारा साहिब पर हमला कर दिया। तीन बजे के लगभग लाऊड स्पीकर में फौज द्वारा सूचना दी गई कि जो भी कोई गुरुद्वारा साहिब की इमारत में मौजूद है वह बाहर आ जाए नहीं तो सामने आते ही गोली मार दी जाएगी। पौने चार बजे के लगभग चार नंबर गेट से गुरुद्वारा तंबू साहिब की तरफ सरोवर के दूसरी तरफ गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब की दिशा में तोप के गोले चलने शुरू हो गए। एक गोला अटारी में लगा जिससे चारों तरफ आग ही आग फैल गई और अटारी गिर गई। बारांदरी तथा गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब में भी गोले लगने शुरू हो गए। निशान साहिब को सहारा देने के लिए बनाई गई अटारी गोलियों से ढह-ढेरी हो गई। एक-दो गोले ऐतिहासिक वट वृक्ष में भी लगे जिससे वह धरती पर गिर पड़ा। गोलों की आग इतनी तेज थी कि लोहे के मोटे गाडर भी पिघल गए। गुरुद्वारा साहिब में मौजूद यात्री अंदर ही फंसे रह गए।

गुरुद्वारा साहिब में मौजूद रिहायशी क्वार्टरों में से मुलाज़िमों के परिवार दीवार फांदकर बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे कि फौज ने उनको दबोच लिया। मुख्य ग्रंथी ज्ञानी गुरबचन सिंघ की तरफ फौज द्वारा एक ब्रस्ट भी मारा गया जिससे उनके पीछे पटवारी धरम सिंघ के घर में खड़ी भैंस मर गई। उस समय ही एक दर्ज़ी गुल्लू जो अपने घर के आगे खड़ा था, फौजियों की गोलियों का शिकार हो गया। उसका अंतिम संस्कार सुबह गुरुद्वारा तंबू साहिब के पीछे निहंग सिंघों के डेरे में किया गया। जब फौज ने गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द हमला किया तो किसी ने एक देसी बम उन पर फेंक दिया जिससे फौज का एक जवान मारा गया और एक ज़ख़्मी हो गया। एक नौजवान ने मारे गए फौजी की सटेनगन जा उठाई पर फौज ने उसको वहीं गोलियों से भून दिया। दिन चढ़ने तक गोलीबारी बंद हो गई। जो श्रद्धालु अंदर पकड़े गए उनके कपड़े उतरवाकर दोपहर के समय तपते फर्श पर लिटाया गया तथा कई प्रकार की यातनायें दी गयीं। इस समय गांव मौजेवाल का एक साठ वर्षीय बुजुर्ग स. गुरदीप सिंघ गुरुपर्व पर आया हुआ था। उसने बाजू में एक थैला लटकाया हुआ था। फौजियों ने उसे हाथ ऊपर करके आने का इशारा किया। उस बुजुर्ग को पहले तो समझ न आया पर जब समझ आया तो वो हाथ ऊपर करने लगा। उसका थैला नीचे गिरने लगा। उसने थैले को गिरने से बचाने के लिए दूसरा हाथ थैले को डाला तो फौजियों ने समझा कि वह बम फेंकने लगा है और उस पर ब्रस्ट मारकर उसका सर उड़ा दिया। इसी तरह एक और निहंग सिंघ को गोलियां मारकर मार दिया गया।

फौज ने चार सौ के लगभग आदमियों में से ६२ आदमियों को अलग कर लिया जिनको रात होने से पहले एजूकेशन कॉलेज में ले जाकर बंद कर दिया गया। इनमें से या तो गुरुद्वारा साहिब के कर्मचारी थे या फिर दर्शन करने आए श्रद्धालु थे। इनमें से सबसे बड़ी उम्र का ७० वर्ष का बुजुर्ग लाल सिंघ था और सबसे छोटी उम्र का १२ वर्ष का बच्चा गुरपाल सिंघ था। इस घटना में गुरुद्वारा साहिब का स्टोर कीपर स. बलदेव सिंघ परिक्रमा में ही प्यास न सहन करता हुआ शहीद हो गया।

इस फौजी हमले के दौरान सरब लोह का ऐतिहासिक निशान साहिब, जिसको महाराजा नाभा ने अपने घर पुत्र हीरा सिंघ का जन्म होने की खुशी में इंग्लैंड से मंगवाकर सुशोभित किया था और उन दिनों उस पर ७०,००० रुपए खर्च आया था तथा इसको खड़ा करने के लिए एक बहुमंज़िला अटारी बनाई गई थी, इस अटारी के

साथ मोटे लोहे के सरीए डालकर निशान साहिब को सहारा दिया गया था; नष्ट हो गया।

गुरुद्वारा साहिब बीबी काहन कौर, मोगा : मेजर जनरल शमशेर सिंघ को तरनतारन, पट्टी, लुधियाना, फिरोज़पुर तथा ज़ीरा का चार्ज सौंपा गया था। २० अप्रैल, १९८४ ई से २६ अप्रैल, १९८४ ई तक मोगा में तीन गुरुद्वारों को घेरा डालकर सारे शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया। २६ अप्रैल को गुरुद्वारा साहिब बीबी काहन कौर, मोगा, जो रेलवे फाटक के पास सुशोभित है, पर ५.०५ बजे फौज द्वारा भारी बमबारी की गई, जिसके परिणामस्वरूप ८ सिंघ शहीद हो गए। एक सिंघ, जो आंखों से देख नहीं सकता था, गुरुद्वारा सिंघ सभा में शहीद हुआ। २६ अप्रैल को गुरुद्वारा साहिब बीबी काहन कौर, मोगा के चारों और कर्फ्यू लगा दिया गया जो ३० अप्रैल तक जारी रहा। गुरुद्वारा साहिब के लंगर में से राशन खत्म हो गया। गुरुद्वारा साहिब में जो संगत थी उसका भूख के कारण बुरा हाल होने लगा। मोगे की बीबी करतार कौर ७० महिलाओं को साथ लेकर गुरुद्वारा साहिब में लंगर पहुंचाने गई तो फौज ने उसको घेर लिया और आगे नहीं जाने दिया। बीबी करतार कौर ने धरना लगा दिया। शहर के एस. डी. एम. ने फौज वालों और महिलाओं को समझाकर फैसला करवाकर गुरुद्वारा साहिब में लंगर पहुंचाया तथा कर्फ्यू खत्म करवाया।

१ जून, १९८४ ई को गुरुद्वारा साहिब को फिर घेरा डाला गया और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी पर्व पर नगर कीर्तन न निकालने दिया। गुरुद्वारा साहिब का बिजली-पानी बंद कर दिया गया तथा फौज द्वारा गुरुद्वारा साहिब पर गोलाबारी शुरू कर दी गयी। इस हमले में गांव अजीतवाल का सरपंच स. अमरजीत सिंघ, धर्मकोट का बिट्टू और महेशरी गांव के कुछ सिंघ शहीद हो गए।

गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला : जनरल गुरदिआल सिंघ को पटियाला, संगरूर, बठिंडा, रोपड़ तथा फरीदकोट का चार्ज दिया गया था। इसके साथ तैनात ब्रिगेडियर हरपाल सिंघ चौधरी, लेफ्टिनेंट कर्नल नंद कुमार गुप्ता, मेजर जे. एस. कथूरिया, कैप्टन अमरजीत सिंघ (संधू) तथा एक अन्य कैप्टन (रंधावा) ने पटियाला के गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब पर खूनी हमले की अगुआई की।

गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त पावन स्थान है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब कश्मीरी पंडितों की विनती पर शहीदी देने के लिए दिल्ली को जाते हुए नवाब सैफ़ ख़ान की विनती पर यहां पहुंचे थे। गुरुद्वारा साहिब श्री दूख निवारण साहिब सन् १९३० ई में अस्तित्व में आया परंतु श्रद्धालु बहुत देर पहले से ही इस स्थान को नत्मस्तक होकर खुद को भाग्यवान महसूस करते आ रहे थे। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी इस स्थान पर पहुंचे थे, उस समय पटियाला इस रूप में नहीं था। फूलकिया स्टेट्स गजटीयर १९०४ ई के अनुसार पटियाला फूलकिया रियासत में से एक है। सन् १७६२ ई में यह वास्तविक रूप धारण कर गया था परंतु इसके अस्तित्व को १७६४ ई में मानना ज्यादा सही होगा जब सिक्खों ने सरहिंद के किले पर कब्ज़ा कर लिया था तथा अपने-अपने इलाकों की बांट कर ली थी। गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला शहर में पटियाला-सरहिंद सड़क पर स्थित है। स्थानीय रिवायत के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी सन् १६७५ ई में दूसरी बार यहां विराजमान हुए थे जब वे सैफ़ाबाद के किले में टिके हुए थे, जिसको उनके नाम पर बहादुरगढ़ कहा जाता है। गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब वाले स्थान पर एक टोभा तथा

वट (बोहड़) के वृक्ष दिखाई देते थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के इस स्थान पर आने के समय यह स्थान गांव लहिल की जूह में पड़ता था। इस पावन स्थान पर गुरु जी वट वृक्ष के नीचे विराजमान हुए थे। इस गुरुद्वारा साहिब में हर वर्ष माघ सुदी पंचमी को बसंत के मेले का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हर महीने की पंचमी को संगत यहां पावन सरोवर में स्नान करने के लिए आती है।

जून, १९८४ ई में पंचमी वाले दिन स्नान करने के लिए गांवों-शहरों से संगत आई हुई थी। कुछ समय बाद ही शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया। सारा पटियाला शहर फौज द्वारा सील कर दिया गया। रात को गुरुद्वारा साहिब के मुख्य ग्रंथी ने सारी संगत को फौज द्वारा किए गए एलान के बारे में अवगत करवाया कि कोई भी इधर-उधर नहीं जा सकता तथा गुरुद्वारा साहिब से बाहर जाने वाले को गोली मार दी जाएगी। गुरुद्वारा साहिब में भारी संख्या में संगत थी। सराय में तथा सरोवर के किनारे पर कोई जगह खाली नहीं थी, हर जगह संगत आराम कर रही थी। हर एक के चेहरे पर खौफ और गुस्सा था। सुबह होने तक गुरुद्वारा साहिब में काफी संगत इकट्ठी हो चुकी थी और लंगर हॉल में भी संगत बढ़ रही थी। लंगर में दूध खत्म हो चुका था जिसके कारण छोटे बच्चों के लिए मुश्किल खड़ी हो रही थी। संगत में परेशानी बढ़ती जा रही थी।

४ जून सोमवार को रात १२ बजे के लगभग पहली गोली चली तथा उसके बाद लगातार ढाई बजे तक गोली चलती रही। फौज ने गुरुद्वारा साहिब के पीछे की तरफ, जहां फैक्टरी-क्षेत्र है, की तरफ से दीवार फांदकर गुरुद्वारा साहिब के अंदर मोटर पंप पर कब्ज़ा कर लिया तथा अंदर आकर बोरियों के चार अस्थाई मोर्चे कायम कर लिए। कुछ फौजी पानी की टैंकी पर चढ़कर बैठ गए तथा लंगर हाल की तरफ देखने लगे। सरोवर के दूसरी तरफ वाले क्वार्टर्ज़ को गुरुद्वारा साहिब से काट दिया गया। संगत में भगदड़ मच गयी थी। चारों ओर हाहाकार और शोरगुल मच गया था। फौज इतना शोर मचा रही थी कि किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। फौज ने एक-एक कमरे का दरवाज़ा खटकाकर अंदर रहते मुलाज़िमों तथा उनके परिवारों के हर सदस्य, यहां तक कि औरतों, बच्चों को भी घसीट-घसीटकर बाहर निकाल लिया। फौज ने एक हज़ार फौजियों के साथ सारे गुरुद्वारा साहिब पर कब्ज़ा कर लिया था। फौज ने सारी संगत में से नौजवानों को अलग कर लिया। उन्हें संगत के सामने ही बटों तथा बंदूकों के साथ पीटा गया और किसी अनजान जगह पर भेज दिया गया। शेष संगत को वहीं बैठे रहने के लिए कहा गया। किसी को पेशाब तक करने नहीं जाने दिया। मिलटरी वाले हरेक को पूछते, "वो कमरा कहां है जिसका कोई दरवाज़ा नहीं? वो सुरंग बताओ जिसके रास्ते गंदा लोक आता है।" इस समय गुरुद्वारा साहिब के मैनेजर स. अजैब सिंघ ने उठकर टूटी-फूटी हिंदी में बताने की कोशिश की कि "इनमें से बहुत सारे शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िम हैं तथा शेष दूर-नज़दीक गांवों से पंचमी मनाने के लिए आई संगत है। इनमें से कोई भी खाड़कू नहीं है। मुलाज़िमों के कमरों में से जो हथियार पकड़े गए हैं वो खज़ाने की रक्षा के लिए हैं और हर एक हथियार का लाइसेंस है।" मैनेजर साहिब अभी बता ही रहे थे कि फौज का एक सरदार ब्रिगेडियर आ गया। उसने मैनेजर साहिब से पूछा कि कौन कहां है। उसने गारद साथ भेजकर निवासों की तरफ भेज दिया और कहा कि दिखाएं कि कौन-कौन मारा गया है और साथ ही निवासों की तलाशी लें। मिलटरी वाले

मैनेजर के साथ कारबाईनें तानकर चल पड़े। गोलियों द्वारा मारे गए लोगों की लाशें जगह-जगह टेढ़ी-मेढ़ी पड़ी थीं। इनमें से दो लाशें गुरुद्वारा साहिब के अस्थाई मुलाज़िमों स. सागर सिंघ तथा स. जगजीत सिंघ की थीं। एक भिखारी, एक सूरमा सिंघ, तीन बुजुर्ग औरतों की लाशें भी पड़ी थीं। फौज द्वारा अपने पास नोट किए कमरा नं. ४८, ४९ तथा ६३ की पूरी तरह तलाशी लेने के बाद वहां से जो कागज़-पत्र मिले बांधकर एक तरफ रख दिए गए तथा मृतकों का विवरण तैयार किया गया। यह सिलसिला शाम के ४ बजे तक चलता रहा। इसके बाद फौज वाले मैनेजर साहिब को श्री दरबार साहिब की तरफ ले गए। गुरुद्वारा साहिब में स्थित पीपल के पास, जहां श्री दरबार साहिब को सीढ़ियां जाती हैं। वहां चार लाशें और पड़ी थीं, जिनमें से एक लाश सरहिंद के बी. डी. ओ. के लड़के जसदेव सिंघ, एक बाबा रतन सिंघ, एक माता तथा एक अन्य बुजुर्ग सिंघ की थी। ये सारे निशान साहिब के पास फौज का ब्रस्ट लगने से शहीद हुए बताए गए। साइकिल स्टैंड में गुरुद्वारा साहिब का सारा स्टाफ, ग्रंथी, रागी सिंघ सब रस्सियों से बुरी तरह बांधकर बैठाए गए थे। सारे सिंघों के सर नंगे और बाल खुले हुए थे।

एक सरदार ब्रिगेडियर आया और उसने मैनेजर साहिब से पूछा कि श्री दरबार साहिब कितने बजे खुलता है। मैनेजर साहिब के बताने पर कि श्री दरबार साहिब प्रतिदिन सुबह दो बजे खुलता है, किंतु अब तो पांच बज चुके हैं। उस ब्रिगेडियर ने बिना गारद के मैनेजर को बाहर भेजकर मुख्य ग्रंथी को बुलाकर गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रकाश करवाया। ब्रिगेडियर ने जिन मुलाज़िमों के पास पहचान पत्र थे, उनको छोड़ने का हुक्म दिया।

फर्श पर जगह-जगह खून के निशान थे। मानवीय खून का गाढ़ा गारा (कीच) बन चुका था। गुरुद्वारा साहिब के रोशनदानों के शीशे टूट गए थे। दीवारों पर जगह-जगह गोलियों के निशान थे। दूसरे दिन सुबह आठ बजे सारी संगत को पंजाब पुलिस के हवाले कर दिया गया। गुरुद्वारा साहिब के बाहर सड़क पर टैंकों के भारी पहियों के निशान थे। फौज द्वारा मुलाज़िमों के कमरों की तलाशी लेते समय जो कुछ भी हाथ लगा वह उठा लिया गया। मुलाज़िमों के सूटकेस बंदूकों की संगीनों से फाड़ दिए गए। फौज द्वारा उठाए गए सामान में गुरुद्वारा साहिब के खज़ाने में से लिए २१८१ रुपए, क्वार्टरों में से १६८१३ रुपए, ३१ घड़ियां, १ टाईम पीस, ३ टेप रिकार्डर, ५ ट्रांस्जिस्टर, १५ तोले सोने के गहने तथा ८ तोले चांदी के गहने थे।

गुरुद्वारा चरन कंवल साहिब, जींदोवाल (बंगा) : मेजर जनरल तरलोक सिंघ को दुआबा क्षेत्र का चार्ज दिया गया था। नवांशहर से १२ किलोमीटर जलंधर की तरफ जलंधर-चंडीगढ़ की मुख्य सड़क पर बसा हुआ बंगा मुख्य कसबा है। इस कसबे में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा चरन कंवल साहिब सुशोभित है। जून, १९८४ ई में फौज ने इस स्थान को घेरा डालकर अपने कब्ज़े में ले लिया। यह घेरा निरंतर कई दिनों तक डाले रखा तथा गुरुद्वारा साहिब में सेवा करते रागी एवं पाठी सिंघों की मार-पिटाई करने के उपरांत उनको जेल भेजकर उन पर मुकद्दमा चलाया गया।

गुरुद्वारा भट्ठा साहिब, रोपड़ : गुरुद्वारा भट्ठा साहिब, रोपड़ दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पावन चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान है। इस पावन स्थान को दूर-दूर से संगत नत्मस्तक होने के लिए आती है। ३ जून को पंजाब में कर्फ्यू के दौरान सी. आर. पी. एफ. के जवान

आधुनिक हथियारों से लैस होकर दो ट्रकों में सवार होकर आए थे। इनमें से कुछ सिपाही गुरुद्वारा साहिब की तरफ निशाना कर पुज़ीशन लेकर खड़े थे और कुछ सिपाही गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द गश्त करने लग गए थे। गुरुद्वारा साहिब में मौजूद संगत तथा यात्रियों को गुरुद्वारा साहिब से बाहर आने से मना कर दिया गया। ४ जून, १९८४ ई को फौज के दो हज़ार गिनती के लगभग फौजी भी वहां पहुंच गए। फौज के आते ही गुरुद्वारा साहिब की तरफ मुंह करके मशीनगनें चारों ओर तैनात कर दीं। शाम तक फौज के टैंक भी पहुंच गए। इस समय गुरुद्वारा साहिब में ५६ के लगभग व्यक्ति थे जो कर्फ्यू के कारण यहां ही फंस गए थे। इनमें से १७ गुरुद्वारा साहिब के कर्मचारी थे, ५ अखंड पाठी तथा ऑल इंडिया सिक्ख स्टूडेंट्स फेडरेशन, रोपड़ का ज़िला अध्यक्ष स. सरबजीत सिंघ व अन्य यात्री थे। गुरुद्वारा साहिब की तरफ से किसी किस्म का कोई विरोध नहीं किया गया था। फौज ने ६ जून की रात तक घेरा डाले रखा। ५ जून को रात १२ बजे के लगभग गुरुद्वारा साहिब के पीछे की तरफ से बिजली घर वाली दिशा से फौज ने दीवार तोड़ी और भीतर दाख़िल हो गयी। गुरुद्वारा साहिब में प्रवेश करने से पहले फौज द्वारा एक फायर भी किया गया। गोली की आवाज़ सुनकर सारी संगत श्री दरबार साहिब वाले कमरे में आ गई। इस कमरे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश था और पाठी सिंघ पाठ कर रहा था। फौज ने लंगर हाल की तरफ जाकर ललकारना शुरू कर दिया। आतंकवादियों का नाम लेकर गालियां निकालनी शुरू कर दीं और बेतहाशा गोलियां चलाना शुरू कर दीं, जिसके फलस्वरूप ६० वर्षीय बुजुर्ग स. हरनाम सिंघ को गोली लगने से उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गयी। गुरुद्वारा साहिब में एक हिंदू यात्री श्री कुलदीप कुमार भी गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया और चंडीगढ़ के पी. जी. आई अस्पताल में दम तोड़ गया। लंगर हॉल की तरफ से फौज को जो भी मिला उसको उसकी ही दसतार से बांध दिया और आंखों पर पट्टी बांध दी। इन सबको दफ्तर की तरफ कुएं के पास बैठा लिया। फौज के कर्मचारी हाल के कमरे में दाख़िल हुए और सबको बाहर आने के लिए कहा। सबको ध्यानपूर्वक देखकर नौजवानों को एक तरफ कर लिया लगभग २९ नौजवानों को हथकड़ियों से बांध लिया। जो बड़ी उम्र के थे उनको कुहनी के बल चलने के लिए कहा गया, घूंसों, और राइफलों के बटों से साथ पीटा गया। इस मार-पीट में गुरुद्वारा साहिब के रागी सिंघ भाई जोगिंदर सिंघ शहीदी प्राप्त कर गए। गुरुद्वारा साहिब के कर्मचारियों के कमरों की तलाशी ली गयी और उनके सामान की तोड़-फोड़ की गयी। तलाशी के दौरान स. सरबजीत सिंघ, ज़िला अध्यक्ष, सिक्ख स्टूडेंट्स फैडरेशन को गिरफ्तार कर लिया गया। फौज के कर्मचारी उसको बुरी तरह से पीटते तथा गालियां निकालते हुए हथकड़ियों से बांधकर ले गए।

सिक्खों जैसी शूरवीर एवं गौरवशाली कौम को सबक सिखाने या उसके अस्तित्व को मिटा देने के मंद इरादों से प्रेरित ये हमले सिक्ख मानसिकता से मनफी करने के बहुत प्रयत्न किए गए और किए जा रहे हैं परंतु स्थूल इतिहास को मिटाना कदाचित संभव नहीं होता। सिक्ख इतिहासकारों तथा निष्पक्ष कलमकारों को इस निकट-अतीतकालीन सिक्ख इतिहास को पूरी जांच करके, सही रिपोर्ट में लोगों के सामने पेश करना चाहिए ताकि सारी दुनिया में यह पता चल सके कि सिक्ख अभी भी अपने देश, धर्म, कौम की बेहतरी के लिए, कुर्बान होने के लिए दूसरी कौम के लोगों की तुलना में पहली कतार में खड़ा है।

गुरबाणी चिंतनधारा : ८१

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥

सोलहवीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने नाम की महिमा का गुणगान किया है कि किस प्रकार नाम समस्त जीवों, खंडों-ब्रह्मांडों, धर्म-ग्रंथों का आधार है। इसी नाम के आसरे ही जीव मुक्तावस्था को प्राप्त करता है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि समस्त जीव-जंतु प्रभु-नाम के ही सहारे हैं। संपूर्ण खंडों-ब्रह्मांडों को भी प्रभु-नाम का ही आधार है। स्मृति, वेद, पुरान आदि धर्म-ग्रंथ भी प्रभु-नाम के ही आसरे हैं। ज्ञान-चर्चा, ईश्वर के चरणों में एकाग्रचित्त होकर ध्यान धरना, प्रभु-महिमा सुनना आदि भी प्रभु-नाम के आसरे हैं। आकाश और पाताल को भी प्रभु-नाम का ही आधार है। सृष्टि के समस्त आकार (स्वरूप) प्रभु-नाम पर ही आश्रित हैं। सभी पुरियां, सारे लोक प्रभु-नाम के सहारे कायम हैं। प्रभु-नाम की संगत और प्रभु-नाम को श्रवण करने वाले अर्थात् संगत में रहकर प्रभु-नाम सुनने वाले अनेकों ही भवसागर से पार हो गए। जिस पर वह मालिक कृपा-दृष्टि करके अपने नाम से जोड़ता है वह चौथे पद अर्थात् तुरीयावस्था को प्राप्त करके मुक्तावस्था को प्राप्त कर लेता है।

उपरोक्त पउड़ी में वर्णित 'नाम' किसी धर्म-ग्रंथ अथवा देहधारी गुरु से लिया 'नाम' नहीं है अपितु 'नाम' से अभिप्राय स्वयं अकाल पुरख परमेश्वर से है, जो माया के प्रभाव से परे है। यह प्रभु-कृपा से ही प्राप्त होता है। इसकी प्राप्ति से प्रभु से मिलाप हो जाता है, आवागमन के बंधन कट जाते हैं। सम्पूर्ण रचना का आधार 'नाम' ही है। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने स्पष्ट किया है :

जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥ *(पन्ना ४)*

परमेश्वर के नाम से ही सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है और परमेश्वर सम्पूर्ण सृष्टि-रचना में व्याप्त है। इसी भाव के दर्शन श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में होते हैं :

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥
गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ *(पन्ना ७५३)*

वस्तुत: जब गुरु-कृपा से प्रभु-नाम की प्राप्ति होती है तभी सच्चे नाम का जाप करता हुआ जीव, उस सच्चे नाम में ही लीन होकर उसी में अभेद हो जाता है।

रूपु सति जा का सति असथानु ॥
पुरखु सति केवल परधानु ॥
करतूति सति सति जा की बाणी ॥
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

सति करमु जा की रचना सति ॥
मूलु सति सति उतपति ॥
सति करणी निरमल निरमली ॥
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥
सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने परमेश्वर के नाम, धाम, गुण सब कुछ को अटल (सदा कायम रहने वाला) बयान किया है। सदा कायम रहने वाले सुखों के सागर परमेश्वर का नाम एवं उस पर अटल विश्वास सतिगुरु की कृपा से नसीब होता है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का रूप अविनाशी है तथा स्थान भी कायम रहने वाला है। वही सबसे श्रेष्ठ है तथा स्थिर है। सबके सिर पर उसी का वृहद हाथ है, दृष्टि है। अकाल पुरख की बाणी सच्ची है और सब जीवों में वही शबद रूप में विद्यमान है। इस तरह से उसकी सृष्टि, सम्पूर्ण रचना भी सत्य है। सत्य रूप में वह जर्रे-जर्रे में व्यापक है। सर्व-व्यापकता के कारण उसका प्रत्येक कार्य भी सत्य स्वरूप है। प्रभु मूल रूप में सत्य है। उसकी रचना भी सम्पूर्ण सत्य है। जो मूल (बीज) रूप में सत्य है उसका फल रूप में फलित होना भी सत्य है। परमेश्वर की प्रत्येक करनी निर्मल है। उसका प्रत्येक कार्य पूजनीय है। उसका हुक्म अटल है। जिस पर उसकी रहमत होती है उसे उसकी रज़ा में रहना सुखदायी लगता है। परमेश्वर का सदा कायम रहने वाला नाम सुखों की खान है। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि प्रभु, उसकी सारी रचना सत्य है। उसका हुक्म अटल है। यह अटल विश्वास, श्रद्धा, समझ एवं विवेक-बुद्धि गुरु-कृपा से ही प्राप्त होती है।

उपरोक्त पउड़ी में परमेश्वर के सत्य स्वरूप की, उसकी सच्ची रचना की, उसके सच्चे नाम की, सुंदर व्याख्या गुरु पातशाह द्वारा की गई है। गुरबाणी में उस सत्य स्वरूप की विशद व्याख्या है। उस सत्य के दीदार तीसरे पातशाह की पावन बाणी में होते हैं, यथा :

वाहु वाहु साहिबु सचु है अंम्रितु जा का नाउ ॥ . . .
वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ . . .
वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥
(पन्ना ५१५)

छठी पउड़ी में सत्य स्वरूप पारब्रह्म के पावन स्वरूप के दीदार हम श्री गुरु नानक देव जी द्वारा विरचित मूल-मंत्र (बीज-मंत्र) में सहजता से कर सकते हैं। यहां विचारणीय तथ्य मनीषियों के चिंतनानुसार शबद रूप में उच्चारण अथवा मात्राओं के फेरबदल से प्राय: शबद के अर्थ-परिवर्तन हो जाते हैं तथा शबद के पढ़ने में अथवा बोलने में अथवा भावनावश इसमें परिवर्तन आ सकता है, लेकिन अंक में कोई फेरबदल नहीं हो सकता। अंक १ (एक) को हम एक ही पढ़ेंगे, बोलेंगे। इसी तरह अंक ९ (नौ) को हम नौ ही उच्चारण करेंगे और समझेंगे। इसलिए श्री गुरु नानक देव जी ने मूल-मंत्र में सबसे पहले अंक रूप में (एक) को अंकित करके, एक सच्चा एवं विलक्षण सिद्धांत सारी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करके, प्रत्येक साधारण अथवा ज्ञानी व्यक्ति को भ्रम से निकालकर केवल परिपूर्ण परमेश्वर के सत्य स्वरूप की व्याख्या की है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अर्थात् परमेश्वर एक है। उसी (एक) का नाम सत्यस्वरूप है। वही (एक) सृष्टि का सृजनहार, रचयिता है। वही (एक) सर्वव्यापी है। वही (एक) निर्भय-स्वरूप है। वही (एक) निरवैर है। वही (एक) कालातीत है। वही (एक) अजन्मा

है। वही (एक) स्वयं से प्रकाशवान् है। उसी (एक) को गुरु-कृपा से जपा जा सकता है अथवा सब में बसता हुआ समझ कर पाया जा सकता है।

सोलहवीं असटपदी की छठी पउड़ी में परमेश्वर के उक्त स्वरूप के दर्शन होते हैं। बाणी आशयानुसार यह संसार प्रभु की सच्ची रचना है। इसमें सत्य-स्वरूप प्रभु का निवास है :

--इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ . . .

--नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ (पन्ना ४६३)

--सति बचन साधू उपदेस ॥
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥
सति निरति बूझै जे कोइ ॥
नामु जपत ता की गति होइ ॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
आपे जानै अपनी मिति गति ॥
जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥
अवर न बूझि करत बीचारु ॥
करते की मिति न जानै कीआ ॥
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥

७वीं पउड़ी में भी गुरु पंचम पातशाह जी ने परमेश्वर के सत्य स्वरूप की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि बेशक वह कण-कण में व्यापक है फिर भी ससीम बुद्धि वाला जीव कभी भी असीम परमेश्वर को नहीं जान सकता। जीव उसी का अंश है और उसी की रचना होते हुए भी उसकी सीमा से अनभिज्ञ ही रहता है। हमेशा वही कुछ होता है जो उस मालिक को मंजूर होता है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि गुरु (साधु) के वचन और उपदेश सत्य होते हैं। जिनके हृदय-घर में सच्चे गुरु के उपदेश प्रवेश कर जाते हैं वे भी सत्य-स्वरूप हो जाते हैं अर्थात् जन्म-मृत्यु से रहित हो जाते हैं। जो इंसान (जीव) हरि-सिमरन की बदौलत अथवा सत्य नाम से जुड़कर ईश्वर रूपी सच्चाई तथा माया रूपी झूठ को समझ लेता है वो नाम जपते हुए मुक्तावस्था को प्राप्त कर लेता है। परमेश्वर स्वयं सत्य-स्वरूप है तथा उसकी रचना भी सच्ची है। अपनी उपमा वह आप ही जानता है अर्थात् अपनी बनाई हुई मर्यादा को वह स्वयं ही जानता है। जिसकी यह सारी रचना है वही सब कुछ करने में समर्थ है। उसे किसी दूसरे की सलाह-मशवरे की ज़रूरत नहीं पड़ती अर्थात् वह अपनी मर्ज़ी का खुद मालिक है। वह किसी और से विचार-विमर्श नहीं करता। इस सम्पूर्ण रचना के रचयिता (सृजनहार) की महिमा को उसके द्वारा निर्मित जीव नहीं बयान कर सकते। जो उस मालिक को भाता है वही होता है।

वस्तुत: सतिगुरु का उपदेश प्रभु का ज्ञान बख़्शता है। सतिगुरु के उपदेश की बदौलत ही जीव को झूठी माया के त्रिगुणी प्रभाव एवं ईश्वर के नाम-सिमरन का अंतर स्पष्ट होता है अर्थात् गुरु-उपदेश से जीव विवेकी हो जाता है। उपरोक्त पउड़ी में इस तथ्य को भी स्पष्ट किया गया है कि प्रभु अपनी मर्ज़ी का आप ही मालिक है। वह रचना करने अथवा रचना का संहार करने हेतु किसी से किसी तरह का विचार-विमर्श नहीं करता, जैसा कि जपु जी साहिब में समझाया गया है :

जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ (पन्ना ७)

गुरबाणी आशयानुसार जो कुछ भी घटित हो रहा है वह परमेश्वर की रज़ा के अनुसार ही हो रहा है।

बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥
प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥
ओइ दाते दुख काटनहार ॥
जा कै संगि तरै संसार ॥
जन का सेवकु सो वडभागी ॥

जन कै संगि एक लिव लागी ॥
गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥
गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥

सोलहवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने उस मालिक के आश्चर्यजनक कौतुकों का ज़िक्र करते हुए गुरु-उपदेश के महत्त्व पर प्रकाश डाला है कि गुरु-उपदेश के माध्यम से जीव चारों पदार्थों को सहजता से प्राप्त कर लेता है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जो जीव परमेश्वर के अजब कौतुकों को समझ गया है (कि वह किस पल, क्या से क्या हैरतअंगेज़ कारनामे करने में समर्थ है) वह उसके आश्चर्यजनक कौतुकों को देखकर आनंद से भरपूर हो जाता है अर्थात् उसका हृदय आनंद से ओत-प्रोत हो जाता है। वो जीव प्रभु-प्रियतम के रंग में रंगा जाता है वो गुरु के वचन की कमाई करता हुआ चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) सहजता से ही प्राप्त कर लेता है। ऐसे नाम में रंगा हुआ दानी पुरुष दूसरों के दुखों का निवारण करने वाला बन जाता है। ऐसे पुरुषों का अनुसरण करके अथवा संगति करके इस संसार रूपी भवसागर से पार उतारा (उद्धार) हो जाता है। ऐसे भक्त-जन का जो सेवक बनता है वह अत्यंत भाग्यशाली होता है। ऐसे भक्तों से जुड़कर और उनके निर्मल उपदेशों पर चलने से ही जीव के चित्त का जुड़ाव प्रभु-चरणों से होता है अर्थात् ऐसा सेवक एकाग्रचित्त होकर प्रभु की बंदगी करता है। परमेश्वर का सेवक सदैव प्रभु का गुणगान करता है, उसकी कीर्ति करता है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी संकेत करते हैं कि गुरुकृपा से प्रभु-प्राप्ति मुमकिन हो जाती है अर्थात् ऐसा जीव जीते-जी मुक्तावस्था प्राप्त कर लेता है।

जिस आनंद का ज़िक्र गुरबाणी में किया गया है वह पदार्थों से प्राप्त नहीं हो सकता, वह तो गुरु-कृपा से गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलकर ही संभव है। पावन बाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ *(पन्ना ९१७)*

परमेश्वर का नाम अनमोल रत्न है जो किसी मूल्य को चुकाने से प्राप्त नहीं हो सकता अपितु यह तो सच्चा गुरु स्वयं प्रदान करता है। गुरबाणी में स्पष्ट किया गया है :

हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥
मुलि न घिधा मै कू सतिगुरि दिता ॥
(पन्ना ९६४)

इस अमोलक पदार्थ की प्राप्ति से जीवन में स्थिरता नसीब हो गई है :

ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥
जनमु पदारथु नानक जिता ॥ *(पन्ना ९६४)*

वास्तव में यही है जीते-जी मुक्तावस्था, जहां जीवन में स्थिरता आ जाए, भटकना समाप्त हो जाए, गुरु-चरणों की प्रीति और एक ईश्वर पर अटूट विश्वास किसी भी परिस्थिति में डगमगाये न। इस असटपदी में अपने मन को प्रबोधित करने के लिए भी प्रेरित किया गया है कि किस प्रकार पूर्ण पुरुषों की संगत में रहकर जीवन को सफल बनाना है। पंचम पातशाह ने बाणी में अन्यत्र भी पावन उपदेश दिया है :

साधसंगि भजीऐ गोपालु ॥
गुन गावत तूटै जम जालु ॥ . . .
मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥
अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥१॥
ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥
आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥ *(पन्ना ८०७)*

वास्तव में प्रभु-प्रेम-रंग में रंगे जीव केवल अपना ही उद्धार नहीं करते अपितु उनकी संगत अनेकों को मुक्त करने में समर्थ होती है :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २१

स. बलदेव सिंह 'सिबीआ'

*-स. रूप सिंह**

शांत-सहज स्वभाव के मालिक, ईमानदार, विद्या-प्रेमी, कुछ कर गुज़रने की भावना रखने वाले, सिक्ख पार्लियामेंट शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष पद पर सुशोभित रह चुके स. बलदेव सिंह 'सिबीआ' का जन्म १ जनवरी, १९३७ ई को स. जगीर सिंह तथा माता पंजाब कौर के घर गांव नंदगढ़, तहसील व ज़िला श्री मुकतसर साहिब में हुआ। इन्होंने प्राथमिक शिक्षा गांव के स्कूल से प्राप्त कर खालसा हाई स्कूल, श्री मुकतसर साहिब से दसवीं का इम्तिहान पास किया। ग्रेजुएशन महिंदरा कॉलेज, पटियाला से उत्तीर्ण कर स. सिबीआ ने एल. एल. बी. की डिग्री प्राप्त की। इनका अनंद कारज ११ नवंबर, १९६३ ई को सरदारनी हरजीत कौर के साथ हुआ। इनके घर दो पुत्रों तथा दो पुत्रियों ने जन्म लिया, जिनको इन्होंने खूब पढ़ाया-लिखाया तथा कारोबारी बनाया। लोक-हित के लिए इन्होंने वकालत का कार्य श्री मुकतसर साहिब में आरंभ किया जो आज भी निरंतर जारी है। आजकल ये अपने परिवार समेत कोटकपुरा रोड, श्री मुकतसर साहिब में निवास कर रहे हैं।

सिक्खों की सिरमौर संस्था, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के १९७९ ई. में हुए जनरल चुनाव के समय स. बलदेव सिंह 'सिबीआ' क्षेत्र श्री मुकतसर साहिब से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य चुने गए। इनके व्यक्तिगत गुणों, विद्या-प्रेमी-स्वभाव तथा वकालत के कार्यों के अलावा इनकी सिक्खी के प्रति समर्पित भावना को जत्थेदार गुरचरन सिंह टौहड़ा की निरीक्षक आंख ने पहचान लिया और इनको १९७९ ई. में हुए वार्षिक चुनाव के दौरान शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का महासचिव होने का गौरव प्रदान किया। १९८१ ई. में आप जी शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए। १९८२ ई. में जब जत्थेदार गुरचरन सिंह टौहड़ा को जेल-यात्रा करनी पड़ी तो आप कार्यकारी अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के रूप में कार्यशील रहे। १९८२ ई. में पंजाब के हालात खुशगवार नहीं थे। एशियन खेलों के समय बहुत सारे सिक्खों पर केंद्र तथा हरियाणा सरकार ने ज्यादतियां कीं। इन्होंने भी दिल्ली में गिरफ्तारी दी। इनको कुछ समय बंदी बनाकर रखा गया और फिर रिहा होकर ये श्री अमृतसर आए। इन्होंने शस्त्र-विद्या के लिए प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब में बजट नियत किया तथा गतका-सिखलाई शुरू करवायी। इन्होंने आत्मिक शांति, शुद्धता तथा सेवा-भावना के तहत समूची कार्यकारिणी सहित रोज़ाना गुरु रामदास लंगर हाल में बर्तन साफ करने की सेवा शुरू की। काफी समय यह सेवा जारी रखी परंतु कहीं भी इस सेवा सम्बंधी ख़बर या तसवीर प्रकाशित नहीं होने दी। स. (संत) हरचंद सिंह लौंगोवाल जिस समय शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष बने तो उन्होंने इनको वर्किंग कमेटी का सदस्य बनाया। १९८९ ई. में अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा गुरुद्वारा

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

प्रबंध को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए एक विशेष अधिकारों वाली कमेटी गठित की गई, जिसके आप मुखिया थे। दो साल तक इस कमेटी ने काफी प्रशंसनीय कार्य किए।

२८ नवंबर, १९९० ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वार्षिक चुनाव के समय जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा ने स. बलदेव सिंघ 'सिबीआ' का नाम शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष रूप में पेश किया जो सर्वसम्मति से प्रवान कर लिया गया। स. बलदेव सिंघ 'सिबीआ' ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष का ओहदा बड़ी विनम्रता व अधीनगी से प्रवान करते हुए टौहड़ा साहिब तथा समूह सदस्य साहिबान का धन्यवाद किया। १ जनवरी, १९९१ को कार्यकारिणी की पहली अध्यक्षता करते समय आप जी ने जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा की सेवाओं की प्रशंसा करते हुए उनको सम्मानित करने तथा संगरूर में नया धर्म प्रचार सेंटर स्थापित करने का फैसला किया। २४ फरवरी, १९९१ ई. को सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के किए प्रचारक तैयार करने के लिए गुरु काशी गुरमति इंस्टीट्यूट, तलवंडी साबो की शुभ आरंभता अध्यक्ष साहिब द्वारा की गयी। इसी समय कालसा कॉलेज, पटियाला को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने अपने प्रबंध में लिया। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कर्मचारियों की सेवाओं में प्रशंसायोग्य सुधार किए, नये ग्रेड निश्चित किए। श्री अमृतसर में गोल्डन ऑफसेट प्रेस गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब की इमारत में लगाई गई। यह शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का पहला ऑफसेट छापाखाना था, जहां हर प्रकार का धार्मिक साहित्य छापा जाने लगा।

२७ मार्च, १९९१ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का वार्षिक बजट इजलास स. बलदेव सिंघ 'सिबीआ' की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें वार्षिक बजट पास करने के अतिरिक्त कई महत्त्वपूर्ण फैसले लिए गए। सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी का पुनर्गठन करने, श्री फतिहगढ़ साहिब में इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए विशेष फंड कायम करने, झूठे पुलिस मुकाबलों के विरुद्ध प्रस्ताव, गोइंदवाल साहिब में पेपर मिल लगाने, घी, दूध तथा सिरोपाउ की ज़रूरत को पूरा करने के लिए अपना कारखाना लगाने का फैसला लिया गया परंतु बहुत-सी योजनाये समय की गर्दिश में दफन हो गईं।

इनके अध्यक्षता कार्य-काल के समय ही केंद्र सरकार से मेडिकल तथा इंजीनियरिंग कॉलेज खोलने के लिए इज़ाजत मांगी गई। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा अपना बैंक खोलने के सम्बंध में भी गंभीर विचार-चर्चा हुई। पंजाब में विधान सभा चुनाव कराने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया। तख़्त श्री दमदमा साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार, जत्थेदार लक्खा सिंघ के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। ६ अगस्त, १९९१ ई को आप जी की अध्यक्षता में धर्म प्रचार कमेटी की हुई मीटिंग के समय स. बीरसुखपाल सिंघ, सदस्य, धर्म प्रचार कमेटी तथा स. सतनाम सिंघ जलंधर, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के पंथ-विरोधियों द्वारा किए निर्दयी कत्ल की निंदा की गयी।

१९८४ ई में घटित हुए घल्लूघारे के समय सरकार द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब की तहस-नहस कर दी गयी इमारत की कार-सेवा १९८७ ई. में घटित घटनाक्रम के कारण रुकी पड़ी थी। इसको स. बलदेव सिंघ 'सिबीआ', अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने दमदमी टकसाल द्वारा शुरू करवाया। पुलिस अत्याचार तथा सरकारी ज़ब्र का सार्थक ढंग से मुकाबला करने के लिए इन्होंने 'ज़ब्र विरोधी एक्शन

कमेटी' बनायी, जिसमें विभिन्न अकाली दलों एवं जत्थेबंदियों के प्रतिनिधि शामिल किए गए। स. सिबीआ के इस कार्य की स. बरजिंदर सिंघ 'हमदर्द', मुख्य संपादक, 'अजीत' ने 'सांझा संघर्ष' संपादकीय लेख लिखकर विशेष प्रशंसा की।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के प्रबंध वाले बहुत-से गुरुद्वारों की इमारतों का नवनिर्माण कार-सेवा वाले बाबा लोग करते हैं और अक्सर ये लोग गुरुद्वारा साहिब में अपना डेरा स्थाई रूप से स्थापित कर लेते हैं। इस मुश्किल को हल करने के लिए सिबीआ साहिब ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अपने इमारत निर्माण विभाग को चुस्त-दुरुस्त करने का प्रयत्न किया तथा एक इंजीनियरिंग विंग कायम किया ताकि हर गुरुद्वारा साहिब तथा सम्बंधित इमारतों का मास्टर प्लान तैयार करने के उपरांत ही निर्माण शुरू किया जाए। इन्होंने श्री मुकतसर साहिब में बठिंडा रोड पर अकाली मार्केट और अबोहर रोड पर माई भागो के नाम पर कालोनी बनवायी। इनके एक वर्ष के अध्यक्षता काल के समय कई नयी योजनायों की रूप-रेखा तैयार की गई जो समय की सियासत की भेंट चढ़ गयीं।

१३ नवंबर, १९९१ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का वार्षिक जनरल समागम स. तेजा सिंघ समुंदरी हॉल, श्री अमृतसर में शुरू हुआ, जिसमें अध्यक्ष तथा अन्य ओहदेदार और कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव किया गया। जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी ने अध्यक्ष पद के लिए जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा का नाम पेश किया, जिस के बाद टौहड़ा साहिब अध्यक्ष चुने गए। इस तरह इनका अध्यक्षता कार्य-काल पूर्ण हो गया।

अध्यक्ष का पद छोड़ने के उपरांत इन्होंने राजनीतिक गतिविधियों से लगभग किनारा ही कर लिया। प्रो. मनजीत सिंघ कार्यकारी जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब के प्रयत्नों का सदका १९९५ ई. में 'विश्व सिक्ख सम्मेलन' के समय 'विश्व सिक्ख कौंसिल' अस्तित्व में आई, जिसके स. बलदेव सिंघ 'सिबीआ' उप-सभापति बने। जस्टिस स. कुलदीप सिंघ द्वारा सभापति के पद से त्याग-पत्र दे देने पर आप जी 'विश्व सिक्ख कौंसिल' के सभापति बन गए, मगर अब 'विश्व सिक्ख कौंसिल' का अस्तित्व नाममात्र ही है। आजकल ये श्री मुकतसर साहिब में वकालत के कार्य में मशरूफ हैं।

कविता

भोग नहीं त्याग

छिपी हुई भोगों में हिंसा, सच गहरा, पर पक्का।
जो त्यागी है वही अहिंसक, उसका साधन सच्चा।
जो जितना संसार से लेता, उतना देना पड़ता।
लेन-देन निबटाने को ही, जन्म-मरण में फंसता।
लेन-देन के नाते सारे, लेने से तुम बचना।
देने का फल प्रभु को अर्पण, करके जग से तरना।
जग का सुख भोगोगे तो, दुख भी आगे आयेगा।
नश्वर सुख त्यागोगे तो, 'अविनाशी सुख' छायेगा।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

ख़बरनामा

कनेडियन दूतघरों में सिक्खों को कृपाण पहनकर जाने की इजाज़त देने का स्वागत

श्री अमृतसर : १६ अप्रैल : खालसा सृजना दिवस 'वैसाखी' वाले दिन कनेडियन सरकार द्वारा अपने दूतघरों में सिक्खों को कृपाण पहनकर जाने के लिए गए फैसले की जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने प्रशंसा की है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि खालसा सृजना दिवस वाले दिन कनाडा के विदेश मंत्रालय द्वारा बहु-सभ्याचार मामलों के राज्य-मंत्री मि. टिम उप्पल तथा वर्ल्ड सिक्ख संगठन के अगुओं एवं अन्य सिक्ख संस्थाओं के सांझे प्रयास से लिए गए इस फैसले से देश-विदेश में बैठे सिक्ख भाईचारे में खुशी महसूस की जा रही है। उन्होंने कहा कि कनाडा सरकार के इस फैसले से सिक्ख भाईचारे को भारी राहत मिलेगी। उन्होंने समूची विदेशी सरकारों को अपील करते हुए कहा कि कनेडियन सरकार की तरह वे भी मानवीय जीवन-मूल्यों व सिक्ख कौम की धार्मिक भावनायों को समझते हुए अपने-अपने देशों में सिक्खों को कलगीधर दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बख़्शे पांच ककारों को धारण करने की इजाज़त दें।

नवंबर २०१३ में ली गई धार्मिक परीक्षा का परिणाम घोषित

श्री अमृतसर : २२ अप्रैल : शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा पूरे भारतवर्ष में नवंबर २०१३ में ली गई धार्मिक परीक्षा का परिणाम सचिव स. सतबीर सिंघ ने घोषित किया तथा बताया कि इस परीक्षा में अव्वल आने वाले १६८८ छात्र-छात्राओं को ३० लाख के वजीफे दिए जाएंगे।

इस परीक्षा में कक्षा आठवीं से लेकर पोस्ट-ग्रेजुएशन तक नियमित विद्या प्राप्त कर रहे हज़ारों विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस परीक्षा को दर्जा प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ के अनुसार चार दर्जों में बांटा गया है। पहले दर्जे में कुल २८४४० विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया, जिनमें से गुरु नानक बाल विकास केंद्र सीनियर सेकंडरी स्कूल, जगराउं (लुधियाना) से आठवीं कक्षा की छात्रा जसकीरत कौर सुपुत्री स. मनमोहन सिंघ, रोल नं. २५०९८ ने १५६ अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। गुरु रामदास पब्लिक स्कूल, भाम, तहसील बटाला, ज़िला गुरदासपुर से महकदीप कौर सुपुत्री स. मनजीत सिंघ, कक्षा आठवीं, रोल नं. ७१५४ ने १५४ अंक तथा गुरु नानक किंडर गार्डन स्कूल, काला अफगाना, ज़िला गुरदासपुर से सुखमनप्रीत कौर सुपुत्री स. पलविंदर सिंघ, कक्षा आठवीं ने भी १५४ अंक लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बाबा गुरमुख सिंघ उत्तम सिंघ सीनियर सेकंडरी स्कूल, खडूर साहिब, ज़िला तरनतारन से रमनदीप कौर सुपुत्री स. बलराज सिंघ, कक्षा आठवीं, रोल नं. ८७९६ ने १५३ अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

द्वितीय दर्जे में कुल २८२२२ विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया, जिनमें से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब सीनियर सेकंडरी स्कूल, पट्टी से मनप्रीत कौर सुपुत्री स. अमरजीत सिंघ, कक्षा नौवीं, रोल नं. १९००५ ने १५३ अंक लेकर प्रथम स्थान; संत बाबा लाभ सिंघ खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, गुरू की बेर मत्तेवाल, तहसील बाबा बकाला से सुखप्रीत कौर सुपुत्री स. मनविंदर सिंघ, कक्षा

ग्यारहवीं, रोल नं. १४१७६ ने १५२ अंक लेकर द्वितीय स्थान तथा माता गंगा कन्या सीनियर सेकंडरी स्कूल, बाबा बकाला से रजिंदर कौर सुपुत्री स. अजैब सिंघ, कक्षा बारहवीं, रोल नं. ७५१ ने १५० अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

तृतीय दर्जे (ग्रेजुएशन) के लिए ४१९० विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इनमें से अमनदीप कौर सुपुत्री स. गुरमेल सिंघ, रोल नं. २९४८ ने १५० अंक लेकर प्रथम स्थान; शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर (गुरदासपुर) से कुलविंदर कौर सुपुत्री स. बलकार सिंघ, रोल नं. ३५७२ ने १४६ अंक लेकर द्वितीय स्थान तथा संत बाबा लाभ सिंघ बरकत गर्ल्स डिग्री कॉलेज, तहसील तपा बरनाला से परमिंदर कौर सुपुत्री स. अमरजीत सिंघ, रोल नं. २९४५ ने १४५ अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी तरह चौथे दर्जे (पोस्ट-ग्रेजुएशन) के लिए कुल ४८७ विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से आर्य कॉलेज, लुधियाना से अमरिंदर सिंघ सुपुत्र स. दलीप सिंघ, रोल नं. ४८६ ने १३१ अंक लेकर प्रथम स्थान; गुरु नानक कॉलेज, मोगा से कमलप्रीत कौर सुपुत्री स. मोहन सिंघ, रोल नं. ४५२ ने १३० अंक लेकर द्वितीय स्थान एवं पंडित मोहन लाल एस. डी. कॉलेज फॉर वुमेन, गुरदासपुर से अमनदीप कौर सुपुत्री स. सुखवंत सिंघ, रोल नं. १०७ ने १२६ अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स. सतबीर सिंघ, सचिव, धर्म प्रचार कमेटी ने बताया कि प्रत्येक दर्जे में से पहली तीन पुज़ीशनें हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः ५१००, ४१००, ३१०० रुपए विशेष इनाम के रूप में दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि १६८८ बच्चों को इस वर्ष लगभग ३० लाख रुपए के वज़ीफे दिए जाएंगे और मैरिट सूची में आने वाले विद्यार्थियों को अलग रूप से सम्मानित किया जाएगा।

अनंद मैरिज एक्ट समूचे देश में लागू हो : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ८ मई : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने कहा कि अनंद मैरिज एक्ट समूचे देश में लागू होना चाहिए। इस एक्ट के लागू होने से सिक्ख अपने विवाह को अपने धर्म के मुताबिक दर्ज करवा सकेंगे। इस एक्ट को लागू करने के बारे में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी बहुत देर से केंद्र सरकार से मांग कर रही है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इस एक्ट के लागू न होने के कारण सिक्खों को देश में ही नहीं विदेशों में भी भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि भारत में केवल हिंदू मैरिज एक्ट के अधीन ही विवाह को दर्ज किया जाता है। उन्होंने कहा कि सिक्ख भाईचारे की बड़ी देर से मांग है कि अनंद मैरिज एक्ट कानून बने तथा इस कानून के तहत ही सिक्ख अपने विवाह को दर्ज करवा सकें।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि हरियाणा सरकार ने अगर अनंद मैरिज एक्ट लागू किया है तो अच्छी बात है। उन्होंने कहा कि अनंद मैरिज एक्ट में जो कमियां रह गई हैं, सिक्ख कौम की भावनायों के अनुसार जो बातें शामिल होनी रह गई हैं, उनके प्रति सिक्ख भाईचारे से राय लेकर रिपोर्ट सरकार को भेजी जाए ताकि सम्पूर्ण रूप से पूरे देश में यह एक्ट लागू हो और सिक्ख भाई इस एक्ट के तहत ही अपने विवाह को दर्ज करवा सकें।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०६-२०१४